RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल—011/2021-23

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र

वर्ष: 49, अंक : 30-31 एक प्रति 10 : रुपये
कुल पृष्ठ : 48+4 = 52 Pages
रविवार 23-30 अक्तूबर, 2022
विक्रमी सम्वत् 2079, सृष्टि सम्वत् 1960853123
दयानन्दाब्द : 198 वार्षिक शुल्क : 100 रुपये
आजीवन शुल्क : 1000 रुपये

दूरभाष : 0181-2292926, 5062726
E-mail: apspunjab2010@gmail.com,
www.aryapratinidhisabha.org

वर्ष—49, अंक : 30-31, 23-30 अक्तूबर 2022 तदनुसार 7-14 कार्तिक, सम्वत् 2079 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

आर्य मर्यादा साप्ताहिक का ऋषि निर्वाण एवं दीपावली विशेषांक

आर्य समाज के संस्थापक

महर्षि दयानन्द सरस्वती

आर्य समाज फाजिल्का का वार्षिक उत्सव रविवार दिनांक 9 अक्तूबर 2022 को मनाया गया जिसमें आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामंत्री श्री प्रेम कुमार जी विशेष रूप से पधारे। इस अवसर पर सभा महामंत्री पूर्णाहुति में आहुतियां प्रदान करते हुए जबकि उनके साथ बैठे हैं आर्य समाज फाजिल्का के संरक्षक डा. सुशील वर्मा जी, श्रीमती नीलम आर्य एवं श्री विजय पुजारा जी।

आर्य समाज फाजिल्का के वार्षिक उत्सव पर आर्य जनता को सम्बोधित करते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामंत्री श्री प्रेम कुमार जी। जबकि अगली पंक्ति में बैठे हुये हैं श्रीमती सुदेश नागपाल संरक्षक स्त्री आर्य समाज, प्रो. सत्यदेव जी निगमालंकार, श्री किशोर पुन्छी जी, डा. आर.पी. असीजा जी।

महर्षि दयानन्द का १३९ वां निर्वाण दिवस

लेo—श्री सुदर्शन शर्मा प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

आज से 139 वर्ष पूर्व दीपावली के दिन एक ऐसे महामानव का प्रयाण इस धरती से हुआ था जिसने एक डूबते हुए समाज को तारने का कार्य किया था। वो महामानव थे युग प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती। महर्षि दयानन्द ने वेदों की मशाल जलाकर पाखण्ड और अन्धविश्वास के अन्धकार में डूबे समाज को रोशनी देकर पुन: जागृत करने का कार्य किया था। आज महर्षि दयानन्द को इस संसार से विदा हुए 139 वर्ष हो गए हैं फिर भी ऋषि का संदेश, उनकी विचारधारा और सिद्धान्त युगों-युगों तक समाज को प्रेरणा देते रहेंगे। स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाभारत काल के पश्चात पहले ऐसे ऋषि हुए जिन्होंने वेदों के सही स्वरूप को लोगों के सामने रखा और वेदों के सम्बन्ध में फैली तमाम भ्रान्तियों को दूर किया। आज अगर वेद जन साधारण के लिए उपलब्ध हैं और हम वेदों को पढ़ व देख पा रहे हैं तो इसका पूर्ण श्रेय महर्षि दयानन्द को जाता है। आज हम महर्षि दयानन्द के निर्वाण दिवस पर संकल्प लें कि ऋषि ने वेदों की जो आज से 139 वर्ष पूर्व मशाल जलाई है उस मशाल को हम कभी बुझने नहीं देंगे और निरन्तर वेदों का प्रचार-प्रसार करते रहेंगे।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का निर्वाण 30 अक्तूबर सन् 1883 को दीपावली के दिन हुआ था। स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने अजमेर में अपने प्राणों का त्याग किया था। स्वामी जी को जोधपुर में विष दिया गया था। स्वामी जी शाहपुर से चलकर जोधपुर पहुंचे थे। जब शाहपुर से जाने वाले थे तो स्वयं शाहपुराधीश नरेश श्रीचरणों में उपस्थित हुए और अभिवादन करके इस बात का संकेत किया था कि आप जोधपुर तो पधारते हैं परन्तु वहां वेश्या आदि का खण्डन न करना। इस कथन की पृष्ठभूमि यह है कि जोधपुर के महाराजा एक वेश्या के जाल में फंसे हुए थे और यह स्पष्ट ही था कि महर्षि दयानन्द उनके दुराचार के विरूद्ध खुले शब्दों में उपदेश दिए बिना नहीं रहेंगे। इसीलिए महर्षि दयानन्द के शुभचिंतक अनिष्ट की शंका करते थे। इसीलिए कुछ भक्तों ने भी भावी विपत्ति के भय से महाराज से हाथ जोड़कर प्रार्थना की थी कि वहां न जाए। स्वामी जी महाराज ने शाहपुर नरेश को उत्तर दिया था कि राजन्! मैं बड़े वृक्ष को नुहरने से नहीं काटता, उसके लिए तो बड़े शस्त्र की आवश्यकता होगी। इसी प्रकार महर्षि ने अपने भक्तों के उत्तर में कहा था, यदि लोग हमारी अंगुलियों को बत्ती बनाकर जला दें तो भी कोई चिन्ता नहीं। मैं वहां जाकर सत्योपदेश अवश्य करूंगा।

महर्षि दयानन्द ने अपने दृढ़ संकल्प से यह साबित कर दिया था कि वे कभी भी असत्य, अन्याय, अधर्म, अनाचार के साथ समझौता नहीं करेंगे। उन्होंने जोधपुर जाने से पूर्व भी अपने भक्तों को स्पष्ट संदेश दिया था कि वे जोधपुराधीश के दुराचारों का भी खुलकर विरोध करेंगे। महर्षि दयानन्द एक निर्भीक, ईश्वर के ऊपर आस्था रखने वाले आस्तिक व्यक्ति थे। उन्होंने जोधपुर जाकर वहां के नरेश को जब वेश्या के जाल में फंसे देखा तो भरी सभा में फटकार लगा दी कि राजन्! राजा सिंह के समान होता है और जगह-जगह घूमने वाली वेश्या कुतिया के सदृश। एक सिंह और कुतिया का कैसे मेल हो सकता है। महर्षि की इस फटकार का राजा के ऊपर तो असर हुआ परन्तु उस वेश्या ने इसे अपना अपमान समझा और इसका बदला लेने का प्रण कर लिया। इस षड्यन्त्र में स्वामी दयानन्द के रसोईये ने लालच में आकर उस वेश्या का साथ दिया। परिणामस्वरूप महर्षि दयानन्द का निर्वाण हुआ।

महर्षि दयानन्द को सत्य के मार्ग पर चलने की शिक्षा उनके गुरू स्वामी विरजानन्द से प्राप्त हुई थी। जिस सच्चे गुरू की खोज महर्षि दयानन्द जी को थी, वह खोज गुरू विरजानन्द की कुटिया में आकर पूरी हुई। गुरू विरजानन्द जी ने सर्वप्रथम महर्षि दयानन्द द्वारा जो अनार्ष ग्रन्थ इकट्ठे किए थे, उन्हें यमुना में प्रवाहित करने का आदेश दिया। वे महर्षि दयानन्द की गुरू के प्रति श्रद्धा देखना चाहते थे। महर्षि दयानन्द इस परीक्षा में भी सफल हुए और उन्होंने गुरू की आज्ञा का पालन करते हुए सभी अनार्ष ग्रन्थों को जल प्रवाह कर दिया। इसके बाद उन्होंने गुरू विरजानन्द के चरणों में बैठकर आर्ष ग्रन्थों को पढ़ा और सच्चा ज्ञान प्राप्त किया। सन् 1863 में जब महर्षि दयानन्द ने अपनी शिक्षा पूर्ण करके गुरू से विदा मांगी तो स्वामी विरजानन्द जी ने कहा कि देश का उपकार करो, सत्यशास्त्रों का उद्धार करो, मत-मतान्तरों की अविद्या को मिटा दो और वैदिक धर्म का प्रचार करो। गुरू ने शिष्य के कन्धों पर बहुत बड़ी जिम्मेदारी रख दी थी। गुरू को पूर्ण विश्वास था कि इस जिम्मेदारी को उठाने की उनके शिष्य दयानन्द में क्षमता और सामर्थ्य है। शिष्य ने नतमस्तक होकर गुरू की आज्ञा को स्वीकार किया।

महर्षि दयानन्द ने अपने गुरू की आज्ञा का पालन करते हुए कुछ वर्ष तपस्या में बिताए, उसके बाद उन्होंने पाखण्ड और अन्धविश्वासों का खण्डन करना शुरू कर दिया। उन्होंने हरिद्वार में कुम्भ के मेले में पाखण्ड खण्डिनी पताका फहराई और तमाम पाखण्डियों में हलचल पैदा कर दी। अपने कार्य को स्थिर रूप देने के लिए उन्होंने सन्१८७५ में आर्य समाज की स्थापना की। उन्होंने आर्य समाज को अपने उत्तराधिकारी के रूप में स्थापित किया। जिस प्रकार दूसरे मत, पन्थ और सम्प्रदाय में गुरु गद्दी होती है और वे उस पर अपने किसी शिष्य को स्थापित करते हैं उसी प्रकार महर्षि दयानन्द ने गुरुडमवाद की परम्परा को समाप्त करते हुए आर्य समाज के कन्धे पर अपना कार्यभार सौंप दिया। आज आर्य समाज महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों पर चलते हुए उनके कार्य को आगे बढ़ा रहा है। आर्य समाज का एक-एक व्यक्ति महर्षि दयानन्द का उत्तराधिकारी है और हर उस आर्य का कर्त्तव्य है कि वे महर्षि दयानन्द के संदेश, उनकी विचारधारा को जन-जन तक पहुँचाएं और ऋषि ऋण से उऋण होने का प्रयास करें। आज फिर से आर्य समाज को एकजुट होकर कार्य करने की आवश्यकता है। आज भी समाज में पाखण्ड और अन्धविश्वास बढ़ रहा है, बुराईयों और कुरीतियों ने समाज को जकड़ कर रखा है। ऐसे समय में आर्य समाज का यह दायित्व बन जाता है कि वे लोगों को इन सभी चीजों से बचाएं। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने आर्य समाज के छठे नियम में लिखा है कि संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है। इस उद्देश्य की पूर्ति होने पर ही समाज से पाखण्ड और अन्धविश्वास दूर होगा और हम समाज को एक नई दिशा दे पाएंगे।

आर्य बन्धुओं प्रतिवर्ष महर्षि दयानन्द का निर्वाण दिवस आता है। इस वर्ष भी 24 अक्तूबर 2022 सोमवार को दीपावली के पर्व पर महर्षि का निर्वाण दिवस आ रहा है। हम सभी महर्षि दयानन्द के अनुयायी इस दिन एक संकल्प लें कि हमें सच्चा आर्य बनना है, अपने परिवार को आर्य बनाना है और आर्य समाज का प्रचार-प्रसार बढ़ाकर समाज से पाखण्ड और अन्धविश्वास को दूर भगाना है।

दीपावली का पर्व और महर्षि दयानन्द का निर्वाण

ले०—श्री प्रेम कुमार महामंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

दीपावली की रात को महर्षि दयानन्द का निर्वाण हुआ था। प्रभो तेरी यही इच्छी थी, तेरी इच्छा पूर्ण हो यह कहते हुए महर्षि दयानन्द ने अपने प्राणों का त्याग किया था। इसे भारत देश का दुर्भाग्य ही कहा जाएगा कि एक ओर जहाँ दीवाली के दीपों से चहुँ ओर प्रकाश फैल रहा था, अमावस की काली रात का अंधेरा दूर करके चारों ओर प्रकाश किया जा रहा था, उसी बेला में एक ऐसा दीपक बुझ रहा था, एक ऐसे सूर्य का अस्ताचल की ओर गमन हो रहा था, जिसने अपने अलौकिक प्रकाश और आभा से पूरे संसार को प्रकाशित करने का कार्य किया था। ऐसे दीपक का असमय बुझ जाना सम्पूर्ण विश्व के लिए अपूरणीय क्षति थी। दीपावली की उस रात की घटना को आर्य जगत् के विद्वान् पं. चमूपति जी महाराज ने अपनी कविता की पंक्तियों में बद्ध किया है–

ऐ दुनिया बता, इससे बढ़कर,
फिर और हकीकत क्या होगी।
जां दे दी तलाशे हक के लिए,
फिर और इबादत क्या होगी।
यूं तो हर रात की तारिकी,
देती है पयाम उजाले का।
जिससे यह जहां पुर नूर हुआ,
उस रात की कीमत क्या होगी।

कवि के इन शब्दों से अनुमान लगाया जा सकता है कि जिस रात को महर्षि दयानन्द का निर्वाण हुआ था उसकी कीमत क्या थी। इन कविता की पंक्तियों में कवि की वेदना स्पष्ट दिखाई देती है कि महर्षि दयानन्द का इस संसार से जाना सम्पूर्ण आर्य जाति के लिए एक आघात था। महर्षि दयानन्द सम्पूर्ण मानवता के लिए एक प्रकाशपुञ्ज थे। महर्षि दयानन्द ने अपने जीवन में जिस प्रकाश को प्रसारित किया वह कोई साधारण या भौतिक प्रकाश नहीं था अपितु उस वेद विद्या का प्रकाश था जिसके अभाव में हमारा देश पथभ्रष्ट हो गया था, तमाम कुरीतियों और बुराईयों से जकड़ चुका था, अज्ञान के अन्धकार से चारों ओर अविद्या का बोलबाला था। ऐसी विपरीत परिस्थितियों में महर्षि वेद रूपी दीपक का प्रकाश लेकर आए और सारे संसार को प्रकाशित करने का कार्य किया। वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है, वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है, इसे आर्य समाज का तीसरा नियम बनाकर आर्य समाज को वेद विद्या का प्रचार करने का संदेश देकर स्वामी दयानन्द जी इस संसार से विदा हो गए। वे एक ऐसे प्रकाश को फैला कर चले गए जिसे कोई भी आँधी और तूफान नहीं बुझा सकता है। महर्षि दयानन्द का मानना था कि यदि चारों वेदों का भाष्य पूर्ण हो जाता तो जितना प्रकाश इस संसार में सूर्य का है उससे ज्यादा प्रकाश इससे हो जाता। परन्तु यह हमारा दुर्भाग्य था कि वे चारों वेदों का भाष्य पूरा नहीं कर पाए। उनके द्वारा प्रारम्भ किए गए बहुत से कार्य अधूरे रह गए, यद्यपि आर्य समाज ने उन कार्यों को पूरा करने का प्रयास किया परन्तु जितना अकेले महर्षि दयानन्द का सामर्थ्य और आत्मबल था उतना हम सभी भी मिलकर नहीं कर सके।

दीपावली का पर्व सम्पूर्ण आर्य जगत् के लिए एक प्रेरणा का पर्व है। इस दिन हमें महर्षि दयानन्द के अन्तिम समय की घटना को स्मरण करते हुए यह प्रेरणा लेनी चाहिए कि भले ही भौतिक दीपक बुझ जाए परन्तु हमारे अन्तकरण का आध्यात्मिक दीपक नहीं बुझना चाहिए। उस रात को भले ही महर्षि दयानन्द के भौतिक शरीर का अन्त हो रहा था परन्तु उनके अन्दर एक ऐसा दीपक प्रकाशित हो रहा था जिसके द्वारा उन्हें मृत्यु का भय भी भयभीत नहीं कर पा रहा था। भयानक पीड़ा और कष्ट सहते हुए भी वे मन्द-मन्द मुस्करा रहे थे, वेदमन्त्रों का पाठ कर रहे थे और ईश्वर का धन्यवाद कर रहे थे। मृत्यु को भी उन्होंने अपने सामने हाथ जोड़े खड़ा कर दिया था। उनकी आज्ञा के बिना मृत्यु भी उनके सामने आने का साहस नहीं कर पा रही थी। महर्षि दयानन्द ने अपनी इच्छा से मृत्यु का वरण किया और प्राणायाम के द्वारा लम्बी-लम्बी साँसे लेकर एक झटके में ही प्राणों को बाहर फैंक दिया। जो सच्चे मन से इस घटना पर चिन्तन करेगा वह कभी भी नास्तिक नहीं रहेगा। उसे ईश्वर की सत्ता पर पूर्ण विश्वास होगा और जिसका ईश्वर की सत्ता पर पूर्ण विश्वास है वह कभी भी बुरा कर्म नहीं करेगा। महर्षि दयानन्द के निर्वाण का दृश्य देखकर नास्तिक गुरूदत्त का हृदय परिवर्तन हुआ और वे पूर्ण रूप से आस्तिक बन गए। ऐसे निर्वाण के पद को केवल महापुरूष ही प्राप्त कर सकते हैं जिनका सम्पूर्ण जीवन लोकोपकार में बीतता है। इस दीपावली के पर्व पर हम एक ऐसा दीपक अपने अन्तःकरण में जलाएं जो कभी भी किसी भी परिस्थिति में न बुझे। दीपावली के दिन हम जो दीपक जलाते हैं उनका प्रकाश तो कुछ समय के लिए है। कुछ समय बाद वो दीपक बुझ जाते हैं और फिर अन्धकार आ जाता है। बाहर का प्रकाश क्षणिक प्रकाश है परन्तु आन्तरिक प्रकाश जीवन भर के लिए है। जिसके हृदय में एक बार ज्ञान की ज्योति प्रज्वलित हो गई उसे कभी नहीं बुझाया जा सकता। उस ज्ञान के प्रकाश से सारे अन्धकार, मिट जाते हैं, सभी बुराईयों का अन्त हो जाता है, सभी कुरीतियां समाप्त हो जाती हैं। इसलिए हमें बाहरी प्रकाश से ज्यादा अपने अन्दर के प्रकाश को महत्व देना चाहिए। दीपावली का पर्व हर वर्ष प्रेरणा देता है कि हम अपने अन्दर ज्ञान का दीपक जलाएं।

महर्षि दयानन्द के निर्वाण दिवस पर यह संकल्प लें कि हम स्वयं महर्षि दयानन्द द्वारा बताए मार्ग पर चलते हुए, अपने-अपने घरों में वेद की ज्योति को प्रकाशित करते हुए सम्पूर्ण संसार को वेद ज्ञान की ज्योति से प्रकाशित करेंगे। दीपावली के पर्व पर अन्धकार से प्रकाश की ओर जाने का संकल्प लेंगे और वेद के प्रकाश की ज्योति को घर-घर तक पहुँचाने का प्रयास करेंगे।

प्रकाश का पर्व दीपावली

ले०—श्री सुधीर शर्मा, कोषाध्यक्ष आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

दीपावली का त्यौहार हिन्दू समाज का प्रमुख त्यौहार है। यह पर्व कार्तिक वदी अमावस्या की तिथि को मनाया जाता है। हमारे शास्त्रों में पर्वों का बहुत महत्व है। पर्व हमारे जीवन में खुशियां और नई उमंग लेकर आते हैं। प्राचीन काल से दीपावली का यह पर्व मनाया जा रहा है। इस पर्व को हमारे शास्त्रों में शारदीय नवशस्येष्टि के नाम से मनाया जाता था। शारदीय नवशस्येष्टि का अर्थ है कि शरद् ऋतु में घर में आने वाली नई फसल से यज्ञ करना। किसान नई फसल को खाने से पूर्व उस अन्न से यज्ञ करते थे, नए अन्न की आहुतियां देकर पहले अग्नि देवता को चढ़ाते थे। उसके बाद अपने खाने के लिए उपयोग करते थे। इसी कारण इस पर्व का नाम शारदीय नवशस्येष्टि पड गया। आज लोग इस पर्व के प्राचीन स्वरूप को भूल गए हैं और उसके स्थान पर दीवाली शब्द प्रचलित हो गया है। इस पर्व को मनाने का ढंग भी अलग हो गया है। लोग इस पर्व पर पटाखे आदि जलाकर प्रदूषण तो करते हैं परन्तु उसके प्रतिकार के लिए यज्ञ आदि श्रेष्ठ कार्य नहीं करते। हमें अपने पर्व को सही ढंग से मनाने का प्रयास करना चाहिए जिससे हमें उस पर्व का कुछ संदेश मिल सके।

दीपावली को प्रकाश का पर्व माना जाता है। इस दिन लोग अपने-अपने सामर्थ्य के अनुसार प्रकाश फैलाने का प्रयास करते हैं। प्राचीन समय में जब हमारा देश सब प्रकार से सम्पन्न था तो उस समय लोग अपने-अपने घरों में देसी घी और सरसों के तेल से दीपक जलाकर चारों ओर प्रकाश करते थे। परन्तु आज उन दीपकों का स्थान रैडीमेड बाजार में मिलने वाली बिजली की लड़ियों ने ले लिया है। आज लाईटें लगाकर अन्धकार को दूर करने का प्रयास किया जाता है। भारत के लोग इस अन्धकार से भरी हुई अमावस्या को प्रकाश में बदलने का भरसक प्रयास करते हैं। क्योंकि प्रकाश सभी को प्रिय है और प्रकाश में ही संसार के सभी पुण्य कार्य होते हैं। अन्धकार किसी को भी प्रिय नहीं है। तमसो मा ज्योतिर्गमय प्रभु हमें अन्धकार से प्रकाश की ओर ले चलो हम यह प्रार्थना करते हैं। क्योंकि सभी प्रकार के पापाचार अन्धकार में होते हैं। इसलिए इस पर्व के पीछे यही भावना काम करती है कि हम अन्धकार को कहीं न रहने दें। न वह हमारे मनों में रहे और न हमारे जीवन में रहे, न हमारे परिवार में रहे, न हमारे घर में रहे और न हमारे देश में रहे। आज हम केवल बाहर के अन्धकार को दूर करने का प्रयास करते हैं। अपने मन के अज्ञान रूपी अन्धकार को दूर करने का प्रयास नहीं करते, अपने विचारों को शुद्ध नहीं बनाते, अपना खान-पान ठीक नहीं करते जिसके कारण हमारे अन्दर तामसिक विचारों का उदय होता है और उसके वशीभूत होकर हम कई प्रकार के अनैतिक कार्य करते हैं।

समय के साथ जिस प्रकार सभी पर्वों का सांस्कृतिक महत्व विलुप्त हुआ उसी प्रकार दीपावली का पर्व भी इससे अछूता नहीं रहा। दीपावली के पर्व में भी अनेक प्रकार की बातें जोड़ दी गई जिसके कारण इससे धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व का लोप हो गया और इस पर्व का स्थान काल्पनिक घटनाओं ने ले लिया। कई लोगों का विश्वास है कि इस दिन भगवान राम १४ वर्षों का वनवास काटकर तथा विजयदशमी के दिन रावण का वध करके उसके पश्चात दीपावली के दिन सीता व लक्ष्मण के साथ वापिस अयोध्या आये थे और उनके आने की प्रसन्नता में अयोध्या को दीपों से सजाया गया था और दीपमाला की गई थी। इसके बाद प्रतिवर्ष इस दिन यह पर्व अयोध्या में मनाया जाने लगा और इसके बाद सारे देश के लोग इसे मनाने लगे। परन्तु ऐसा ऐतिहासिक प्रमाणों से सिद्ध नहीं होता। न तो ऐसा सिद्ध होता है कि विजयदशमी के दिन रावण का वध हुआ हो और न ही यह सिद्ध होता है कि दीपावली के दिन श्रीराम अयोध्या आए हों।

आर्य समाज के लिए दीपावली के पर्व का महत्व इस बात से बढ़ जाता है कि इस दिन संसार को नई दिशा देने वाले आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का निर्वाण हुआ था। सम्पूर्ण आर्य जगत् इस पर्व को ऋषि निर्वाण दिवस के रूप में मनाता है और उनके पद्‌चिन्हों पर चलने की प्रेरणा लेता है। अपनी मृत्यु से आठ वर्ष पूर्व उन्होंने आर्य समाज की स्थापना कर दी थी और उनकी मृत्यु के समय तक अनेकों बड़े बड़े नगरों में आर्य समाजों की स्थापना हो चुकी थी। जहां महर्षि की मृत्यु हुई थी वहां पर परोपकारी सभा की स्थापना उनके काल में ही शुरू हो गई थी। महर्षि दयानन्द जी चारों वेदों का भाष्य करना चाहते थे परन्तु अपने जीवन काल में यजुर्वेद का भाष्य पूरा करके ऋग्वेद के कुछ मण्डलों का भाष्य कर पाये थे और जब उन्हें पता चला कि उन्हें जगन्नाथ के द्वारा विष दे दिया गया है तो उनके मुख से शब्द निकले थे कि जगन्नाथ तू नहीं जानता कि तूने कितना अनर्थ किया है। मेरा बहुत सा कार्य अभी अधूरा रह गया है। परन्तु फिर भी ऋषि को यह संतोष था कि जो ज्योति मैंने आर्य समाज के रूप में प्रज्वलित की है वह भारत में ही नहीं एक दिन सारे संसार में फैल जाएगी और मेरे अधूरे कार्य को आर्य समाज पूर्ण करेगा।

महर्षि दयानन्द का जीवन एक प्रकाशपुञ्ज के समान है। उनके जीवन की एक-एक किरण से संसार को रोशनी देकर प्रकाशित करने का कार्य किया है। कोई भी व्यक्ति अगर अपने मार्ग से भटक जाता है, अज्ञान रूपी अन्धकार उसे आच्छादित कर देता है तो उसे महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का जीवन चरित पढ़कर नव प्रेरणा मिल सकती है और उसके जीवन में फिर से नया उजाला हो सकता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने आर्य समाज की स्थापना करके उसी प्रकाश को स्थापित करने का कार्य किया है जो उनके जीवन में था। जिस प्रकाश से वे स्वयं प्रकाशित थे, उन्हीं चारों वेदों का प्रकाश उन्होंने आर्य समाज के माध्यम से सम्पूर्ण संसार को देने का कार्य किया जिससे वेदों के नाम पर पैदा होने वाली तमाम भ्रान्तियों का निराकरण हुआ और वेदों का शुद्ध स्वरूप लोगों के सामने आया। महर्षि दयानन्द के पुरुषार्थ के कारण आज चारों वेद भाष्य सहित आम जन साधारण को उपलब्ध हो पा रहे हैं। यद्यपि महर्षि दयानन्द स्वयं चारों वेदों का भाष्य नहीं कर पाए थे परन्तु उस परम्परा को आगे बढ़ाते हुए विद्वानों ने पुरुषार्थ किया और चारों वेदों का भाष्य किया। वेद के प्रचार प्रसार के लिए उन्होंने अपना सारा जीवन लगा दिया। उन्होंने वेद की ज्योति को सारे संसार में फैला दिया । यह प्रकाश निरन्तर बढ़ता गया इसलिए उन्होंने अपने शरीर छोड़ने का समय भी प्रकाश के पर्व को चुना। ताकि इस पर्व को मनाते हुए लोग प्रकाश के महत्व को समझें।

आओ 24 अक्तूबर को दीपावली का पर्व मनाते हुए उस प्रकाशपुञ्ज से प्रकाश लेने का प्रयास करें। इस प्रकाश पर्व को मनाते हुए हम अपने अन्दर के बुरे विचारों को इस प्रकाश की ज्योति में भस्म कर डालें। जिस महर्षि के दिव्य प्रकाश से नास्तिक गुरुदत्त आस्तिक बन गया था उसी प्रकाश की ज्योति को हृदय में धारण करते हुए हम अपने अन्दर के अन्धकार को दूर करें तभी इस दीपावली पर्व की सच्ची सार्थकता सिद्ध होगी।

महर्षि दयानन्द से पहले समाज की स्थिति

ले०—श्री अशोक परूथी रजिस्ट्रार आर्य विद्या परिषद पंजाब

महाभारत काल के बाद भारत देश कई मत-मतान्तरों में जहां एक ओर विभक्त हो गया, वहां कई कुरीतियां भी उभर आई। बौद्ध और जैन मत का प्रचार हो गया। धार्मिक कुप्रथाओं में यज्ञों में पशुबलि आदि की प्रथा चल पड़ी। सामाजिक क्षेत्र में जहां एक ओर जन्मना वर्ण व्यवस्था विशेषत: ब्राह्मण वर्चस्व वहाँ दूसरी ओर अस्पृश्यता के रोग भयावह रूप से देश में फैल गए। इनके साथ-साथ नारी के प्रति हेय और निरादर आदि पतनोन्मुख अबाध सामाजिक प्रवाह चल पड़े। सर्वाधिक दुर्दशा नारी और उसके साथ अविभाज्य गृहस्थ आश्रम दोनों की हुई। शंकराचार्य ने यद्यपि अपनी अगाध विद्या और तर्कशक्ति के प्रभाव से नास्तिकता के प्रचारक बौद्ध और जैन दोनों मतों का उन्मूलन कर दिया, विशेषत: बौद्ध मत के अनेक प्रमुख विद्वान् और अनुयायी बिना किसी प्रकार की तनिक हिंसा व बाध्यता के स्वयं भारत छोड़कर अन्य देशों में चले गए परन्तु शंकराचार्य नारी घृणा आदि दोषों से मुक्त न करा सके। मूर्तिपूजा और अवतार का शंकराचार्य ने प्रचार किया। संभवत: इस सम्बन्ध में किसी विद्वान् ने ठीक ही कहा है कि प्रत्येक सुधारक और महापुरूष जहां युगप्रवर्तक होने से नए युग का पिता होता है वहां अपने पूर्ववर्ती युग से प्रभावित हो उसका पुत्रवत् होता है। यह ऐतिहासिक तथ्य विश्व के प्रत्येक महापुरूष के जीवन और कार्यकलाप से अविभाज्य है। शंकर भी बौद्ध और जैनियों की मूर्तिपूजा और अवतारवाद से अपने को अछूता न रख सके, पर इसके साथ ही शंकर ने अपने पूर्ववर्ती सम्प्रदायों से जो दो अन्य दोष अपनाएं वे समाज के अत्यन्त विध्वंसक साबित हुए। शंकर ने ब्रह्मसूत्र वेदान्त भाष्य में लिखा कि शूद्र को वेद का अधिकार नहीं है क्योंकि स्मृति में शूद्र के वेद अध्ययन और श्रवण पर प्रतिबन्ध है। इस कारण से शूद्र के लिए ज्ञान और अनुष्ठान दोनों निषिद्ध है। यदि शूद्र कभी वेद सुन ले उसके कान में लाख व शीशा डाल देना चाहिए। शूद्र शमशान तुल्य है और उसके समीप कभी वेदपाठ नहीं करना चाहिए।

स्त्री के सम्बन्ध में वेदान्त दर्शन में शंकराचार्य लिखते हैं कि-लड़की का पाण्डित्य घर के कार्यों में ही है। वेद में उसका कोई अधिकार नहीं है। अगर कोई चाहे कि मेरी लड़की पंडिता हो तो शंकराचार्य कहते हैं कि वह घर-गृहस्थी के विषय को ही जान ले क्योंकि उसका वेद में अधिकार नहीं है। आचार्य शुक्र ने अपनी स्मृति में लिखा कि पति की मृत्यु के साथ ही नारी भी मर जाए। इसी नीति में स्त्री और पापी को गवाही देने के अयोग्य ठहराया है। आजकल जिस तुलसी रामायण का का इतना प्रचार है उसमें स्त्री और शूद्र को ताड़न के योग्य कहा है-शूद्र गंवार ढोल अरु नारी सकल ताडन के अधिकारी। शंकराचार्य ने अपनी प्रश्नोत्तरी में नारी के प्रति बड़े अपमानपूर्ण शब्द कहे हैं-

नारी नरक का द्वार, नारी प्राणियों का बन्धन, नारी विषरूपी अमृत, अविश्वास का पात्र नारी।

परन्तु शंकराचार्य और मध्य युग के नीतिकारों और उनके वचनों के एकदम विपरीत ऋषि दयानन्द नारी के विषय में सत्यार्थ प्रकाश तृतीय सम्मुलास में क्या स्त्री और शूद्र भी वेद पढ़े? इसके उत्तर में कहते हैं- सब स्त्री और पुरूष अर्थात् मनुष्य मात्र को वेद पढ़ने का अधिकार है। सब मनुष्यों के वेदादि शास्त्र पढ़ने सुनने के अधिकार का प्रमाण यजुर्वेद के 36वें अध्याय में दूसरा मन्त्र है- यथेमां वाचम् का अर्थ करते हुए ऋषि लिखते हैं कि, परमेश्वर कहता है कि जैसे मैं सब मनुष्यों के लिए इस कल्याण अर्थात् संसार और मुक्ति के सुख देनेहारी ऋग्वेदादि चारों वेदों की वाणी का उपदेश करता हूँ, वैसे तुम भी किया करो। इसी प्रकरण में महर्षि दयानन्द शूद्रों को वेदादि पढ़ने के सम्बन्ध में कहते हैं कि क्या परमेश्वर शूद्रों का भला नहीं करना चाहता, क्या ईश्वर पक्षपाती है कि वेदों के पढ़ने-सुनने का शूद्रों के लिए निषेध और द्विजों के लिए आज्ञा करे। जो परमेश्वर का अभिप्राय शूद्रादि के पढ़ाने और सुनाने का न होता तो इनके शरीर में वाक् और श्रोत्र इन्द्रिय क्यों रचता? जैसे परमात्मा ने पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, चन्द्र, सूर्य और अन्नादि पदार्थ सबके लिए बनाए हैं, वैसे ही वेद भी सबके लिए प्रकाशित किए हैं।

स्त्री को वेद तथा अन्य विद्याएं पढ़ने के अधिकारों के प्रश्न के उत्तर में ऋषि सत्यार्थप्रकाश के तृतीय सम्मुलास में श्रौत सूत्र के प्रकरण में इमं मन्त्रं पत्नी पठेत् अर्थात् स्त्री यज्ञ में इस मन्त्र को पढ़े। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी से पूर्व समाज में इस प्रकार की अनेकों कुरीतियां फैली हुई थी। सामाजिक क्षेत्र में महर्षि दयानन्द ने स्त्री जाति को शिक्षा का अधिकार दिलाया, शूद्रों की शोचनीय दशा को प्रस्तुत करते हुए उनके अधिकार दिलाने का प्रयास किया, बाल विवाह जैसी कुप्रथाओं के विरुद्ध आवाज उठाई, विधवा के पुनर्विवाह के लिए लोगों को जागरूक किया। धार्मिक क्षेत्र में फैले पाखण्डों, अन्धविश्वासों,जादू-टोने, तन्त्र-मन्त्र आदि से लोगों को मुक्त कराने का कार्य किया। सभी पाखण्डों, मूर्ति पूजा को वेद विरुद्ध बताकर उनके कुप्रभाव से बचाने का प्रयास किया। राजनैतिक क्षेत्र में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने स्वराज्य की प्राप्ति पर जोर दिया। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने सत्यार्थ प्रकाश में बुरे से बुरे स्वदेशी राज्य को भी अच्छे से अच्छे विदेशी राज्य से बढ़कर बताया है। महर्षि दयानन्द द्वारा लिखित सत्यार्थ प्रकाश पढ़कर हजारों क्रान्तिकारी पैदा हुए जिन्होंने इस देश की आजादी के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया।

महर्षि दयानन्द के आगमन से पूर्व हमारे देश में अनेक प्रकार की बुराईयां फैल चुकी थी। लोग धर्म के नाम पर मजहबों, सम्प्रदायों और मत-मतान्तरों में बंट चुके थे। जाति प्रथा अपना भंयकर रूप धारण कर चुकी थी। महर्षि दयानन्द ने सब बुराईयों की जड़ वेद विरूद्ध शिक्षा पद्धति का होना बताया। महर्षि दयानन्द जी का मानना था कि वेदों की शिक्षाओं के लोप होने के कारण भारतीय समाज अन्धकारग्रस्त हो चुका है। इसलिए महर्षि दयानन्द जी ने वेदों की ओर लौटने का सन्देश दिया। महर्षि दयानन्द जी ने बताया कि सब प्रकार की समस्याओं का समाधान वेद में दिया गया है। इसलिए महर्षि दयानन्द जी ने वेदों को सब सत्य विद्याओं की पुस्तक बताया और इसका पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब का परम धर्म बताया। अगर हम महर्षि दयानन्द के समाज व राष्ट्र के प्रति किए गए कार्यों पर चिन्तन करें तो ऐसा प्रतीत होता है कि महर्षि ने प्रत्येक क्षेत्र में जहां पर भी कोई कमी देखी उसे सुधारने का भरसक प्रयास किया। महर्षि दयानन्द अकेले ऐसे महापुरूष थे जिन्होंने हर कार्य में अपना योगदान दिया। ये सभी कार्य उनके जाने के बाद भी होते रहें इसके लिए महर्षि दयानन्द जी ने आर्य समाज की स्थापना की थी।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के निर्वाण दिवस पर हम सभी ऋषि के कार्यों पर चिन्तन करें और समाज की स्थिति का आकलन करें। महर्षि दयानन्द से प्रेरणा लेकर हम भी समाज कल्याण के कार्य करें और महर्षि द्वारा जलाई गई ज्योति को अपने पुरुषार्थ से प्रज्वलित रखें। महाजनो येन गता: स: पन्था: के अनुसार हमें अपने महापुरूषों का अनुकरण करते हुए उनके द्वारा बताए गए मार्ग पर चलना चाहिए।

महर्षि निर्वाणोत्सव

लेखक : भद्रसेन वेदवर्शनाचार्य

भारत में तथा अन्यत्र भी भारतीयजन दीपमाला से पर्याप्त दिन पूर्व ही वर्षाजन्य सीलन गन्दगी को दूर करने के लिए सफाई अभियान चलाते हैं। तब लिपे-पुते भवनों पर कार्तिक की अमावस्या वाली काली रात को दीपों की पंक्ति सजाई जाती है और तदनन्तर कुछ लक्ष्मी पूजन करते हैं। प्रायः ऐसी मान्यता है, कि स्वच्छ, प्रकाशयुक्त गृह में ही लक्ष्मी का टिकाव होता है। अतः दीपमाला पवित्रता-प्रकाश-पूजन का प्रेरक पर्व होने से प्रत्येक प्रकार की गन्दगी को दूर कर सर्वविध पवित्रता का यह पर्व जहां प्रतीक है, वहां जहां-कहीं, जैसा-कैसा, जब भी अन्धेरा हो, उसको हटाने वाले प्रकाश का भी यह पर्व परिचायक है।

सामान्य रूप से दीपावली पर सर्वत्र ऐसा ही जहां प्रचलित है, वहां विशेष-विशेष संगठनों में कुछ विशेष रूप भी इसी पर्व पर आयोजित होते हैं। क्योंकि इस दिन कुछ ऐसी घटनायें घटित हुई, कि उन्होंने इस पर्व को और भी विशेष स्मरणीय बना दिया है। जैसे कि- सामान्य जनता की यह भावना है, कि मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम इसी दिन वनवास से अयोध्या लौटे थे। तब अयोध्या वासियों ने घी के दिए जलाकर अपनी प्रसन्नता प्रकट की थी। दिए जलाने की समानता से भी यह स्मरण दीपमाला से जुड़ सकता है। योगेश्वर श्री कृष्ण ने इसी दिन नरकासुर का वध किया था। महावीर स्वामी का देहान्त भी इसी पर्व पर स्वीकार किया जाता है। गुरु हरगोविन्द राय ग्वालियर किले की कैद से छूट कर इसी दिन स्वर्ण मन्दिर आए थे। दीपमाला पर ही महर्षि दयानन्द हम से जुदा हुए थे और स्वामी राम तीर्थ का निधन दिवस भी यही ही है। अतएव उस-उस महापुरुष का स्मरण इस पर्व पर किया जाता है। तभी तो आर्य समाज इस पर्व के प्रचलित रूप के साथ ऋषिनिर्वाणोत्सव या महर्षि बलिदान दिवस भी आयोजित करता है।

इस अनोखेपन को देखकर स्वाभाविक रूप से एक प्रश्न उभरता है, कि इस अवसर पर यह भी क्यों किया जा रहा है? इसके उत्तर में जब यह सामने आता है, कि इतिहास से परिचित पाठक जानते हैं, कि दीपमाला वाले दिन ही 1883 को अजमेर में महर्षि दयानन्द ने जोधपुर में हुए षड्यन्त्र के कारण अपने प्राणों का स्वेच्छा से त्याग किया था। तो इस संक्षिप्त उत्तर से एकदम अनेक प्रश्न उभरते हैं, कि-निर्वाण और बलिदान शब्द का क्या अर्थ है? तथा महर्षि के देहान्त के लिए ये शब्द ही क्यों प्रयुक्त किए जाते हैं? संसार में हज़ारों जब मृत्यु का ग्रास बनते हैं, तब महर्षि के प्राण त्याग को षड्यन्त्र क्यों कहा जा रहा है? ऐसी कौन सी उन दिनों परिस्थितियां थीं, जिन के कारण यह मृत्यु सामान्य न होकर षड्यन्त्र सिद्ध होती है? महर्षि ने अपने जीवन में ऐसे कौन से कार्य किए, जिन के कारण उनकी मृत्यु को निर्वाण नाम दिया जा रहा है? तथा महर्षि के जीवन में उनको तिरोहित करने के लिए ऐसी कौन-कौन सी घटनायें घटीं, जिससे यह देहत्याग न होकर बलिदान हो गया?

निर्वाण-निर्वाण शब्द के कोषों में अनेक अर्थ दिए गए हैं, जिन में से मृत्यु और मुक्ति-परम आनन्द विशेष हैं। यह शब्द महापुरुषों के देहान्त के लिए विशेषरूप से प्रयुक्त किया जाता है, क्योंकि साधारण जन संसार में सामान्य रूप से जीवन बिता कर चले जाते हैं, पर महापुरुष कुछ विशेष कार्य कर जाते हैं। अतः उनके निधन के लिए सत्कारार्थ निर्वाण शब्द का प्रयोग किया जाता है। क्योंकि-

कोई हंस के जिया, कोई रो के जिया।
मगर ज़िन्दगी पाई उसने जो कुछ हो के जिया।।
अपने लिए जिए-तो क्या जिए।
जीना है उसी का जो औरों के लिए जिए।।

भारतीय परम्परा में मानव जीवन के चार उद्देश्य माने गए हैं। वे हैं-धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष, इन को अतएव पुरुषार्थ चतुष्टय भी कहा जाता है। इन चारों में से मुक्ति, मोक्ष सर्वोत्कृष्ट है। अतः जिस मानव ने मोक्ष सिद्ध कर लिया, वस्तुतः उसी का जीवन पूर्व, सफल है। कवि कालिदास ने अभिज्ञान शाकुन्तल [3] और मालविकाग्निमित्र [3,1] में-'अये! लब्धं नेत्रनिर्वाणम्' शब्दों का प्रयोग किया है, जिस से प्रसंगानुरूप निर्वाण शब्द का अर्थ साफ झलकता है। अतः निर्वाण शब्द के प्रयोग का भाव है, कि अमुक महापुरुष ने अपनी साधना से अपने जीवन के लक्ष्य मोक्ष को प्राप्त कर अपने आप को सफल बना लिया है।

बलिदान-जो महापुरुष सत्य पर, देश पर, धर्म पर तथा अपनी सत्यनिष्ठा पर अपने प्राण न्यौछावर कर देते हैं तथा अपना सर्वस्व समर्पण कर देते हैं। उनका ऐसा निधन बलिदान कहलाता है। अतः जिन महापुरुषों का निधन सामान्य ढंग से न होकर विशेष लक्ष्य को साधते हुए असाधारण घटना के कारण या किसी षड्यन्त्र से होता है, उसके लिए बलिदान शब्द का प्रयोग किया जाता है। बलि का देना बलिदान का प्राथमिक अर्थ है, इसका भाव है-भेंट चढ़ाना, समर्पित करना। बलि शब्द अपने इष्टदेव के लिए भेंट चढ़ाये जाने वाले किसी पशु, पक्षी, प्राणी, अन्य वस्तु के लिए जहां प्रयुक्त होता है, जैसे कि बलि का बकरा, वहां विशेष या सामान्य के लिए आहुतिरूप में दिए जाने वाले अन्न के लिए भी प्रचलित है, जैसे कि बलि वैश्वदेवयज्ञ में। हां, राजा को दिए जाने वाले कर के लिए भी बलि शब्द साहित्य में

प्रयुक्त हुआ है [जैसे कि प्रजानामेव भूत्यर्थं, स ताभ्यो बलिमग्रहीत्- रघुवंश-1, 181]।

बलिदान शब्द का एक और तात्पर्य भी है, कि किसी विशेष उच्च लक्ष्य के लिए, दूसरों की भलाई के लिए शारीरिक, मानसिक आदि कष्ट को सहन करना और जीवन तक का दान कर देना, या लगाना। अत: अपनी भूख-प्यास, सर्दी-गर्मी, कीर्ति-अपकीर्ति की चिन्ता न करते हुए हर स्थिति में अपने उद्देश्य की सिद्धि में जुटे रहना भी बलिदान है। [तुलनीय-तुभ्यं बलिहृत: स्याम अथर्ववेद 12, 1, 62]। इसके लिए सबसे पहले यह आवश्यक हो जाता है, कि इस पथ का पथिक अपनी सुख-सुविधाओं का विचार न करते हुए अपने लक्ष्य पर चलता चले। तब धूम्रपान, मद्य, मांस, जुआ, व्यभिचार आदि व्यसनों में पड़ा हुआ अपने उद्देश्य को भूल जाता है। अत: बलि शब्द भेंट की वस्तु, कष्ट सहन का जहां वाचक है, वहां अपने आप को, जीवन उच्च लक्ष्य के साधने में लगा देना भी बलिदान ही है।

निर्वाण शब्द के अर्थ मोक्ष के अनुसार तथा उसकी प्राप्ति के साधन के रूप में शम, दम आदि षटक सम्पत्ति का शास्त्रों में निर्देश प्राप्त होता है तभी तो महर्षि ने लिखा है-"परमेश्वर की आज्ञा पालने, अधर्म, अविद्या, कुसङ्ग, कुसंस्कार, बुरे व्यसनों से अलग रहने और सत्याभाषण परोपकार, विद्या, पक्षपात रहित न्याय, धर्म की वृद्धि करने... परमेश्वर की स्तुति, प्रार्थना, उपासना अर्थात् योगाभ्यास करने, विद्या पढ़ने-पढ़ाने और धर्म से पुरुषार्थ कर ज्ञान की उन्नति करने- इत्यादि साधनों से मुक्ति होती है।" सत्यार्थप्रकाश समु. 9, महर्षि दयानन्द का जीवन इसका साक्षी है, कि ये गुण उन के जीवन में समाए हुए थे तथा उनका योग-समाधि पर विशेष अधिकार था। वेद प्रचार आदि अन्य कार्यों के साथ अन्त समय तक वे समाधि=साधना में निरत रहे। उन्होंने आजीवन कठोर ब्रह्मचर्य व्रत का पालन किया। किसी प्रकार की व्यक्तिगत वंशवृद्धि, शिष्य परम्परा, मठ स्थापना से महर्षि सर्वदा सर्वथा नि:संग रहे। ऐसे निष्काम सेवी, ज्ञानप्रसारक समाधिसाधक की मुक्ति में कैसे शक किया जा सकता है?

निर्वाण शब्द के सफलता अर्थ के अनुसार वेदप्रचारक, ईश्वरवाद के पोषक, समाज सुधारक के रूप में महर्षि की सफलता सर्वथा स्पष्ट है, क्योंकि महर्षि दयानन्द ने जिस समय कार्यक्षेत्र में पदार्पण किया। उस समय सामान्य जनता की तो बात ही क्या? विशेष विद्वान भी वेद के परिचय से दूर थे। काशी शास्त्रार्थ इसका स्पष्ट प्रमाण है। यह महर्षि के प्रभाव का ही परिणाम है, कि आज खुले आम वेदमन्त्रों का पाठ होता है और अध्ययन-अध्यापन में सब के लिए वेद द्वार खुला है।

महर्षि दयानन्द का जिस परिवार में जन्म हुआ, वह सामवेदीय औदीच्य ब्राह्मण परिवार था। भारतीय साहित्य के अनुसार वेदों का अध्ययन-अध्यापन ब्राह्मण का मुख्य धर्म है। शिवभक्त पिता ने अपने पुत्र को बाल्यावस्था में यजुर्वेद का कुछ भाग कण्ठस्थ कराया था।

महर्षि ने अपनी साधना की सिद्धि के लिए जो अध्ययन किया, उस में वेद भी पढ़े थे। ब्रह्मर्षि गुरु विरजानन्द दण्डी ने विदा की वेला में महर्षि के जीवन का कांटा बदल कर उनको आर्षज्ञान की ज्योति जगमगाने का कार्य सौंपा। इस कार्य को करते हुए महर्षि अपने चिन्तन-मनन के परिणामस्वरूप इस परिणाम पर पहुँचे, कि वेद जहां भारतीयों के साहित्य, धर्म के मूलस्रोत हैं, वहां यह सर्वसम्मत सिद्धान्त है, कि संसार के पुस्तकालय की वेद प्राचीनतम कृति हैं। इसके साथ वेद पूर्णत: ईश्वरीयज्ञान, नित्य और सब सत्य विद्याओं की पुस्तक हैं। वेद के प्रति श्रद्धाभरे जो उद्‌गार महर्षि ने प्रकट किए हैं, वे देखते ही बनते हैं। हां, महर्षि की यह दृढ़ धारणा है, कि एक अध्यात्मपथ के पथिक को, सत्य-विद्याओं के जिज्ञासु के लिए, सुखाभिलाषी और धर्मपथ के पथिक को सर्वात्मना वेदज्ञान को अपनाना चाहिए।

यह सब महर्षि ने केवल परिवार की परम्परा, ब्राह्मणवर्ण की कर्त्तव्यता तथा भारतीयता की भावना से अभिभूत होकर के नहीं स्वीकारा। अपितु वेदों को जांचने-परखने के पश्चात् अंगीकार किया। तभी तो यह गाया गया-

वेदों का डंका आलम में,
बजवा दिया ऋषि दयानन्द ने।
वेद के भेद नहीं खुलते

नि:सन्देह आज भी एक ईश्वर के स्थान पर अनेक देवी-देवताओं, अवतारों, गुरुओं की पूजा-अर्चना चल रही है। उन सब के अपने-अपने भव्य से भव्य धर्मस्थल बने हुए हैं और बनते जा रहे हैं, पर इसके साथ ही साथ एकेश्वरवाद की सुस्पष्ट चर्चा, संगति की ओर सब का ध्यान आकर्षित हो गया है। महर्षि के प्रचार के समय तो हज़ारों ने मूर्ति पूजा से मुंह मोड़ लिया था। ऐसे ही महिला शिक्षा का अब बिना विरोध के प्रचलन आए दिन बढ़ रहा है और युवा अवस्था में विवाह की ओर समाज अग्रसर है। अब कोई विदेश यात्रा का विरोध और हौवा खड़ा नहीं करता। पहले की तरह जात-पात का अब विचार तथा व्यवहार नहीं होता और न ही घृणायुक्त छुआ-छूत का भूत किसी पर पहले की तरह सवार होता है। महर्षि के समय ये भावनायें बहुत अधिक हावी थीं।

इस प्रकार के सुधारों की सफलता का श्रेय बहुत कुछ महर्षि दयानन्द को जाता है, क्योंकि उन्होंने अपनी पूरी शक्ति के साथ अपने समय इस ओर सब का ध्यान आकर्षित किया। तभी तो भारत के प्रथम राष्ट्रपति डा. राजेन्द्र प्रसाद जी ने महर्षि को अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हुए कहा था-"स्वामी दयानन्द की सब से बड़ी विशेषता उनकी दूरदर्शिता थी, यह देखकर आश्चर्य होता है, कि विदेशी शासन के विरोध में सक्रिय संघर्ष के समय जिन बातों पर महात्मा गान्धी ने बल दिया और उन्हें रचनात्मक कार्य की संज्ञा दी। प्राय: वे सभी काम स्वामी दयानन्द के कार्यक्रम में 50 वर्ष पूर्व शामिल थे।

देशभर के लिए एक सामान्य भाषा की आवश्यकता स्वामी दयानन्द ने महसूस की और हिन्दी को ही राष्ट्रभाषा अथवा आर्यभाषा होने के योग्य माना है।

इसके अतिरिक्त अछूतोद्धार, स्त्री शिक्षा, हाथ के बने कपड़े

अथवा स्वदेशी का प्रयोग इत्यादि बातों पर उन्होंने काफी बल दिया और वे स्वयं भी जीवनभर इन बातों पर पूरा अमल करते थे।

उनकी कृतियों और उपदेशों से यह बात स्पष्ट हो जाती है, कि विचारों से वे राष्ट्रवादी थे और विदेशी शासन के स्थान पर स्वराज्य अथवा भारतीयों के ही राज्य का स्वप्न देखते थे।

समाज सेवा के क्षेत्र में स्वामी दयानन्द और आर्य समाज ने जो कार्य किया, उसके महत्त्व से इन्कार नहीं किया जा सकता। उस कार्य के लिए और देश को जो लाभ हुआ, इसके लिए हम स्वामी दयानन्द के ऋणी हैं।''

यह सब महात्मा गान्धी जी ने स्वयं भी स्वीकार किया है और कहा है-''मुझ (गान्धी) से पहले भारत में आकर स्वामी दयानन्द स्वदेशी आन्दोलन, अछूतोद्धार, समाज-सुधार आदि क्षेत्रों में मैदान साफ न कर देते, तो मुझे इतनी शीघ्रता से सफलता मिलना कठिन था।''

बलिदान शब्द के एक अर्थ किसी उच्च लक्ष्य के लिए जी जान से जुटना की दृष्टि से जब हम विचार करते हैं, तो महर्षि के जीवन चरित को पढ़ने से स्पष्ट होता है, कि जनता को छल, धोखे, बहकावे, भुलावे से बचाने के लिए महर्षि दयानन्द ने वेद आदि शास्त्रों के आधार पर जहां धर्म का सही रूप समझाया, वहां धोखे, पाखण्ड का पर्दाफाश किया और सच्चाई बताई। इससे जिन लोगों ने इन धन्धों को अपनी कमाई बना रखा था, वे अपने स्वार्थ के द्वार बन्द होते देखकर विरोध करने लगे और महर्षि को नास्तिक बता कर धर्मभीरू जनता को महर्षि से दूर रहने का सन्देश देने लगे।

तब महर्षि को अपमानित करने का कौन सा ढंग नहीं बरता गया। गाली देना, पत्थर बरसाना, आक्रमण करना, पान आदि द्वारा विष देकर न जाने कितनी बार मारने का यत्न किया गया। और अन्त में महर्षि की मृत्यु भी एक षड्यन्त्र से हुई, क्योंकि 29 सितम्बर से 31 अक्तूबर 1883 तक महर्षि की जो शारीरिक स्थिति रही, उससे भी स्पष्ट हो जाता है, कि यह सब एक षड्यन्त्र का ही परिणाम था। जैसे कि 29 सितम्बर को सोने से पहले दूध पीने के कुछ समय पश्चात् ही महर्षि के पेट में असाह्य दर्द आरम्भ हुआ, उल्टी तथा दस्त लग गए और ये कई दिन तक लगातार चले। दवा देने पर यह सब घटा नहीं, अपितु बढ़ा ही, ऐसी स्थिति के लिए ही, तो यह उक्ति चलती है-'ज्यों-ज्यों दवा की-मर्ज बढ़ता गया'। महर्षि के सारे शरीर पर फफोले निकल आए। यह सारी शारीरिक स्थिति किसी विशेष प्रकार के विष के प्रभाव को ही प्रमाणित करती है। अत: यह सब एक योजनाबद्ध रूप से षड्यन्त्र किया गया।

महर्षि के मृत्युकाल का यह घटनाचक्र अपने आप में एक अनूठा प्रसंग है, क्योंकि उसको देखने वाले साधारण जन ही नहीं, अपितु बड़े-बड़े डाक्टर भी दंग थे। इतना अधिक शारीरिक कष्ट, रोग की इतनी गम्भीर स्थिति होने पर भी महर्षि ने बड़ी शान्ति और धैर्य के साथ इस को सहा तथा सहर्ष स्वयं मरण को स्वीकार किया। जिस को देखकर मनीषी गुरुदत्त एम. ए. नास्तिक से आस्तिक बन कर महर्षि के लक्ष्य को पूर्ण करने में अनवरत तत्पर हो गया।

महर्षि की हत्या का षड्यन्त्र दोनों ओर से किया गया। एक तो रूढ़िवादियों की ओर से हुआ, क्योंकि महर्षि द्वारा उभारे गए जनजागरण से इन की कमाई को ठेस पहुँची। अत: अपने स्वार्थ, लोभ के कारण इन रूढ़िवादियों ने महर्षि का अनेक प्रकार से विरोध किया। अत: केवल गालियां ही नहीं दी गई, अपितु सभाओं में महर्षि पर पत्थर बरसाए, कई बार आक्रमण किए और पान, मिठाई आदि द्वारा विष भी दिया गया।

इस से भी अधिक गहरा षड्यन्त्र विदेशी सरकार की ओर से किया गया, क्योंकि महर्षि ने जिस प्रकार से अपने अतीत के गौरव से जहां भारतीय जनता में आत्म विश्वास उभारा, वहां एकेश्वरवाद, वेदप्रचार, महिला शिक्षा प्रसार तथा जात-पात की भावना और छूआ-छूत के घृणायुक्त व्यवहार का निवारण आदि द्वारा जन जागरण तथा संगठन किया। इससे देश को स्वाधीन कराने की हल-चल शुरु हो गई। तभी तो क्रान्तिकारियों और सत्याग्रहियों में अधिक संख्या आर्यसमाज से प्रेरितों की थी। उन दिनों के सत्ताधीशों के लिए चिन्ता की बात यह हुई, कि महर्षि ने रियासतों के राजाओं को सदाचारी बनाने और संगठित करने का प्रयास प्रारम्भ कर रखा था। जुलाई 82 से महर्षि की अन्तिम स्थिति तक का समय उदयपुर, जोधपुर आदि रियासतों में ही व्यतीत हुआ। वहां महर्षि ने कई-कई मास रह कर उन-उन राजाओं को नियमितरूप से जहां पढ़ाया, वहाँ उनको सदाचारी, संयमी जीवन जीने की विशेष प्रेरणा दी थी। हां, इससे पूर्व भी उन्होंने दो बार (78 और 81 में) राजस्थान की अनेक रियासतों में अपनी प्रचार यात्रा की थी। दिल्ली दरबार (77) के समय भी महर्षि ने रियासतों के राजाओं से मिलकर विचार-विमर्श किया था।

क्योंकि स्वाधीनता के सम्बन्ध में महर्षि की यह दृढ़ धारणा थी- ''कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशी राज्य होता हैं वह सर्वोपरि उत्तम होता है। अथवा मतमतान्तर के आग्रह रहित, अपने और पराये का पक्षपात शून्य प्रजा पर पिता माता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं है। समुल्लास-8, पृष्ठ-195 (यह स्वा० वेदानन्द तीर्थ सम्पादित स्थूलाक्षर की पृष्ठ संख्या है।)

महर्षि ने पराधीनता के कारणों और परिणाम का निर्देश करते हुए लिखा है-''अब अभाग्योदय से और आर्यों के आलस्य, प्रमाद, परस्पर के विरोध से अन्य देशों के राज्य करने की कथा ही क्या कहना किन्तु निर्भय राज्य इस समय नहीं है। जो कुछ भी है सो भी विदेशियों के पदक्रान्त हो रहा है। कुछ थोड़े राजा स्वतन्त्र हैं। दुर्दिन जब आता है, तब देशवासियों को अनेक प्रकार से दु:ख भोगना पड़ता है।'' 8, 195

सत्यार्थप्रकाश के इन दोनों उद्धरणों से स्पष्ट होता है, कि महर्षि के हृदय में भारत की स्वाधीनता के लिए कितनी तीव्र भावना थी। भारत की स्वाधीनता को महर्षि सभी आशाओं, समृद्धियों का आधार मानते थे। अत: एतदर्थ भारतीयों को तैयार करने का महर्षि ने हर सम्भव प्रयास किया। इसके लिए अतीत के गौरव के आधार पर जहां

भारतीयों में आत्म-विश्वास उभारा, वहां भारतीयों को संगठित करने का यथाशक्ति प्रयास किया।

संगठन के लिए जो-जो सहायक बातें हैं, उनकी ओर जहां सबका ध्यान आकर्षित किया। जैसे कि-"चारों वर्णों में परस्पर प्रीति, उपकार, सज्जनता, सुख, दुःख, हानि, लाभ में एकमत्य रहकर राज्य और प्रजा की उन्नति में तन, मन, धन का व्यय करते रहना।" 4,100 वहां संगठन को फूट में बदलने वाली जो भी कोई बात जहां भी दिखाई दी, उसकी तीखी आलोचना की और उसको शीघ्र से शीघ्र छोड़ने पर बल दिया। इसीलिए जात-पात के आधार पर होने वाले ईर्ष्या-घृणायुक्त भेदभाव, छुआ-छूत और विदेशगमन के कारण होने वाले जाति बहिष्कार की ओर सबका ध्यान आकर्षित किया, क्योंकि ये सारी बातें उन दिनों आपस की फूट का कारण बनी हुई थीं। तभी तो महर्षि ने लिखा है-"(पूर्वपक्ष) आर्यवर्त्त देशवासियों का आर्यावर्त्त देश से भिन्न-भिन्न देशों में जाने से आचार नष्ट हो जाता है वा नहीं (उत्तरपक्ष) यह बात मिथ्या है, क्योंकि जो बाहर भीतर की पवित्रता करनी, सत्यभाषणादि आचरण करना है वह जहां कहीं करेगा आचार और धर्मभ्रष्ट कभी न होगा, और जो आर्यावर्त्त में रहकर भी दुष्टाचार करेगा वही अधर्म और आचारभ्रष्ट कहावेगा।' 10,225

"और जो आजकल छूतछात और धर्मनष्ट होने की शंका है वह केवल मूर्खों के बहकाने और अज्ञान बढ़ने से है। जो मनुष्य देश देशान्तर और द्वीप द्वीपान्तर में जाने आने में शंका नहीं करते वे देश देशान्तर के अनेकविध मनुष्यों के समागम, रीति-भान्ति देखने, अपना राज्य और व्यवहार बढ़ाने से निर्भय शूरवीर होने लगते और अच्छे व्यवहार का ग्रहण कर बुरी बातों को छोड़ने में तत्पर हो के बड़े ऐश्वर्य को प्राप्त होते हैं।" 10,226

"देश-देशान्तर और द्वीप-द्वीपान्तर जाने में कुछ भी दोष नहीं लग सकता।" 10,227

"आपस में आर्यों का एक भोजन होने में कोई दोष नहीं दीखता। जब तक एक मत, एक हानि-लाभ, एक सुख-दुःख परस्पर न मानें तब तक उन्नति होना बहुत कठिन है। परन्तु केवल खाना पीना ही एक होने से सुधार नहीं हो सकता। किन्तु जब तक बुरी बातें नहीं छोड़ते और अच्छी बातें नहीं करते तब तक बढ़ती के बदले हानि होती है।" 10,228

महर्षि दयानन्द की दृष्टि से जात-पात, छुआ-छूत, विदेशगमन पर होने वाले बहिष्कार आदि के कारण भारतीयों में फूट बढ़ी है और इसी फूट के कारण ही भारत की हर प्रकार से अवनति हुई है। भारतीयों की फूट के प्रति बड़े दुःखी हृदय से महर्षि लिखते हैं- "विदेशियों के आर्यावर्त्त में राज्य होने के कारण आपस की फूट, मतभेद, ब्रह्मचर्य का सेवन न करना, विद्या न पढ़ना पढ़ाना वा बाल्यवस्था में अस्वयंवर विवाह, विषयासक्ति, मिथ्याभाषण आदि कुलक्षण, वेदविद्या का अप्रचार आदि कुकर्म है। जब आपस में भाई भाई लड़ते हैं तभी तीसरा विदेशी आकर पंच बन बैठता है। क्या तुम लोग महाभारत की बातें जो पांच सहस्र वर्ष के पहले हुई थीं उनको भी भूल गए? देखो महाभारत युद्ध में सब लोग लड़ाई में सवारियों पर खाते पीते थे। आपस की फूट से कौरव पाण्डव और यादवों का सत्यानाश हो गया सो हो गया, परन्तु अब तक भी वही रोग पीछे लगा है। न जाने यह भयङ्कर राक्षस कभी छूटेगा व आर्यों को सब सुखों से छुड़ा कर दुःख सागर में डुबा मारेगा? उसी दुष्ट दुर्योधन गोत्रहत्यारे, स्वदेशविनाशक, नीच के दुष्टमार्ग में आर्य लोग अब तक भी चलकर दुःख बढ़ा रहे हैं। परमेश्वर कृपा करे यह राजरोग हम आर्यों में से नष्ट हो जाए।" पृ० 10,228-9

इन उद्धरणों का एक-एक शब्द इसका साक्षी है, कि महर्षि दयानन्द भारत की तत्कालिक स्थिति से बहुत अधिक खिन्न थे और वे जन-जन के विचारों आचारों को सही रूप देकर सुन्दर, सुखद रूप, सुधार सामने लाना चाहते थे। महर्षि के विचारों, कार्य-कलापों को पूरी तरह से समझने के लिए महर्षि के जीवन पर एक दृष्टिपात कर लेना अपेक्षित हो जाता है।

ऋषि दयानन्द के जीवन से परिचित पाठक अच्छी प्रकार से जानते हैं कि 1824 में मूलशंकर का जन्म हुआ। 1838 की शिवरात्रि पर उन्होंने सच्चे शिव के दर्शन का संकल्प लिया, फिर बहन और चाचा की मृत्यु पर वैराग्य होने से मृत्यु विजय की भावना उभरी। इन दोनों साधनाओं की सिद्धि कराने वाले गुरु की खोज में पहले शुद्ध चैतन्य ब्रह्मचारी बने और फिर दयानन्द संन्यासी। एतदर्थ लगातार 14 वर्ष जंगलों, पहाड़ों, मैदानों में घूमते रहे और जहां भी किसी विद्वान् तथा योगी का पता चला, वहीं उसके चरणों में पहुंचे। जिसने जो शास्त्र पढ़ाया सो पढ़ा और जिसने जैसा योग सिखाया सो सीखा। अन्त में 1860 से 1863 के मध्य ब्रह्मर्षि गुरु विरजानन्द जी दण्डी से अष्टाध्यायी तथा महाभाष्य का विशेष अध्ययन किया।

एक दिन गुरुचरणों में पहुंचे और जीवनलक्ष्य की ओर बढ़ने के लिए विदा मांगी, पर ब्रह्मर्षि गुरु ने स्वामी दयानन्द जी के जीवन का कांटा ही बदल दिया। बिना ननुनच के गुरु जी की आज्ञा को शिरोधार्य कर स्वामी दयानन्द जी आर्षज्ञान की ज्योति लेकर भारत के अनेक नगरों में गए। लम्बे समय तक आप ने भारतीय जनता को परखने, गहरे स्वाध्याय के पश्चात् आर्षज्ञान की ज्योति को सदा प्रज्वलित रखने की दृष्टि से 1875 में बम्बई (मुम्बई) में आर्य समाज की स्थापना की। 1883 तक एक व्यवस्थित विचारधारा और वेदप्रचार का योजनाबद्ध कार्य किया और वेदभाष्य, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, सत्यार्थप्रकाश, संस्कारविधि आदि बड़े-छोटे बीस के लगभग ग्रन्थों की भी रचना की।

भारत के विविध प्रान्तों के सैंकड़ों नगरों में एक-एक, दो-दो बार गए। बड़े-बड़े नगरों में लगातार दो-तीन मास तक रहे। प्रायः सर्वत्र यही दिनचर्या होती थी, कि प्रातः उठकर योगाभ्यास, प्रातः भ्रमण, व्यायाम आदि दैनिक कृत्यों से निवृत्त होकर नियमित रूप से ग्रन्थ रचना, वेदभाष्य का कार्य जहां होता था, वहां अपने समीप आने

वालों से वार्तालाप-शंकासमाधान और भाषण का कार्य। जैसे कि पूना में लगातार 14+2 = 16 भाषण हुए, जोकि पूना प्रवचन या उपदेशमंजरी के नाम से प्राप्त हैं।

गुरु कुटीर मथुरा से विदा लेने के पश्चात् स्वामी दयानन्द आगरा में लगभग दो वर्ष रहे। हां, यहां रहते हुए शास्त्रों का जहां विशेष स्वाध्याय किया, वहां कथा, प्रवचन का कार्यक्रम भी चला। इस मध्य कई बार गुरुचरणों में पहुंच कर शंका समाधान भी किया। आगरा के साथ धौलपुर, ग्वालियर, पुष्कर मेला, अजमेर, कृष्णगढ़, जयपुर में प्रचार कर पुनः आगरा लौटे। यहां से मथुरा आकर गुरु जी से भेंट की, मथुरा के पश्चात् मेरठ कुछ समय लगाकर 1867 के कुम्भ मेले पर हरिद्वार में पाखण्ड खण्डनी पताका स्थापित कर कई मास प्रचार किया। मेले के अन्तर कुछ समय मौन धारण कर गंगा के किनारे विचरण किया। फिर गंगा के किनारे के अनूप शहर, कर्णवास, फर्रुखाबाद, सारदौल, अम्बागढ़, कासगंज, शाहजहांपुर, कानपुर, मिर्जापुर, प्रयाग आदि उत्तरप्रदेश के विविध नगरों में प्रचार यात्रा करते हुए बनारस पधारे। 1869 में बनारस का प्रसिद्ध काशी शास्त्रार्थ हुआ। इसके पश्चात प्रयाग (2) के कुम्भ मेले पर आसन जमाया, वहां से मिर्जापुर (2) होकर पुनः काशी (2) आए। तदनन्तर कासगंज (2) छलेसर, सोरों, फर्रुखाबाद (2) कर्णवास (2) और वहां से पुनः फर्रुखाबाद (3) आदि उत्तरप्रदेश के नगरों में प्रचार यात्रा चलाते रहे। 1872 में बिहार प्रान्त के पटना, मुंगेर, भागलपुर आदि में कुछ समय प्रचार कर 1872 के दिसम्बर मास में कलकत्ता पधारे। यहां कई मास प्रचार कार्य किया और ब्राह्मसमाज और प्रार्थना समाज के अनेक नेताओं से सम्पर्क हुआ। कलकत्ता में ही केशवचन्द्र सेन की प्रेरणा पर जहां भाषण का माध्यम संस्कृत भाषा के स्थान पर हिन्दी भाषा को बनाया, वहां नागरिक सभाओं में पूर्ण वस्त्र धारण किए।

कलकत्ता महानगर की प्रचार यात्रा सम्पन्न करके ऋषि दयानन्द यहां से हुगली गए और वहां से फिर बिहार के भागलपुर (2), पटना (2), छपरा होते हुए उत्तरप्रदेश के मिर्जापुर (3), प्रयाग (3), फर्रुखाबाद (4), हाथरस, वृन्दावन, मथुरा, काशी (3), मिर्जापुर (4), प्रयाग (5) जैसे नगरों में प्रचार कार्य किया। 1874 के अक्तूबर में महर्षि बम्बई पधारे। यहां कई मास प्रचार योजना चली तथा अप्रैल 1875 में यहीं आर्य समाज की स्थापना की। पहले आर्यसमाज के 28 नियम बनाये, जिनमें उपनियम भी सम्मिलित थे। सामयिक प्रचलित दस नियम 1877 में लाहौर के आर्यसमाज की स्थापना पर प्रकाश में आए। तब से प्रचलित दस नियम ही मान्य हैं।

1875 के मध्य से 77 के प्रारम्भ तक का समय लखनऊ, मुरादाबाद, सहारनपुर आदि में महर्षि ने लगाया। उत्तर प्रदेश के चांदपुर मेले पर ही 77 में सर्वधर्मविचार हुआ। अप्रैल 77 से 78 तक 1-1/2 वर्ष का समय पंजाब के लुधियाना, अमृतसर, गुरदासपुर, बटाला, जालन्धर, लाहौर, फिरोजपुर, रावलपिण्डी, जेहलम, गुजरात, वजीराबाद, गुजरांवाला, मुलतान और पुनः लाहौर इन नगरों में प्रचार योजना और आर्यसमाजों की स्थापना में महर्षि ने व्यतीत किया।

1878 के अन्तिम मासों में उत्तरप्रदेश के रुड़की, अलीगढ़ (2) मेरठ (2) में प्रचार योजना तथा आर्यसमाज की स्थापना की दुन्दुभि बजाते हुए महर्षि दयानन्द भारत की राजधानी दिल्ली में पधारे। इसके पश्चात् राजस्थान के जयपुर (2), पुष्कर (2) अजमेर (2) में वेद प्रचार यात्रा की। तदनन्तर 1879 में हरिद्वार के कुम्भ मेले पर महर्षि ने डेरा लगाया, मेले के पश्चात् देहरादून का कार्यक्रम बना। इन्हीं दिनों 1880 में थियोफिसिकल सोसायटी ने अपना सम्बन्ध आर्यसमाज के साथ जोड़ा और कुछ समय पश्चात् अपने आपको अलग कर लिया। देहरादून के अनन्तर उत्तरप्रदेश के मुरादाबाद (2), बदायूं, बरेली, शाहजहांपुर (2), फर्रुखाबाद (5), कानपुर (2), दानापुर, काशी (4). लखनऊ (2), मैनपुरी, मेरठ (3), आगरा (3) क्रमशः प्रचार के केन्द्र बने। 1881 में भरतपुर, जयपुर (3), अजमेर (3), मसूदा, रायपुर, चितौड़ का कार्यक्रम बना। 1882 में इन्दौर होते हुए पुनः बम्बई कार्यक्षेत्र बना। जुलाई 82 में राजस्थान पर उदयपुर विशेष कार्यस्थल बना और अगस्त 82 में यहीं परोपकारिणी सभा की स्थापना हुई। जो कि पुस्तक प्रकाशन, प्रचार की दृष्टि से आज भी विशेष कार्य कर रही है। मार्च 83 में उदयपुर से शाहपुर महर्षि पधारे और 31 मई को जोधपुर आए। यहां तब से नियमित प्रचार और ग्रन्थलेखन का कार्य चल रहा था, तो 29 सितम्बर की रात को ऐसा दूध दिया गया जिसके कारण कुछ देर बाद असह्य पीड़ा, उलटियां, दस्त आरम्भ हो गये, अनेक, प्रकार के इलाज करने पर भी यह सब शान्त नहीं हुआ। उलटा 'ज्यों-ज्यों दवा की, मर्ज बढ़ता गया' और स्थिति यहां तक जा पहुंची, कि सारे शरीर पर फफोले उभर आए। रुग्णावस्था में ही 21 अक्तूबर को आबू और 26 को अजमेर महर्षि दयानन्द को लाया गया। 31 अक्तूबर 1883 को दीपमाला वाले दिन महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने प्राणों का त्याग किया।

इस सारे घटनाक्रम का विश्लेषण करने से स्पष्ट होता है, कि वेदप्रचार, समाज सुधार के क्षेत्र में महर्षि दयानन्द ने दिन-रात एक कर दिया। जिसका जनता पर एक अच्छा प्रभाव हुआ, जिसके परिणामस्वरूप एक व्यवस्थित विचारधारा यत्र-तत्र-सर्वत्र अपना प्रभाव दिखाने लगी। 1875 से 83 तक का समय आर्य समाज ने महर्षि की छत्रछाया में पूर्ण किया। महर्षि की विचारधारा और कार्य का तात्कालिक जनता और भारत के भावी नेताओं पर जो प्रभाव हुआ। वह महर्षि को अनेक प्रकार से सफल सिद्ध करता है। अतएव दीपमाला के सामान्य रूप के साथ आर्यसमाज सोत्साह महर्षि बलिदान दिवस कृतज्ञतापूर्वक आयोजित करता है।

इस सब के साथ यह बात विशेष रूप से विचारणीय है, कि दीपमाला पवित्रता तथा प्रकाश का प्रेरक पर्व है। महर्षि दयानन्द ने जो विचार दिए, वे प्रकाश की तरह ही स्पष्ट, सुनिश्चित हैं। जैसे कि अभिवादन के लिए नमस्ते शब्द अवसर के अनुरूप, सार्थक, तर्कसंगत, शास्त्रसम्मत और आधारभूत मूल भावना से हर तरह से मेल खाता है।

मैं क्या मानता हूँ

लेo-महर्षि दयानन्द सरस्वती

सर्वतन्त्र सिद्धान्त अर्थात् साम्राज्य सार्वजनिक धर्म जिसको सदा से सब मानते आये, मानते हैं और मानेंगे भी इसीलिए उसको सनातन नित्यधर्म कहते हैं कि जिसका विरोधी कोई भी न हो सके। यदि अविद्यायुक्त जन अथवा किसी मतवाले भ्रमाये हुए जन जिसको अन्यथा जानें वा मानें उसका स्वीकार कोई भी बुद्धिमान् नहीं करते किन्तु जिसको आप्त अर्थात् सत्यमानी, सत्यवादी, सत्यकारी, परोपकारक, पक्षपात रहित विद्वान् मानते हैं वही सबको मन्तव्य और जिस को नहीं मानते वह अमन्तव्य होने से प्रमाण के योग्य नहीं होता। अब जो वेदादि सत्यशास्त्र और ब्रह्मा से लेकर जैमिनी मुनि पर्यन्तों के माने हुए ईश्वरादि पदार्थ हैं जिनको कि मैं भी मानता हूं सब सज्जन महाशयों के सामने प्रकाशित करता हूं। मैं अपना मन्तव्य उसी को जानता हूँ कि जो तीन काल में सबको एक सा मानने योग्य है। मेरा कोई नवीन कल्पना वा मतमतान्तर चलाने का लेशमात्र भी अभिप्राय नहीं है किन्तु जो सत्य है उसको मानना-मनवाना और जो असत्य है उसको छोड़ना और छुड़वाना मुझको अभीष्ट है। यदि मैं पक्षपात करता तो आर्य्यावर्त्त में प्रचारित मतों में से किसी एक मत का आग्रही होता किन्तु जो जो आर्य्यावर्त्त वा अन्य देशों में अधर्मयुक्त चालचलन हैं। इनका स्वीकार और जो धर्मयुक्त बातें हैं उनका त्याग नहीं करता, न करना चाहता हूं, क्योंकि ऐसा करना मनुष्यधर्म से बहि: है। मनुष्य उसी को कहना कि मननशील होकर स्वात्मवत् अन्यों के सुख-दु:ख और हानि लाभ को समझे, अन्यायकारी बलवान से भी न डरे और धर्मात्मा निर्बल से भी डरता रहे, इतना ही नहीं किन्तु अपने सर्व सामर्थ्य से धर्मात्माओं की, चाहे वे महा अनाथ निर्बल और गुणरहित क्यों न हों, रक्षा, उन्नति प्रियाचरण और अधर्मी चाहे चक्रवर्ती सनाथ महाबलवान् और गुणवान् भी हो तथापि उसका नाश अवनति और अप्रियाचरण सदा किया करे अर्थात् जहां तक हो सके वहां तक अन्यायकारियों के बल की हानि और न्यायकारियों के बल की उन्नति सर्वथा किया करे, इस काम में चाहे उसको कितना ही दारुण दु:ख प्राप्त हो, चाहे प्राण भी भले ही जावें परन्तु इस मनुष्यपनरूप धर्म से पृथक् कभी न होवे। इसमें श्रीमान् महाराज भर्तृहरि जी आदि ने श्लोक कहे हैं। उनका लिखना उपयुक्त समझकर लिखता हूं-

निन्दन्तु नीतिनिपुणा यदि वा स्तुवन्तु,
लक्ष्मी: समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम्।
अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा.
न्याय्यात्पथ: प्रविचलन्ति पदं न धीरा:।।१।। भर्तृहरि।।

न जातु कामान्न भयान्न लोभाद्,
धर्म त्यजेज्जीवितस्यापि हेतो।।
धर्मो नित्य। सुखदुखे त्वनित्ये,
जीवो नित्यो हेतुरस्यत्वनित्य:।।२।। महाभारते।।
एक एव सुहृद्धर्मी निधनेप्यनुयाति य:।
शरीरेण समं नाशं सर्वमन्यद्धि गच्छति।।१।। मनु०।।
सत्यमेव जयते नानृतं सत्येन पन्था विततो देवयान:।
येनाक्रमन्त्यृषयो ह्याप्तकामा यत्र तत्सत्यस्य परमं निधानम्।।४।।
न हि सत्यात्परो धर्मो नानृतात्पातकं परम्।
न हि सत्यात्परं ज्ञान तस्मात सत्यं समाचरेत्।।५।।उ नि०।।

इन्हीं महाशयों के श्लोकों के अभिप्राय के अनुकूल सबको निश्चय रखना योग्य है। अब मैं जिन जिन पदार्थों को जैसा जैसा मानता हूं उन उन का वर्णन संक्षेप से यहां करता हूँ कि जिनका विशेष व्याख्यान इस ग्रन्थ में अपने अपने प्रकरण में कर दिया है, इनमें से:-

१-प्रथम 'ईश्वर' कि जिसके ब्रह्म, परमात्मादि नाम हैं जो सच्चिदानन्दादि लक्षणयुक्त है, जिसके गुण, कर्म, स्वभाव पवित्र हैं, जो सर्वज्ञ, निराकार, सर्वव्यापक, अजन्मा, अनन्त, सर्वशक्तिमान्, दयालु, न्यायकारी, सब सृष्टि का कर्त्ता, धर्त्ता, हर्त्ता सब जीवों को कर्मानुसार सत्य न्याय से फलदाता आदि लक्षणयुक्त है उसी को परमेश्वर मानता हूं।

२-चारों 'वेदों' (विद्या धर्मयुक्त ईश्वरप्रणीत संहिता मन्त्रभाग) को निर्भ्रान्त स्वत: प्रमाण मानता हूँ, वे स्वयं प्रमाणस्वरूप हैं कि जिनके प्रमाण होने में किसी अन्य ग्रन्थ की अपेक्षा नहीं। जैसे सूर्य वा प्रदीप अपने स्वरूप के स्वत: प्रकाशक और पृथिव्यादि के भी प्रकाशक होते हैं वैसे चारों वेद हैं, और चारों वेदों के ब्राह्मण, छ: अंग, छ: उपांग, चार उपवेद और ११२७ (ग्यारह सौ सत्ताईस) वेदों की शाखा, जो कि वेदों के व्याख्यानरूप ब्रह्मादि महर्षियों के बनाये ग्रन्थ हैं उनको परत: प्रमाण अर्थात् वेदों के अनुकूल होने से प्रमाण और जो इनमें वेदविरुद्ध वचन हैं उनका अप्रमाण करता हूं।

३-जो पक्षपातरहित न्यायाचरण, सत्यभाषणादियुक्त ईश्वराज्ञा वेदों से अविरुद्ध है उसको 'धर्म' और जो पक्षपातसहित अन्यायाचरण मिथ्याभाषणादि ईश्वराज्ञाभंग वेदविरुद्ध है उसको 'अधर्म' मानता हूं।

४-जो इच्छा, द्वेष, सुख, दु:ख और ज्ञानादि गुणयुक्त अल्पज्ञ नित्य है उसी को 'जीव' मानता हूं।

५-जीव और ईश्वर स्वरूप और वैधर्म्य से भिन्न और व्याप्य व्यापक और साधर्म्य से अभिन्न हैं, अर्थात् जैसे आकाश से मूर्तिमान् द्रव्य कभी भिन्न न था, न है, न होगा और न कभी एक था न है, न होगा इसी प्रकार परमेश्वर और जीव को व्याप्य-व्यापक, उपास्य-उपासक और पिता-पुत्र आदि सम्बन्धयुक्त मानता हूं।

६-'अनादि पदार्थ' तीन हैं। एक ईश्वर, द्वितीय जीव, तीसरा प्रकृति अर्थात् जगत् का कारण इन्हीं को नित्य भी कहते हैं। जो नित्य पदार्थ हैं, उनके गुण, कर्म स्वभाव भी नित्य हैं।

७-'प्रवाह से अनादि' जो संयोग से द्रव्य, गुण, कर्म उत्पन्न होते हैं वे वियोग के पश्चात् नहीं रहते परन्तु जिनसे प्रथम संयोग होते हैं, वह सामर्थ्य उनमें अनादि है और उससे पुनरपि संयोग होगा तथा वियोग भी, इन तीनों को प्रवाह से अनादि मानता हूं।

८-'सृष्टि, उसको कहते हैं जो पृथक् द्रव्यों का ज्ञान-युक्तिपूर्वक मेल होकर नानारूप बनना।

९-'सृष्टि का प्रयोजन' यही है कि जिसमें ईश्वर के सृष्टिनिमित्त गुण, कर्म, स्वभाव का साफल्य होना। जैसे किसी ने किसी से पूछा कि नेत्र किस लिये हैं? उसने कहा देखने के लिये। वैसे ही सृष्टि करने के ईश्वर के सामर्थ्य की सफलता सृष्टि करने में है और जीवों के कर्मों का यथावत् भोग करना आदि भी।

१०-'सृष्टिसकर्तृक' है, इसका कर्त्ता पूर्वोक्त ईश्वर है, क्योंकि सृष्टि की रचना देखने और जड़ पदार्थ में अपने आप यथायोग्य बीजादि स्वरूप बनने का सामर्थ्य न होने से सृष्टि का 'कर्त्ता' अवश्य है।

११-'बन्ध' सनिमित्तक अर्थात् अविद्या-निमित्त से है। जो-जो पाप कर्म ईश्वरभिन्नोपासना अज्ञानादि सब दु:ख फल करने वाले हैं। इसलिए यह 'बन्ध' है कि जिसकी इच्छा नहीं और भोगना पड़ता है।

१२-'मुक्ति' अर्थात् सर्व दुखों से छूटकर बन्ध रहित, सर्वव्यापक ईश्वर और उसकी सृष्टि में स्वेच्छा से विचरना, नियत समय पर्यन्त मुक्ति के आनन्द को भोग के पुन: संसार में आना।

१३-'मुक्ति के साधन' ईश्वरोपासना अर्थात् योगाभ्यास, धर्मानुष्ठान ब्रह्मचर्य से विद्याप्राप्ति' आप्त विद्वानों का संग, सत्य विद्या सुविचार और पुरुषार्थ आदि हैं।

१४-'अर्थ' वह है कि जो धर्म ही से प्राप्त किया जाए और जो अधर्म से सिद्ध होता है उसको 'अनर्थ' कहते हैं।

१५-'काम' वह है कि जो धर्म और अर्थ से प्राप्त किया जाए।

१६-'वर्णाश्रम' गुण कर्मों की योग्यता से मानता हूं।

१७-'राजा' उसी को कहते हैं जो शुभ गुण, कर्म, स्वभाव से प्रकाशमान, पक्षपातरहित, न्याय-धर्म की सेवा, प्रजाओं में पितृवत् वर्त्ते और उनको पुत्रवत् मान के उनकी उन्नति और सुख बढ़ाने में सदा यत्न किया करे।

१८-'प्रजा' उसको कहते हैं कि जो पवित्र गुण, कर्म, स्वभाव को धारण करके पक्षपातरहित न्याय धर्म के सेवन से राजा और प्रजा की उन्नति चाहती हुई राजविद्रोह रहित राजा के साथ पुत्रवत् वर्त्ते।

१९-जो सदा विचार कर असत्य को छोड़ सत्य का ग्रहण करे, अन्यायकारियों को हटावे और न्यायकारियों को बढ़ावे, अपने आत्मा के समान सबका सुख चाहे सो "न्यायकारी" है उसको मैं भी ठीक मानता हूं।

२०-'देव' विद्वानों को और अविद्वानों को 'असुर' पापियों को 'राक्षस, अनाचारियों को 'पिशाच, मानता हूं।

२१-उन्हीं विद्वानों, माता, पिता, आचार्य्य, अतिथि, न्यायकारी राजा और धर्मात्मा जन, पतिव्रता स्त्री और स्त्रीव्रत पति का सत्कार करना 'देवपूजा' कहाती है, इससे विपरीत 'अदेवपूजा'। इनकी मूर्तियों को पूज्य और इतर पाषाणादि जड़मूर्तियों को सर्वथा अपूज्य समझता हूँ।

२२-'शिक्षा' जिससे विद्या, सभ्यता, धर्मात्मा, जितेन्द्रियतादि की बढ़ती होवे और अविद्या दोष छूटें उसको शिक्षा कहते हैं।

२३-'पुराण' जो ब्रह्मादि के बनाये ऐतरेयादि ब्राह्मण पुस्तक हैं, उन्हीं को पुराण, इतिहास, कल्प, गाथा और नाराशंसी नाम से मानता हूं; अन्य भागवतादि को नहीं।

२४-'तीर्थ' जिससे दुखसागर से पार उतरे कि जो सत्य भाषण, विद्या, सत्संग, यमादि योगाभ्यास, पुरुषार्थ, विद्यादानादि शुभ कर्म हैं उन्हीं को तीर्थ समझता हूँ; इतर जलस्थलादि को नहीं।

२५-'पुरुषार्थ प्रारब्ध से बड़ा' इसलिये है कि जिससे संचित प्रारब्ध बनते, जिसके सुधरने से सब सुधरते और जिसके बिगड़ने से सब बिगड़ते हैं, इसी से प्रारब्ध की अपेक्षा पुरुषार्थ बड़ा है।

२६-'मनुष्य' को सबसे यथायोग्यस्वात्मवत् सुख, दु:ख, हानि, लाभ में वर्त्तना श्रेष्ठ, अन्यथा वर्त्तना बुरा समझता हूं।

२७-'संस्कार' उसको कहते हैं कि जिससे शरीर, मन और आत्मा उत्तम होवे। वह निषेकादि श्मशानान्त सोलह प्रकार का है, इसको कर्त्तव्य समझता हूं और दाह के पश्चात् मृतक के लिये कुछ भी न करना चाहिए।

२८-'यज्ञ' उसको कहते हैं कि जिसमें विद्वानों का सत्कार यथायोग्य शिल्प अर्थात् रसायन जो कि पदार्थ विद्या उससे उपयोग और विद्यादि शुभ गुणों का दान अग्निहोत्रादि जिनसे वायु, वृष्टि, जल, औषधि की पवित्रता करके सब जीवों को सुख पहुंचाना है; उसको उत्तम समझता हूँ।

२९-जैसे 'आर्य' श्रेष्ठ और 'दस्यु' दुष्ट मनुष्यों को कहते हैं वैसे ही मैं भी मानता हूं।

३०-'आर्य्यावर्त्त' देश इस भूमि का नाम इसलिये है कि इसमें आदि सृष्टि से आर्य लोग निवास करते हैं, परन्तु इसकी अवधि उत्तर में हिमालय, दक्षिण में विन्ध्याचल, पश्चिम में अटक और पूर्व

में ब्रह्मपुत्र नदी है, इन चारों के बीच में जितना देश है उसको 'आर्यावर्त' कहते और जो इनमें सदा रहते हैं उनको भी 'आर्य' कहते हैं।

३१-जो सांगोपांग वेद विद्याओं का अध्यापक सत्याचार का ग्रहण और मिथ्याचार का त्याग करावे वह 'आचार्य' कहाता है।

३२-'शिष्य' उसको कहते हैं कि जो सत्य शिक्षा और विद्या को ग्रहण करने योग्य, धर्मात्मा, विद्याग्रहण की इच्छा और आचार्य का प्रिय करने वाला है।

३३-'गुरु' माता पिता और जो सत्य को ग्रहण करावे और असत्य को छुड़ावे वह भी 'गुरु' कहलाता है।

३४-'पुरोहित' जो यजमान का हितकारी सत्योपदेष्टा होवे।

३५-'उपाध्याय' जो वेदों का एकदेश वा अंगों को पढ़ाता हो।

३६-'शिष्टाचार' जो धर्माचरणपूर्वक ब्रह्मचर्य से विद्याग्रहण कर प्रत्यक्षादि प्रमाणों से सत्यासत्य का निर्णय करके सत्य का ग्रहण असत्य का परित्याग करना है यही शिष्टाचार और जो इसको करता है वह 'शिष्ट' कहाता है।

३७-प्रत्यक्षादि आठ 'प्रमाणों' को भी मानता हूँ।

३८-'आप्त' जो यथार्थवक्ता, धर्मात्मा सबके सुख के लिए प्रयत्न करता है उसी को 'आप्त' कहता हूँ।

३९-'परीक्षा' पांच प्रकार की है। इसमें से प्रथम जो ईश्वर उसके गुण, कर्म, स्वभाव और वेदविद्या दूसरी प्रत्यक्षादि आठ प्रमाण, तीसरी सृष्टिक्रम, चौथी आप्तों का व्यवहार और पांचवीं अपने आत्मा की पवित्रता विद्या। इन पांच परीक्षाओं से सत्याऽसत्य का निर्णय करके सत्य का ग्रहण असत्य का परित्याग करना चाहिये।

४०-'परोपकार' जिससे सब मनुष्यों के दुराचार दुःख छूटें, श्रेष्ठाचार और सुख बढ़े उसके करने को परोपकार कहता हूँ।

४१-'स्वतन्त्र' 'परतन्त्र' जीव अपने कर्मों में स्वतन्त्र और कर्मफल भोगने में ईश्वर की व्यवस्था से परतन्त्र; वैसे ही ईश्वर अपने सत्याचार आदि काम करने में स्वतन्त्र है।

४२-'स्वर्ग' नाम सुख विशेष भोग और उसकी सामग्री की प्राप्ति का है।

४३-'नरक' जो दुःख विशेष भोग और उसकी सामग्री की प्राप्ति होना है।

४४-'जन्म जो शरीर धारण कर प्रकट होना; सो पूर्व, पर और मध्य भेद से तीनों प्रकार का मानता हूँ।

४५-शरीर के संयोग का नाम 'जन्म' और वियोगमात्र को 'मृत्यु' कहते हैं।

४६-''विवाह'' जो नियमपूर्वक प्रसिद्धि से अपनी इच्छा करके पाणिग्रहण करना वह विवाह कहाता है।

४७-''नियोग'' विवाह के पश्चात् पति के मर जाने आदि वियोग में अथवा नपुंसकत्वादि स्थिर रोगों में स्त्री वा आपत्काल में पुरुष स्ववर्ण वा अपने से उत्तम वर्णस्थ स्त्री वा पुरुष के साथ सन्तानोत्पत्ति करना।

४८-''स्तुति'' गुणकीर्त्तन, श्रवण और ज्ञान होना। इसका फल प्रीति आदि होते हैं।

४९-''प्रार्थना'' अपने सामर्थ्य के उपरान्त ईश्वर के सम्बन्ध से जो विज्ञान आदि प्राप्त होते हैं उनके लिये ईश्वर से याचना करना और इसका फल निरभिमान आदि होता है।

५०-''उपासना'' जैसे ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव पवित्र हैं वैसे अपने करना। ईश्वर को सर्वव्यापक अपने को व्याप्य जान के ईश्वर के समीप हम और हमारे समीप ईश्वर है ऐसा निश्चय योगाभ्यास से साक्षात् करना उपासना कहाती है। इसका फल ज्ञान की उन्नति आदि है।

५१-''सगुणनिर्गुण्स्तुतिप्रार्थनोपासना'' जो-जो गुण परमेश्वर में हैं उनसे युक्त और जो-जो नहीं है उनसे पृथक मान कर प्रशंसा करना ''सगुणनिर्गुणस्तुति'', शुभगुणों के ग्रहण की इच्छा और दोष छुड़ाने के लिये परमात्मा का सहाय चाहना ''सगुणनिर्गुणोपासना'' और सब गुणों से सहित, सब दोषों से रहित परमेश्वर को मानकर अपने आत्मा को उसके और उसकी आज्ञा के अर्पण कर देना ''सगुणनिर्गुणोपासना'' होती है।

ये संक्षेप से स्वसिद्धान्त दिखला दिये हैं। इनकी विशेष व्याख्या इसी ''सत्यार्थप्रकाश'' के प्रकरण में है तथा ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका आदि ग्रंथों में भी लिखी है। अर्थात् जो-जो बात सबके सामने माननीय है उनको मानता अर्थात् जैसे सत्य बोलना सबके सामने अच्छा और मिथ्या बोलना बुरा है, ऐसे सिद्धांतों को स्वीकार करता हूं और जो मतमतान्तर के परस्पर विरुद्ध झगड़े हैं उनको मैं पसन्द नहीं करता क्योंकि इन्हीं मतवालों ने अपने मतों का प्रचार कर मनुष्यों को फंसा के परस्पर शत्रु बना दिये हैं। इस बात को काट, सर्वसत्य का प्रचार कर, सब को ऐक्यमत में करा, द्वेष छुड़ा, परस्पर में दृढ़ प्रीतियुक्त करा के सब से सब को सुख और लाभ पहुँचाने के लिये मेरा प्रयत्न और अभिप्राय है। सर्वशक्तिमान् परमात्मा की कृपा, सहाय और आप्तजनों की सहानुभूति से 'यह सिद्धान्त सर्वत्र भूगोल में शीघ्र प्रवृत्त हो जावे' जिससे सब लोग सहज सेधर्म्मार्थकाममोक्ष की सिद्धि करके सदा उन्नत और आनन्दित होते रहें, यही मेरा मुख्य प्रयोजन है।

अलमतिविस्तरेण बुद्धिमद्वर्य्येषु।।

ओ३म् शन्नो मित्रः शं वरुणः। शन्नो भवत्वर्य्यमा।। शन्न इन्द्रो बृहस्पतिः। शन्नो विष्णुरुरुक्रमः।। नमो ब्रह्मणे। नमस्ते वायो। त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि। त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्मावादिषम्। ऋतमवादिषम्। सत्यमवादिषम्। तन्मामावीत्। तद्वक्तारमावीत्। आवीन्माम् आवीद्वक्तारम्। ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।

स्वामी दयानन्द के सत्य अहिंसा के प्रयोग

ले०-स्वर्गीय श्री पं० चन्द्रमणि विद्यालंकार

१

अनूपशहर की बात है कि एक दिन एक ब्राह्मण स्वामी जी के समीप आया और अभिवादन करने के पश्चात् उन्हें नम्रतापूर्वक पान भेंट किया। स्वामी जी ने ज्यों ही पान मुख में रखा और उसका रस लिया, तुरन्त उन्हें भान हुआ कि इसमें तो विष पड़ा हुआ है। स्वामी जी ने उस ब्राह्मण को तो कुछ नहीं कहा, परन्तु वहाँ से उठ गङ्गा-पार चले गये। वहाँ जाकर वस्ती-न्यौली क्रिया से विष बाहर निकाल दिया और पुन: अपने आसन पर आ विराजे।

उन दिनों अनूपशहर के तहसीलदार सय्यद मुहम्मद साहब थे। वे स्वामी जी के समीप प्राय: नित्यप्रति आया करते थे और उनके सद्गुणों से प्रभावित होकर उनके परमभक्त बन गये थे। तहसीलदार साहब को स्वामी जी को विष देने की बात पता लग गयी। उन्होंने तुरन्त उस अपराधी को गिरफ्तार कराया और जेल में डाल दिया। इसके बाद वे यह सोचते हुए कि महाराज बड़े प्रसन्न होंगे कि मैंने हत्यारे को कैद में डाल दिया है, उनके पास पहुँचे। परन्तु, इस बार स्वामी जी उनसे बोले ही नहीं और अपनी दृष्टि दूसरी ओर फेर ली। इसे देखकर तहसीलदार अत्यन्त चकित हुए। सकुचाते हुए स्वामी जी से पूछने लगे-''महाराज! आप मुझसे इस प्रकार अप्रसन्न क्यों हैं? मेरा क्या अपराध है?'' स्वामी जी ने उत्तर दिया-''मैंने सुना है, आपने मेरे कारण आज एक मनुष्य को आबद्ध किया है, परन्तु, मैं तो मनुष्यों को बँधवाने नहीं आया हूँ, प्रत्युत छुड़वाने आया हूँ। यदि दुष्ट अपनी दुष्टता को नहीं छोड़ते, तो हम क्यों अपनी श्रेष्ठता का परित्याग करें।'' यह सुनकर तहसीलदार चकित हो गये और तुरन्त उस ब्राह्मण को कैद से छोड़ दिया गया।

२

काशी में एक दिन एक मनुष्य ने भक्त का रूप धारण करके भक्तिभावपूर्वक स्वामी जी की सेवा में भोजन लाकर अर्पित किया। उस समय स्वामी जी भोजन पा चुके थे, अत: ग्रहण नहीं किया। तब उस कपटी भक्त ने पान प्रस्तुत करते हुए निवेदन किया, महाराज यदि भोजन स्वीकार नहीं करते तो कृपया यह पान तो ले लीजिए। स्वामी जी ने पान का बीड़ा ले लिया। वे ज्यों ही उस बीड़े को खोलकर देखने लगे कि वह कपटी भक्त झटपट वहाँ से निकल भागा। इस बीड़े की जाँच सरकारी अस्पताल में कराई गयी। पता लगा इसमें हलाहल विष पड़ा हुआ है।

३

अपने काशी-वास में स्वामी जी ने अन्य सम्प्रदायों की चर्चा के साथ-साथ मुसलमानी मत की भी आलोचना की। इससे वहाँ के कुछ मुसलमान भाई बहुत रुष्ट हो गये। एक दिन सायंकाल स्वामी जी गंगा-तट पर समाधि में निमग्न बैठे थे कि कुछ मुसलमानों की टोली वहाँ आ निकली। उस टोली के कुछ-एक मनुष्यों ने स्वामी जी को पहचान लिया और कहा-देखो, यह वही बाबा है, जो कुछ दिन हुए हमारे मत के विरुद्ध व्याख्यान दे रहा था। उस टोली में से दो मनुष्य अत्यधिक आवेश में आकर आगे बढ़े और स्वामी जी को गङ्गा में डुबा देने की ठानी। दोनों ने दोनों हाथों से स्वामी जी की दोनों भुजाएँ कन्धों के पास से दृढ़तापूर्वक पकड़ लीं। वे स्वामी जी को झुलाकर गङ्गा-धार में फेंकना ही चाहते थे कि उन्होंने अपनी दोनों भुजाएँ सिकोड़कर अपने शरीर के साथ लगा लीं और बलपूर्वक उछलकर दोनों मनुष्यों सहित गङ्गा में कूद पड़े। उन दोनों व्यक्तियों के हाथ कुछ काल तक तो स्वामी जी के शिकंजे में कसे रहे, परन्तु नदी में गोता लगाते समय दयापूर्वक उन्हें छोड़ दिया।

वे दोनों मनुष्य तब भी अपनी घातक वृत्ति से बाज़ नहीं आये और पानी से बाहर निकलकर अपने दूसरे साथियों सहित हाथों में ढेले-ईंट-पत्थर आदि लिये बड़ी देर तक इस ताक में गङ्गा-तट पर खड़े रहे कि बाबा अपना सिर बाहर निकाले और वे उसे मारें। स्वामी जी भी उनकी घातक वृत्ति को ताड़ गये थे, इसलिए वे अपने प्राणों को रोके हुए नदी-तल पर ही पद्मासन लगाये बैठे रहे। अँधेरा हो जाने पर वह टोली, यह समझकर कि बाबा डूब चुका है, वहाँ से चल दिये और स्वामी जी जल से बाहर निकल कर अपने आवास पर लौट आये।

४

काशी में एक दिन स्वामी जी घूमने जा रहे थे। एक हट्टा-कट्टा, महा-मल्ल-समान बलिष्ठ गुण्डा उनके पीछे हो लिया। उसके हाथ में एक मोटा लट्ठ भी था। स्वामी जी ने पीछे फिरकर देखा तो उन्हें वह लठैत घातक स्वभाव का जान पड़ा। वे वहीं ठहर गये और उसकी ओर मुँह करके इतनी जोर से हुँकार-नाद गुँजाया कि वह गुण्डा अत्यन्त भयभीत होकर चीत्कार करता हुआ उलटे पाँव भाग निकला।

५

सोरों की बात है कि शास्त्र-चर्चा में चकांकित पण्डित स्वामी जी से पराजित होकर पेट में बल खाने लगे और स्वामी जी

की हत्या करके अपने को शान्त करना चाहा। इस निमित्त वे एक दिन आधी रात बीते स्वामी जी के आवास स्थान पर आये। उस समय पास ही के एक स्थान में दूसरा साधु गूढ़ निद्रा में पड़ा सो रहा था। उन्होंने इसी साधु को दयानन्द समझा और चुपके से खटिया समेत उठाकर गङ्गा की धारा में फेंक दिया। जब वह साधु डूबने लगा और चिल्ला-चिल्लाकर रक्षा के लिए पुकारने लगा तो उन्हें पता लगा कि यह दयानन्द नहीं है, तब उसे जल में से निकाला।

६

सोरों में एक दिन स्वामी जी सभा में बैठे हुए धर्मोपदेश दे रहे थे, सभा निस्तब्ध भाव से महाराज के वचनामृत का मधुर पान कर रही थी, इतने में एक हृष्ट-पुष्ट आदमी मोटा सोटा कन्धे पर धरे और क्रोध के मारे तमतमाता लाल चेहरा किये सभा को चीरता हुआ सीधा स्वामी जी के पास पहुँचा। सभा की नीरवता को भंग करके दाँतों को पीसता हुआ कड़ककर बोला-''अरे साधु! तू ठाकुर-पूजा का खण्डन करता है? तू श्रीगङ्गा मैय्या की निन्दा करता है? तू देवताओं के विरुद्ध बोलता है? झटपट बता तेरे किस अंग पर यह सोटा मारकर तेरा काम तमाम कर दूँ?''

इस दृश्य को देखकर सारी सभा घबरा उठी, परन्तु स्वामी जी के चेहरे पर किंचितमात्र भी परिवर्तन नहीं दिखाई पड़ा. वे मुस्कराते हुए बोले-''भद्र! यदि आपके विचार में मेरा धर्म-प्रचार करना कोई अपराध है, तो इस अपराध का प्रेरक मेरा यह मस्तिष्क है। यही मुझे खण्डन की बातें सुझाता है सो यदि आप अपराधी को दण्ड देना चाहते हैं तो, लो, मेरे सिर पर सोटा मारकर इसे दण्डित करो''-इन शब्दों के साथ ज्यों ही स्वामी जी ने अपने नेत्रों की ज्योति उसके नेत्रों में डालकर देखा कि वह फूट-फूट कर रोने लगा और स्वामी जी के चरणों में लोट-पोट होकर क्षमा माँगने लगा। स्वामी जी ने उसे धीरज बँधाते हुए कहा-''प्यारे! तुमने मेरा कोई अपराध नहीं किया। तुम मुझे मारते, तब भी कोई बात थी। अब यों ही क्यों रो रहे हो। जाओ, ईश्वर तुम्हें सत्य मार्ग प्रदर्शित करें।''

७

मिर्जापुर की घटना है। एक रात स्वामी जी अपने आवास में बैठे हुए एक जिज्ञासु के सन्देहों को प्रश्नोत्तर द्वारा दूर कर रहे थे। इतने में दो भीमकाय बलिष्ठ गुण्डे आ पहुँचे। वे मना करने पर भी बार-बार हँसते और छेड़-छाड़ करते ही रहे। एक-दो बार तो स्वामी जी ने उन्हें कोमल शब्दों में समझाया, परन्तु वे कहाँ समझने वाले थे। वे तो आये ही इसलिए थे कि स्वामी जी को तंग किया जाए। जब वे किसी तरह नहीं माने तो स्वामीजी ने मन्युरूप धारण करके बड़े जोर से हुँकार-नाद किया। इस हुँकार से वे दोनों गुण्डे काँप उठे और मूर्छित होकर भूमि पर गिर पड़े। वह हुँकार-नाद इतना तीव्र था कि पास बैठे जिज्ञासु को भी अपने कानों में अँगुलियाँ देनी पड़ीं। स्वामी जी और जिज्ञासु ने तुरन्त जल के छींटे देकर उन दोनों को सचेत किया। जब वे उठकर बैठे तो दोनों पसीना-पसीना हो रहे थे और उनका मल-मूत्र भी निकला पड़ा था। स्वामी जी ने कहा-''संन्यासी लोग किसी को मारा-पीटा नहीं करते, इसलिए डरो नहीं। जाओ, कपड़े सँभालकर निर्भयता से चले जाओ।''

८

जिन दिनों स्वामी जी मिर्जापुर में ठहरे हुए थे, उन दिनों एक ओझा वहाँ आये हुए थे। उन्होंने नगर भर में प्रसिद्ध किया कि उनके पास ऐसे-ऐसे यन्त्र-मन्त्र सिद्ध हैं कि यदि कोई उनका पुरश्चरण कराए, तो इक्कीसवें दिन निश्चय से दयानन्द का देह-पात हो जाएगा। इस पर एक सेठ ने पुरश्चरण का सब खर्च अपने ऊपर लिया और पुरश्चरण प्रारम्भ हो गया।

मन्त्र-प्रयोग करते अभी तीन-चार दिन ही हो पाये थे कि दैवयोग से मन्त्र-प्रयोग कराने वाले सेठ जी के गले पर एक फोड़ा निकल आया। वह विषैला फोड़ा दिन-प्रतिदिन भयङ्कर रूप धारण करता चला गया।

अन्त में ऐसी संकटपूर्ण स्थिति आ गयी है कि उससे सेठजी को खाने-पीने-थूकने-बोलने में भी अति कष्ट होने लगा। एक दिन ओझा जी सेठ जी के पास आये और बोले-''प्रयोग की समाप्ति का दिन आ गया है, सेठ जी! बलिदान की सामग्री प्रस्तुत करा दीजिए। प्रयोग-समाप्ति पर जब इधर विधिपूर्वक बलि दी जाएगी तो उधर उसी समय दयानन्द का सिर धड़ से कटकर भूमि पर गिर पड़ेगा।''

सेठजी ने बड़ी कठिनता से किसी तरह बोलते हुए कहा-''ओझा जी! दयानन्द का सिर तो गिरते ही गिरेगा परन्तु मेरा तो अभी गिरा जा रहा है, पीड़ा के कारण मेरे प्राण निकल रहे हैं। आप कृपा करके पुरश्चरण बन्द करा दीजिए।'' इस पर पुरश्चरण बन्द हो गया।

९

मिर्जापुर की ही बात है कि एक समय एक उपद्रवी सरगना अपने सैकड़ों साथियों को साथ लेकर स्वामी जी के स्थान पर पहुँचा। वहाँ पहुँचकर वह सरगना स्वामी जी के पाँव-पर-पाँव धरकर बैठ गया। फिर ऊटपटाँग बकना और छेड़छाड़ करना प्रारम्भ किया। पास धरे बताशे खा-खाकर जूठे करने लगा। जब ऐसा करने से रोका, तो बोला-''बच्चा! हमारी जूठन से घृणा करते हो। हम तेरे गुरु हैं। किंचित् ठहर। ले आज तुझे खण्डन का सारा स्वाद चखा देते हैं।''

स्वामी जी ने डाँटकर कहा-''तुम मुझे डराना चाहते हो। मैं यदि डरने वाला होता तो देशान्तरों में घूमकर प्रचार कैसे कर सकता।'' फिर अपने सेवक को कहा-''देखो बाहर के किवाड़ बन्द कर दो। मैं अकेला ही इन सबको सीधा करके छोड़ूँगा।''

स्वामी जी के प्रदीप्त नेत्रों को देखकर उस सरगना के होश उड़ गये और वह सीधा होकर पीछे हटकर बैठ गया और फिर कुछ नहीं बोला।

१०

एक समय स्वामी जी कर्णवास ठहरे हुए थे। उन दिनों गङ्गा-स्नान का महामेला था। बरौली के राव कर्णसिंह भी स्नान के लिए आये हुए थे। यहाँ राव की ससुराल भी थी। राव कट्टर वैष्णव थे और रंगाचार्य जी के चेले थे। ये स्वामी जी की कुटिया के बिल्कुल समीप ही ठहरे हुए थे। एक रात उन्होंने अपने उतारे पर रासलीला का आयोजन किया। उसमें पधारने के लिए स्वामी जी महाराज को भी निमन्त्रित किया, परन्तु स्वामी जी ने रासलीलाओं को एक निन्दनीय कर्म बतलाते हुए उसमें आने में असमर्थता प्रकट की। उधर उन्हीं दिनों स्वामी जी वैष्णव सम्प्रदाय का खण्डन भी बहुत कर रहे थे। राव के बैठकबाजों ने वैष्णव-आलोचना को खूब बढ़ा-चढ़ाकर स्वामी जी के विरुद्ध कर्णसिंह को भड़काया। फिर क्या था! अगले दिन सायंकाल राव साहब चमचमाती तलवार बाँधे हुए और इसी प्रकार तलवारों से लैस अन्य १०-१२ साथियों को साथ लेकर स्वामी जी के स्थान पर आ पहुँचे।

पहुँचते ही रास तथा वैष्णवमत सम्बन्धी प्रश्नोत्तर होने लगे, परन्तु कर्ण सिंह जी तो प्रारम्भ से ही क्रोध में भरकर आये थे, इस प्रश्नोत्तर से उनका पारा और भी ज्यादा चढ़ गया। फिर क्या था, राव ने हाथ में तलवार लेकर स्वामी जी को अनेकानेक गालियाँ देना प्रारम्भ किया। स्वामी जी ने हँसते हुए कहा-''राव जी! यदि शास्त्रार्थ करना अभीष्ट है तो कृपया वृन्दावन से अपने गुरु रंगाचार्य जी को बुला लीजिए। दोनों में से जो हार जाए, वह दूसरे के सिद्धान्त को स्वीकार करेगा यह प्रतिज्ञा हो जानी चाहिए।''

इस पर कर्ण सिंह का पारा और तेज हुआ। आवेश में गालियों की धाराप्रवाह-वृष्टि और साथ ही तलवार का हवा को काटना जारी हुआ। तिस पर भी स्वामी जी मुस्कराते हुए बोले-''राव महाशय! खड्ग का बारम्बार क्यों सञ्चालन करते हो। शास्त्रार्थ करना हो तो अपने गुरु जी को यहाँ ले आइए हम कटिबद्ध हैं, परन्तु, यदि आपको शास्त्रार्थ करने का चाव है तो संन्यासी से क्यों टकराते हो, जयपुर-जोधपुर में जा भिड़ो।''

फिर क्या था। कर्ण सिंह आपे से बाहर हो गये, गालियाँ बरसाते हुए तलवार लिये स्वामी जी पर लपके। स्वामी जी ने 'अरे धूर्त' इतना कहते हुए राव को हाथ से ढकेल दिया। सँभलकर कर्णसिंह फिर तलवार का वार करने के लिए आगे बढ़े। राव तलवार चलाना ही चाहते थे कि स्वामी जी ने झपटकर उनके हाथ से तलवार छीन ली और भूमि पर टेककर बीच में से उसके दो टुकड़े कर दिये। फिर राव को कहा-''राव! क्या तुम चाहते हो कि मैं भी आततायी पर प्रहार कर बदला लूँ? मैं संन्यासी हूँ, तुम्हारे किसी भी अत्याचार से चिढ़कर मैं तुम्हारा अनिष्ट चिन्तन कभी न करूँगा। जाओ ईश्वर तुम्हें सुमति प्रदान करें।'' इतना कहकर स्वामी जी ने तलवार के वे दोनों टुकड़े दूर फेंक दिये और राव को विदा किया।

जिस समय यह सब घटना घटी, उस समय लगभग ५० आदमी स्वामी जी के पास बैठे इस सब ताण्डव नृत्य को देख रहे थे। उन्होंने स्वामी जी से कहा-''महाराज! पुलिस को इसकी सूचना देकर कर्ण सिंह को दण्ड अवश्य दिलाना चाहिए।'' स्वामी जी ने उत्तर दिया-''हम अभियोग कभी न चलाएँगे। हमारा धर्म तो सन्तोष करना है। यदि वह अपने क्षात्र-धर्म का पालन नहीं कर सका, तो हम अपने ब्राह्मण धर्म से क्यों पतित हों। जो धर्म का हनन करता है, अन्त में उसका अपना हनन हो जाता है।''

११

संवत् १९२८ के कार्तिक मास में स्वामी जी कर्णवास में ठहरे हुए थे। उन्हीं दिनों बरौली के राव कर्णसिंह भी वहीं थे। राव ने एक दिन आधी रात के कुछ ही बाद अपने तीन नौकरों को लपलपाती तलवारें देकर स्वामी जी के वध के लिए भेजा। उस समय स्वामी जी वहाँ अकेले थे और तुर्यावस्था में समाधिस्थ बैठे थे। बधिक लोग स्वामी जी के समीप आये, परन्तु उनकी हिम्मत नहीं पड़ी कि वे उन पर तलवार का वार करें। उनके हाथ-पाँव फूल गये और वे हिम्मत हार वापस लौट आये। इस पर राव ने उन्हें खूब डाँट-फटकार दी और डरा-धमकाकर दुबारा स्वामी जी की हत्या के लिए भेजा। इस बीच स्वामी जी समाधि से उठ चुके थे। स्वामी जी की कुटिया राव के उतारे के ही समीप थी। राव ने जो-जो धमकियाँ अपने नौकरों को दीं, वे सब स्वामी जी ने भली प्रकार सुनीं, परन्तु दूसरी बार भी वे बधिक साहस-हीन होकर उलटे पाँव लौट आये। इस पर राव बहुत अधिक क्रोध में भर गये और उन नौकरों पर कठोरतापूर्वक वाग्वज्र के प्रहारों से बरस पड़े। इससे वे बधिक तलवारें चमचमाते हुए तीसरी बार जैसे-तैसे स्वामी जी के पास पहुँच गये। आततायियों को बिल्कुल समीप ही आते देख स्वामी जी खड़े हो गये और बड़े जोर से हुँकार-नाद गुँजाकर भूमि पर लात पटकी। वे तीनों-के-तीनों भयभीत होकर मूर्छित हो भूमि पर गिर पड़े और उनके हाथों से तलवारें छूट गयीं। बड़ी देर बाद उन्हें होश आया और वे सँभलकर वहाँ से भाग गये।

स्वामी जी के पास एक सेवक गाढ़ निद्रा में सोया हुआ था। स्वामी जी के घोर हुँकार-गर्जन से वह चौंककर उठा, और उस भयानक दृश्य को देखकर काँपता हुआ बोला-''महाराज! ये दुष्ट लोग कहीं फिर न आ जायें, इसलिए चलिए, कहीं ऊँचे-नीचे स्थान में छिपकर रात बिता लें। स्वामी जी ने-

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि, नैनं दहति पावका।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो, न शोषयति मारुत:।।

श्लोक उच्चारण करके कहा-''संन्यासीजन अपनी रक्षा निमित्त गढ़ और गुफा का आश्रय नहीं ढूँढ़ा करते। हमारा रक्षक तो केवल एक भक्तवत्सल भगवान् ही है। तुम्हें घबराना नहीं चाहिए। हम चाहें तो उन्हीं से शस्त्रों को छीनकर उन्हें सीधा कर सकते हैं।''

दिन निकलते ही राव की क्रूरता का समाचार नगर में बिजली

के समान फैल गया। उन दिनों राजघाट पर पंजाबी सेना की एक टुकड़ी पड़ी हुई थी। इस दुर्घटना को सुनकर सैनिकों के आवेश का पारा उच्चतम शिखर पर चढ़ गया। पच्चीस वीर शस्त्र बाँधे हुए स्वामी जी के पास आ पहुँचे और हाथ जोड़कर कहने लगे- "सन्त जी महाराज! हमें एक बार आज्ञा दीजिये। फिर देखिये, हम आप जैसे साधु-सन्तों के दुश्मनों को कैसा मजा चखाते हैं। इस कार्य से चाहे हमारी नौकरी भी क्यों न चली जाए, परन्तु उन दुष्टों को तो पार लगा के ही लौटेंगे।" स्वामी जी ने अपने सदुपदेशों द्वारा उनके खौलते खून को शान्त किया एवं वे सैनिक शान्त होकर अपने स्थान पर लौट गये।

इस प्रकार दया में आनन्द लेने वाले संन्यासी के दरबार से तो क्रूर कर्ण सिंह बच गये, परन्तु भगवान् की अन्तिम अदालत से तो कोई अनिष्टकारी नहीं बच पाता। इस अदालत से तो चुपके से मिले दण्ड को अवश्यमेव भुगतना ही पड़ता है। एक ओर तो राव कर्ण सिंह कर्णवास से अपने घर जाते ही इतने अधिक रुग्ण हो गये कि उनकी दशा उन्मत्त की-सी आजन्म हो गयी, और दूसरी ओर उनका ५० हजार का एक मुकदमा जो इलाहाबाद में कई दिनों से चल रहा था, उसमें भी वे हार गये।

१२

भाद्रपद संवत् १९३६ में स्वामी जी बरेली ठहरे हुए थे। वहाँ उनके व्याख्यानों में पादरी, कलक्टर, कमिश्नर, युरोपियन आदि सभी आया करते थे। एक दिन स्वामी जी ने अपने व्याख्यानों में पुराणों की समालोचना की। उसे सुनकर कमिश्नर, कलक्टर आदि खूब खिल-खिलाकर हँसे। परन्तु ज्यों ही थोड़ी देर के बाद ईसाई मत की बारी आयी, तो उनकी समालोचना सुनकर कमिश्नर साहब का चेहरा कोपावेश से तम-तमा उठा। अगले ही दिन सेठ लक्ष्मीनारायण जी के पास, जिनकी कोठी पर स्वामी जी ठहरे हुए थे, कमिश्नर साहब का बुलावा पहुँच गया। सेठ जी को बुलाकर कमिश्नर ने कहा-"आप पण्डित जी को कह दीजिये, अधिक कठोर खण्डन न करें, अन्यथा उनके व्याख्यान बन्द कर दिये जायेंगे।"

स्वामी जी को जैसे-तैसे यह सन्देश मिल गया। अगले ही दिन स्वामी जी ने अपना व्याख्यान सिंह-गर्जना के साथ प्रारम्भ किया-"लोग कहते हैं सत्य का प्रकाश न कीजिए क्योंकि कलक्टर कुपित हो जाएगा, कमिश्नर प्रसन्न नहीं रहेगा, गवर्नर पीड़ा पहुँचाएगा। अरे! चाहे चक्रवर्ती राजा भी अप्रसन्न क्यों न हो जाए हम तो सत्य ही कहेंगे। आत्मा सत्य है। उसकी सत्ता को न कोई शस्त्र छेदन कर सकता है, और न अग्नि जला सकती है। वह एक अजर-अमर अविनाशी पदार्थ है। शरीर तो अवश्य नाशवान् है, जिसका जी चाहे इसका नाश कर दे। परन्तु हम देह की रक्षा के लिए सनातन धर्म को नहीं त्यागेंगे-सत्य को नहीं छोड़ेंगे। वह शूरवीर पुरुष मुझे दिखलाइए जो मेरे अन्तरात्मा को छिन्न-भिन्न करने का घमण्ड करता हो। जब तक ऐसा पुरुष दृष्टिगोचर नहीं होता। दयानन्द के लिए सत्य में सन्देह करना स्वप्न में भी असंभव है।"

स्वामी जी के व्याख्यानों में पादरी स्काट नियमपूर्वक आया करते थे, परन्तु उस दिन वे नहीं आये। व्याख्यान-समाप्ति पर पूछने पर स्वामी जी को विदित हुआ कि रविवार के कारण वे गिर्जा गये हुए हैं। स्वामी जी सीधे गिर्जा की ओर चल पड़े। तीन-चार-सौ अन्य मनुष्य भी पीछे-पीछे हो लिये। वहाँ पहुँचने पर स्काट महाशय तत्काल वेदी से नीचे उतरे और आगे बढ़कर स्वामी जी को, उपदेश देने के लिए विनयपूर्वक वेदी पर ले आये। स्वामी जी ने उस वेदी पर घंटाभर उपदेश दिया और मनुष्यों को ईश्वर मानकर पूजने में अनेक दोष दर्शाये।

१३

फर्रुखाबाद की घटना है। स्वामी जी महाराज अपने स्थान पर विराजमान थे। बीस-पच्चीस दुर्जन स्वामी जी का वध करने के लिए उनके डेरे पर आ पहुँचे, परन्तु वे आततायी लोग उनके भव्य डील-डोल और आँखों में चमकती हुई दिव्य ज्योति को देखकर भयभीत हो गये और स्वामी जी के प्रबल प्रताप से कम्पायमान होकर उलटे पाँव लौट आये। शीघ्र ही स्वामी जी के एक भक्त को इस आक्रमण का समाचार मिला। वह स्वामी जी की रक्षा के लिए कुछ बलिष्ठ वीरों को साथ लेकर वहाँ पहुँच गये, परन्तु आक्रमणकारी तो पहले ही वहाँ से चम्पत हो चुके थे। भक्त ने महाराज से कहा-"गुरुदेव! आप हमारे भीतर के स्थान में चलकर रहिए ताकि कोई उपद्रवी आप पर आक्रमण न करे।" स्वामी जी ने कहा-"महाशय जी! यहाँ तो इस प्रकार आप मेरी रक्षा कर लेंगे, परन्तु अन्यत्र कौन करेगा? मेरी रक्षा तो सर्वत्र परमात्मदेव ही करते हैं, इसलिए मैं सर्वथा निर्भय हूँ।" एवं स्वामी जी भीतर के स्थान में नहीं गये, अपितु वहीं आसन जमाये रहे।

१४

फर्रुखाबाद में एक विशाल सभा जमी हुई है। सहस्रों श्रोता नर-नारी एकटक कान लगाये और एक भव्य मूर्ति की ओर आँखें लगाए शान्तभाव से बैठे हुए हैं। स्वामी जी का उपदेशामृत प्रवाह गम्भीर भाव से चल रहा है। बीच-बीच में प्रश्नोत्तर भी हो रहे हैं। इतने में एक मद्य से उन्मत्त ब्राह्मण बीच में से उठा और स्वामी जी पर जूता फेंका। जूता तो स्वामी जी तक नहीं पहुँचा, बीच में ही गिर पड़ा, परन्तु जन-समूह प्रबल वेग से तरंगित हो उठा। सभा में बैठे हुए सत्यनामिए साधुओं की आँखों में खून उतर आया। उनका उतरा हुआ खून उस दुर्जन को दण्ड देकर ही वापस होना चाहता था। वे उसे पकड़कर पीटने लगे। स्वामी जी ने उन साधुओं को रोकते हुए कहा-"इसकी चेष्टा से हमें कोई दुःख नहीं हुआ। और यदि जूता लग भी जाता तो कौन-सा राम-बाण था। इसने जो कुछ किया है, अज्ञान और सुरा के वशीभूत होकर किया है। इसलिए इस पर दया करो और इसे छोड़ दो।" इस पर साधुओं ने उसे छोड़ दिया।

१५

फर्रुखाबाद में स्वामी जी पधारे हुए थे। कुछ उपद्रव-कारियों ने एक गुण्डे लठैत को बहुत-सा धन देकर इस बात के लिए तैयार किया कि वह स्वामी जी का काम तमाम कर दे। निश्चयानुसार वह स्वामी जी के स्थान पर पहुँचा। उस लठैत ने हाथ में एक मोटा लट्ठ उठाया हुआ था। पहुँचते ही वह कड़ककर स्वामी जी से बोला-"बाबा, क्या तुम मूर्ति को ईश्वर नहीं मानते हो।"

स्वामी जी ने उत्तर दिया-"भद्र! तुम जानते हो, ईश्वर का स्वरूप क्या है?" वह बोला-"हाँ मैं जानता हूँ, ईश्वर सच्चिदानन्द सर्वशक्तिमान है, भक्त-वत्सल दयालु देव है, और सर्वत्र परिपूर्ण है।"

तब स्वामी जी ने मुस्कराकर कहा-"भद्र! ईश्वर के जो गुण तुमने कथन किये हैं, वे सब सत्य हैं। तुम्हारी इस समझ की मैं प्रशंसा करता हूँ। परन्तु अब तुम ही इन वर्णित ईश्वरीय गुणों को मन्दिर की मूर्तियों के गुणों के साथ मिलाओ। यदि न मिलें तो तुम्हें भी वही मानना चाहिए जिसकी साक्षी तुम्हारी आत्मा देती है।"

समझाने के इस ढंग से उसका चित्त पिघल गया। उसने लट्ठ फेंक दिया और श्रीचरणों में गिर पड़ा। उस दिन से उसकी काया ही पलट गयी और वह सत्य का पुजारी बन गया।

१६

फर्रुखाबाद की ही बात ह। स्वामी जी गंगा में पाँव फलाए बठे थे। कुछ-एक लड़के उधर आ निकले। उन्होंने साधु को देखकर आपस में कहा, देखो, यह कितना मोटा साधु है। लड़कों को मोटे साधु को सताने की एक शरारत सूझी। उन्होंने गीले रेत के गोले बना-बना कर स्वामी जी पर मारने प्रारम्भ किये। बहुत देर तक लड़कों की यह शरारत चलती रही और स्वामी जी चुपचाप देखते रहे। परन्तु जब बाल-कण आँखों में पड़ने लगे, तो वे उस स्थान से उठकर चल दिये, परन्तु लड़कों को कुछ नहीं कहा।

१७

फर्रुखाबाद में स्वामी जी को सत्य-अहिंसा के तेजस्वी प्रयोग करने के अनेक अवसर मिले। वहाँ एक दिन प्रभात वेला में स्वामी जी भ्रमणार्थ बाहर निकले। भ्रमण मार्ग में एक दुर्जन आ खड़ा हुआ और स्वामी जी पर गालियों की वर्षा प्रारम्भ की। साथ-ही-साथ यह भी कहा, तू तो ईसाइयों का नौकर है हमें ईसाई बनाना चाहता है, परन्तु स्वामी जी सब सुनते रहे और मौन धारण किये हुए मुस्कराते रहे। नित्य-नियम के अनुसार अपना भ्रमण समाप्त किया और निवास स्थान पर लौट आये। परन्तु उसे भूले-भटके मनुष्य ने फिर भी स्वामी जी का पीछा नहीं छोड़ा। वह सताने के लिए तो तुला ही हुआ था, इसलिए स्वामी जी के डेरे पर आ पहुँचा। डेरे में पहुँचने पर स्वामी जी ने उसका स्वागत सत्कार करते हुए कहा-"आइए, बैठिए, आने का कैसे कष्ट किया?"-इस प्रकार स्वामी जी का प्रेमालाप करना था कि वह सताने की इच्छा से आया हुआ, एकदम बदल गया और उसका दिल मोम की तरह पिघलकर द्रवीभूत हो गया। उसके दोनों नेत्रों से गंगा-यमुना नदियाँ बहने लगीं और वह क्षमायाचना के लिए स्वामी जी के चरणों में लोटने लगा। स्वामी जी ने उसे धीरज बँधाते हुए कहा-"प्यारे! शब्द आकाश में उत्पन्न होकर वहीं लीन हो जाता है, इसलिए तुम्हारे वे कटु वचन भी नष्ट हो गये हैं। वे मेरे पास नहीं हैं, उन्होंने मुझे स्पर्श तक नहीं किया, इसी कारण उनसे मुझे कुछ भी दु:ख नहीं हुआ।" इस घटना से उसका जीवन ही पलट गया और आगे से सत्य-अहिंसा का एक खोजी बन गया।

१८

संवत १९३७ के वैशाख मास में स्वामी जी का फिर फर्रुखाबाद आना हुआ। आने पर उन्हें समाचार सुनाया गया कि एक आर्य-सभासद को कुछ एक उद्दण्ड मनुष्यों ने मिलकर खूब पीटा। मि० स्काट की अदालत में फौजदारी मुकद्दमा चला और अपराधियों को दण्ड दिया गया। इस पर स्वामी जी ने आर्य पुरुषों को चेतावनी दी-"आर्यो! हमने लोगों के कठोर हृदयों को कोमल बनाना है, दूर भागतों को आकर्षित करना है। यदि वे अत्याचार भी करें, तो अपने उदात्त उद्देश्य को दृष्टि में रखते हुए हमें तो उनसे प्रेम ही करना चाहिए। धर्म के नाम से बदला लेने की भावना सर्वथा अभद्र है।"

उधर स्काट महाशय भी स्वामी जी से यदा-कदा मिलने के लिए आया करते थे। स्वामी जी के फर्रुखाबाद पहुँचने पर वे भी उनके समीप आये। वार्तालाप के प्रसंग में उन्होंने भी स्वामी जी को उक्त घटना सुनाते हुए कहा-"महाराज! आपके सेवक को पीटने वाले दुष्टजनों को उचित दण्ड दे दिया गया है।" स्वामी जी ने उत्तर में कहा-"महाशय! संन्यासी लोग तो अपने प्राणघातक को भी पीड़ा पहुँचते देखकर प्रसन्न नहीं होते। इस आश्रम में अपने-पराये सब एक-समान समझे जाते हैं।"

स्वामी जी के इस उत्तर को सुनकर स्काट महाशय अत्यन्त प्रभावित हुए।

१९

संवत् १९३७ के आश्विन मास में स्वामी जी मेरठ से देहरादून में पधार रहे थे। मार्ग में सहारनपुर के रेलवे स्टेशन पर अनेक भक्त लोग स्वामी जी के स्वागत-सत्कार के लिए जमा थे। उन्होंने स्वामी जी को सूचित किया-"महाशय! आपको जैन लोग कैदखाने में डलवाने का षड्यन्त्र रच रहे हैं।"

स्वामी जी ने निर्भयतापूर्वक उत्तर दिया-"भाई! सोने को जितना तपाया जाता है उतना ही कुन्दन बनता है। विरोध की आँच से सत्य कान्ति चौगुनी चमकती है। दयानन्द को तो यदि कोई तोप के मुँह के आगे रखकर भी पूछेगा कि बता सत्य क्या है, तब भी उसके मुख से वेद की श्रुति ही निकलेगी। अब तो मैंने जैन

मत के बहुत-से ग्रन्थ देख लिए हैं। वे लोग मेरे प्रश्नों का समाधान कदापि नहीं कर सकते।''

२०

अमृतसर में स्वामी जी ठहरे थे। वहाँ रात्रि के समय उनके व्याख्यान हुआ करते थे। व्याख्यान रात्रि के आठ बजे समाप्त हो जाता था। एक दिन एक अध्यापक ने छोटे-छोटे विद्यार्थियों को कहा-''देखो आज हम सब साधु की कथा में चलेंगे। तुम चलते समय अपनी-अपनी झोलियों में ईंटों के रोड़े भर लेना वहाँ जब इशारा करूँ, तुम तत्काल कथा करने वाले साधु पर इन रोड़ों को फेंकने लग जाना। देखो, खूब अच्छी तरह तड़ातड़ रोड़े बरसाना, मैं तुम्हें लड्डू दूँगा।''

वे बालक अबोध तो थे ही, फिर गुरु जी की आज्ञा थी। उन्होंने गुरु जी की आज्ञानुसार अपनी झोलियों में रोड़े भर लिए और व्याख्यान स्थली में आ पहुँचे। अभी कुछ-कुछ अन्धेरा हुआ था कि अध्यापक ने इशारा किया और उन बालकों ने स्वामी जी पर कंकड़ बरसाने प्रारम्भ कर दिये। एक बार तो समस्त सभा चलायमान हो गयी, परन्तु स्वामी जी ने उसे तुरन्त शान्त कर दिया।

पुलिस कर्मचारियों ने उन उपद्रवी लड़कों में से कुछ-एक को पकड़ लिया और व्याख्यान की समाप्ति पर स्वामी जी के सामने ला उपस्थित किया। पुलिस के हाथ पड़े तो वे बालक चिल्लाने और फूट-फूट कर रोने लगे। स्वामी जी ने उनको तसल्ली दी और ईंट मारने का कारण पूछा। वे हिचकियाँ लेते हुए फूट पड़े-''स्वामी जी! हमें तो गुरू जी ने कहा था कि झोली में रोड़े भर ले जाओ, जब मैं इशारा करूँ तब व्याख्यान देने वाले साधु पर बरसाने लग जाना, मैं तुम्हें लड्डू दूँगा।'' स्वामी जी ने तत्काल लड्डू मँगवाये और बालकों को कहा-''विद्यार्थियो! तुम्हारे अध्यापक तो सम्भव है तुम्हें लड्डू न दें, लो मैं तुम्हें दिये देता हूँ''-ऐसा कहकर स्वामी जी ने उन बालकों को अपने हाथ से लड्डू बाँटे और उन्हें पुलिस के पंजे से छुड़ाकर अपने-अपने घर भेज दिया।

२१

अमृतसर की ही घटना है। वहाँ के पण्डितों से स्वामी जी का शास्त्रार्थ निश्चित हुआ। शास्त्रार्थ का जो समय नियत हुआ था तदनुसार नियत समय पर स्वामी जी तो सभास्थल में आ पहुँचे, परन्तु पण्डित लोग नहीं पधारे। बहुत देर तक प्रतीक्षा करने के पश्चात् सात-आठ पण्डित आये और स्वामी जी के सम्मुख बैठ गये। इतने में ही उनके चेले-चाटों ने चारों ओर से स्वामी जी पर ईंट-पत्थर बरसाना और राख-धूल फेंकना प्रारम्भ कर दिया। स्वामी के भक्तों में बड़ा भारी विक्षोभ फैल गया। पुलिस प्रबन्ध के लिए आगे बढ़ी। पण्डित लोग एक-एक करके वहाँ से खिसक गये, परन्तु भक्त लोग अपराधियों को बिना दण्ड दिलाये शान्त नहीं हो रहे थे। इस पर स्वामी जी ने उस विक्षुब्ध जनता को शान्त करते हुए कहा-''भद्रजनो! मद्य-मदिरा से उन्मत्त जनों पर कोप नहीं करना चाहिये। हमारा काम एक वैद्य का है। उन्मत्त मनुष्य की चिकित्सा के लिए वैद्य उसे औषध देता है, उसकी लीला पर उसे मार-पीट नहीं करता। निश्चय जानिए, आज जो लोग मुझ पर ईंट-पत्थर और धूल बरसा रहे हैं, वे ही मेरे पीछे कभी आप लोगों पर पुष्प-वर्षा किया करेंगे।''

तत्पश्चात् स्वामी जी अपने डेरे की ओर चल पड़े। पीछे-पीछे कुछ-एक भक्तजन भी हो लिये। डेरे पर पहुँचने पर एक भक्त ने स्वामी जी से कहा-''स्वामी जी! आज दुष्ट लोगों ने आप पर बहुत राख-धूल फेंकी और आपका घोर अपमान किया।'' उत्तर में स्वामी जी ने कहा-''परोपकार और पर-हित करते समय अपने मान-अपमान और परनिन्दा का परित्याग करना ही पड़ता है। इसके बिना सुधार नहीं हो सकता। मैंने आर्यसमाज का उद्यान लगाया है अत: मेरी अवस्था एक माली की है। पौधों में खाद डालते समय राख-मिट्टी माली के सिर पर भी पड़ जाया करती है। मुझ पर राख-धूल चाहे कितनी पड़े मुझे इसकी कुछ भी चिन्ता नहीं, परन्तु वाटिका हरी-भरी बनी रहे और निर्विघ्न फूले-फले।''

ओह! स्वामी जी के दिल में परहित के लिए कितनी कसक थी। आर्य समाज से उन्हें क्या आशा थी। क्या आर्य समाज के संचालक अपने आचार्य की तड़पन को सुनेंगे!

२२

अमृतसर की ही एक और घटना है। स्वामी जी के सत्य-कथन को न सह सकने वाले लोग उनके शत्रु बने हुए थे। स्वामी जी के भक्तों को स्वामी जी पर घातक प्रहार होने का खटका था। अत: स्वामी जी की रक्षा के लिए कुछ-एक भक्तजन रात्रि काल में उन्हीं के डेरे पर सोया करते थे। एक दिन एक भक्त ने स्वामी जी को कह दिया कि आपने जो सिक्ख पन्थ पर आक्षेप किये हैं, उससे चिढ़कर कुछ निहंग आपके वध के लिए तुले बैठे हैं, रात को आपके समीप कुछ आर्य सोते हैं, अत: निहंगों का दाव नहीं चल रहा।

यह सुनकर स्वामी जी ने उसी दिन से वहाँ आर्यों का सोना बन्द कर दिया और कहा-''हम अकेले ही रहेंगे। जिसकी आज्ञा का मैं पालन कर रहा हूँ, वही परमेश्वर मेरा रक्षक है।''

२३

संवत् १९३४ के अन्त में स्वामी जी वजीराबाद पधारे हुए थे। वहाँ स्वामी जी का एक पण्डित से शास्त्रार्थ हो रहा था। पण्डित-मंडली ने पहले ही एक योजना बना रखी थी, कि किस प्रकार उपद्रव किया जाएगा। शास्त्रार्थ में पण्डित जी निरुत्तर हो गये। उन्होंने पूर्व निश्चित योजना के अनुसार कुछ गड़बड़ की, और एक छोकरे ने सीटी बजाना प्रारम्भ किया। प्रधान ने उस युवक को डाँटकर सीटी बजाने से रोका, परन्तु वहाँ तो कुछ और ही मनोरथ बँधे हुए थे। एकदम पण्डित जी और हुल्लड़बाज स्वामी जी पर टूट पड़े। ज्यों-त्यों करके स्वामी जी अपने डेरे पर आ गये, परन्तु उपद्रवियों ने फिर भी पीछा न छोड़ा। उन्होंने स्वामी

जी पर ईंट-पत्थर बरसाने में सावन-भादों की झड़ी लगा दी। स्वामी किवाड़ बन्द करके भीतर बैठ गये और उन लोगों की अज्ञानता पर हँसने लगे।

स्वामी जी का एक कर्मचारी पीछे रह गया। उपद्रवियों ने उसे पकड़ कर बहुत बुरी तरह पीटा। स्वामी जी को उसके इस प्रकार पिटने का समाचार मिला। वे उसे छुड़ाने के लिए बाहर निकले और केसरी की भाँति गरजते हुए ललकारा। इस उच्च गर्जना से भयभीत होकर सब के सब उपद्रवी भाग निकले और कर्मचारी की रक्षा हो सकी।

२४

बम्बई की बात है कि खण्डन से चिढ़कर कुछ-एक वैष्णवों ने स्वामी जी को मार डालने की ठानी। उन्होंने स्वामी जी के सेवक को अपने पास बुलाया और लालच देकर कहा-''यदि तुम विष देकर दयानन्द की समाप्ति कर दो, तो हम तुम्हें एक सहस्त्र रुपये देंगे।'' सेवक लालच में फँस गया। एक सहस्त्र रुपये देने का प्रोनोट लिख दिया गया और उसे समुत्तेजित करने के लिए प्रसन्नता के रूप में पाँच रुपये तथा पाँच सेर मिठाई उसी समय भेंट कर दी गयी। ज्यों ही सेवक लौटकर डेरे पर आया, स्वामी जी ने प्राज्ञ-नेत्रों से गुप्त भेद को ताड़कर उससे पूछा-''क्या तुम आज गोकुलियों के यहाँ गये थे?'' उत्तर 'हाँ' में मिलने पर दुबारा प्रश्न किया-''देखो, सच-सच बताना, वहाँ क्या ठहरा कर आये हो।''

अब सेवक भेद को छिपा न सका, उसने सब-कुछ सही-सही स्वामी जी को बतला दिया। इस पर स्वामी जी ने सेवक को समझाते हुए कहा-''देखो, जिसे परमेश्वर न मारे उसे मारने के लिए कोई भी समर्थ नहीं हो सकता। बनारस में मुझे हलाहल विष दिया गया, राव कर्ण सिंह ने पान में विष दिलाया, अन्य भी अनेक स्थानों में मुझ पर विष के विषम प्रयोग किये गये, परन्तु मेरा प्राणान्त नहीं हुआ। स्मरण रखो, अब भी मैं मारा नहीं जाऊँगा।''

स्वामी जी के प्रेमरस-परिपूर्ण वचनों को सुनकर सेवक पानी-पानी हो गया। स्वामी जी के चरणों में गिरकर क्षमा-याचना की और प्रतिज्ञा की कि अब कभी ऐसे निन्दनीय दाँव-पेचों में न आऊँगा।

२५

बम्बई में स्वामी जी पधारे हुए थे। एक दिन रात के समय दो हृदय पुष्ट बलिष्ठ मनुष्य स्वामी जी के वध के लिए चुपचाप मकान के अन्दर घुस आये। स्वामी जी की दृष्टि उन छिपे हुए हत्यारों के ऊपर पड़ गयी। वे उनके मनोभाव को ताड़ गये। उन्होंने गरजकर पूछा-''तुम कौन हो?'' वे स्वामी जी की गर्जना से भयभीत और कम्पायमान हो गये। बिना कुछ कहे-सुने एकदम भाग गये।

२६

बम्बई की ही तीसरी घटना है। एक दिन एक पन्थाई ने चार बलवान् मनुष्यों को स्वामी जी के वध के लिए तैयार किया। स्वामी जी प्रतिदिन प्रातःकाल समुद्र-तट की ओर भ्रमणार्थ जाया करते थे। स्वामी जी के वध की ताक में उसी ओर नित्यप्रति नियमपूर्वक वे चारों हत्यारे भी घूमने के लिए जाने लगे। एक दिन स्वामी जी ने इस कुचक्र को ताड़ लिया। वे चलते-चलते एकदम खड़े हो गये और पीछा करने वालों से कहा-''क्या तुम मेरा हनन करना चाहते हो?'' स्वामी जी की इस गर्जना और उनके प्रदीप्त नेत्र-तेज को देखकर वे एकदम सहम गये और फिर कभी उनका पीछा नहीं किया।

२७

सूरत में स्वामी जी की व्याख्यान-माला चल रही थी। उस दिन स्वामी जी का तीसरा भाषण था। व्याख्यान में ही एक पण्डित जी खड़े हो गये और मूर्ति-पूजन के सम्बन्ध में प्रश्नोत्तर करने लगे। परन्तु वे शीघ्र ही थरथरा गये और आगे न बोल सके। साम्प्रदायिक लोग उबल पड़े। उन्होंने कोलाहल मचा दिया और स्वामी जी पर ईंट-पत्थर-धूल बरसाना प्रारम्भ किया। सहायकों ने विनय की-''महाराज ये लोग बड़ा उत्पात मचा रहे हैं, कृपया अब व्याख्यान बन्द कर दीजिये।'' स्वामी जी ने कहा-''भद्रजनो! अपने भाइयों द्वारा फेंके हुए ईंट-पत्थर मेरे लिए पुष्पों की वर्षा है। व्याख्यान तो मैं समय पर ही समाप्त करूँगा।'' इतना कहकर स्वामी जी ने नियत समय तक अपना भाषण जारी रखा और फिर कुछ उपद्रव नहीं हुआ।

२८

सूरत के बाद स्वामी जी भड़ौंच पधारे। वहाँ उन्होंने नर्मदा-तट पर भृगु आश्रम में आसन जमाया। भड़ौंच में व्याख्यान-माला प्रारम्भ हो गयी। उन्हीं दिनों एक दक्षिणी पण्डित जी भी अपने अनेक शिष्यों सहित भड़ौंच में रह रहे थे। सायंकाल के समय स्वामी जी व्याख्यान दे रहे थे। वे पण्डित जी भी अपने दल-बल सहित आ पहुँचे। उन्होंने तर्जनी अंगुली से तर्जना करते हुए स्वामी जी के प्रति अनेकानेक कठोर शब्दों का प्रयोग करना प्रारम्भ किया। स्वामी जी के एक भक्त इस दुर्व्यवहार को न सह सके। उन्होंने दाँत पीसते हुए कहा-''भले मानस अब भी टल जा, नहीं तो तेरी कपाल-क्रिया अभी किये देता हूँ। यदि तूने स्वामी जी की ओर अंगुली भी उठायी, तो तेरी हड्डी-पसली एक कर दूँगा।''

इस पर स्वामी जी ने कहा-''बलदेव! कोप किस पर करते हो? ये तो हमारे भाई हैं। इन्हीं की कल्याण-कामना करते रात-दिन बीतते हैं। बलदेव! शान्त होओ, मेरे मानापमान पर ध्यान मत दो। धर्मोपदेशक को तो भूमि के सदृश्य सहनशीलता सम्पादन करनी चाहिये।'' इस पर बलदेव शान्त हो गये और पण्डित जी भी लज्जित-से होकर चुप हो गये और वहाँ से भाग निकले।

२९

भड़ौंच में एक पारसी ईसाई हो गये थे। उन्होंने ब्राह्मणों की सहायता से मूर्तिपूजा की सिद्धि में व्याख्यान का आयोजन किया। व्याख्यान में पधारने के लिए स्वामी जी को भी उन्होंने निमन्त्रित

किया। स्वामी जी व्याख्यान में पहुँच गये। व्याख्याता ने 'मूर्तिपूजा' विषय पर बोलते हुए स्वामी जी के लिए बुरे-भले शब्द कहे। सभा में कुछ-एक पूर्व के सैनिक भी बैठे हुए थे। वे स्वामी जी के अपमान को न सह सके। वे कोपावेश में आकर व्याख्याता को पीटना चाहते थे कि स्वामी जी ने तुरन्त रोकते हुए कहा-''वीर पुरुषो! अपमानकर्त्ता का अपमान करने से उसका सुधार नहीं होता, किन्तु सम्मान देने से वह सुधर जाता है। जैसे आग में आग डालने से आग शान्त नहीं होती, वैसे ही द्वेष-बुद्धि उसके साथ द्वेष करने से दूर नहीं हो सकती। अग्नि को शान्त करने का साधन जल है। इसी प्रकार द्वेष को मिटाने का साधन शान्ति-धारण करना है।'' इस पर सैनिक शान्त हो गये।

इसी प्रसंग में एक दिन वकील जेठालाल जी ने स्वामी जी से प्रार्थना की-''महाराज! यदि आप मूर्तिपूजा का मण्डन करने लग जाएँ, तो हम आपको शंकर का अवतार मानने लग जाएँगे।'' स्वामी जी ने उत्तर दिया-''काशीनरेश ने मुझे विश्वनाथ की गद्दी का लालच दिया था। किन्तु मैं किसी सांसारिक वासना के वशीभूत होकर सत्य का परित्याग कभी भी नहीं कर सकता।''

३०

भारत के महापुरुषों में श्रीयुत महादेव गोविन्द रानाडे का नाम बड़ा प्रसिद्ध है। वे हाईकोर्ट के प्रतिष्ठित जज थे। उन्होंने आग्रह किया कि स्वामी जी महाराज पूना पधारें। उनके आग्रह पर स्वामी जी आषाढ़ १९३२ को पूना पधारे। पूना में स्वामी जी के ५ व्याख्यान हुए। जब स्वामी जी पूना से विदा होने लगे, तो रानाडे महोदय ने स्वामी जी के विशाल जलूस का आयोजन किया। स्वामी जी का जलूस हाथी पर निकाला गया। जलूस का नेतृत्व रानाडे ही कर रहे थे। उधर दूसरी ओर कुछ-एक उपद्रवकारियों ने गधे का जलूस निकाला। ज्यों-ज्यों स्वामी का जलूस आगे बढ़ता जाता था, त्यों-त्यों उन लोगों का उत्पाद भी बढ़ता जाता था। उस दिन कुछ बून्दाबान्दी भी हो रही थी, इससे कहीं-कहीं मार्ग में कीचड़ हो रहा था। उपद्रवियों ने गाली-गलौच करना, स्वामी जी पर कीचड़ उछालना और ईंट-पत्थरों की वर्षा करना प्रारम्भ किया, परन्तु इन सब उत्पादों से स्वामी जी के चेहरे पर किंचित्मात्र भी भेद नहीं आया। वे बराबर हँसते रहे और रानाडे जी द्वारा पुलिस को आदेश दिया कि वह किसी भी उपद्रवी को कुछ न कहे, और ऐसा ही किया गया। इस कीचड़-उछाल में रानाडेजी के कपड़े भी कीचड़ से लथपथ हो गये। परन्तु स्वामी जी की आज्ञा सबने शिरोधार्य की। स्वामी जी का जलूस निकालने वालों ने पूर्ण शान्ति रखी।

जलूस-समारोह में ही एक भक्त ने स्वामी जी को समाचार दिया-''भगवन्! विपक्षी लोग आपको गालियाँ दे रहे हैं।'' स्वामी जी ने कहा-''अच्छा है, गालियों से पेट खाली हो लेगा, तो अच्छे शब्द कहेंगे।''

''भगवन्! एक आदमी का मुँह काला कर गधे पर चढ़ाया हुआ है और उसे आपका नाम ले-लेकर पुकारते हैं।'' उत्तर मिला ''महाशय! सच्चे दयानन्द को तो कोई कालिमा नहीं लगी। हाँ, बनावटी दयानन्दों का मुख काला होना ही है।''

''भगवन् आपका नाम ले-लेकर पत्थर फेंकते हैं।'' स्वामी जी ने कहा-''ठीक है, कल पत्थर पूजते थे आज फेंकते हैं, सो मेरी बात मान ली।''

''भगवन्! आपको जन्म से नीच बतलाते हैं।'' उत्तर मिला-''मैं भी तो यही कहता हूँ कि जन्म से सब नीच हैं। जिसने पढ़ा-पढ़ाया वह ब्राह्मण हो गया, जो धर्म के लिए युद्ध में लड़ा वह क्षत्रिय हुआ, जिसने व्यापार-पशुपालन या कृषि की, वह वैश्य हुआ, नहीं तो शूद्र। मैंने ब्राह्मण के यहाँ जन्म लिया था। ब्राह्मण के पुत्र को जन्म से नीच माना तो मेरे ही सिद्धान्त पर आये। मुझे तो यह बात सुनकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई है।''

इस प्रकार स्वामी जी उन दुर्वचनों का अच्छा अर्थ लेते रहे और तनिक भी क्रोध नहीं किया, प्रत्युत हँसमुख ही बने रहे।

३१

थियोसोफिकल सोसायटी की नेत्र मेडम ब्लैवट्स्की ने अपने लेखों में लिखा है कि एक समय स्वामी जी महाराज बंगाल प्रान्त के एक नगर में व्याख्यान दे रहे थे। एक दुष्ट मनुष्य ने भीषण विषधर फणियर साँप उनके पाँव के समीप फैंक दिया। स्वामी जी तनिक भी विचलित नहीं हुए। उन्होंने उस विषधर सर्प के सिर पर अपने पैर की एड़ी रखकर उसे कुचल दिया और अपना व्याख्यान जारी रखा।

३२

शाहजहाँपुर (युक्तप्रान्त) से पाँच कोस के फासले पर चान्दापुर गाँव है। एक समय स्वामी जी वहाँ ठहरे हुए थे। एक दिन बातचीत के प्रसंग में स्वामी जी ने आप बीती सुनाई-

''जिन दिनों मैं एकांकी विचार करता था, उन दिनों मेरा एक ऐसे स्थान पर जाना हुआ जहाँ सभी शाक्त बसते थे। उन्होंने मेरी बड़ी सेवा-सुश्रूषा की। जब कई दिन के निवास के अनन्तर मैं वहाँ से चलने लगा तो उन लोगों ने अत्याग्रह से मुझे ठहरा लिया। मैं समझता रहा कि वे भक्तिभाव से मुझे ठहरा रहे हैं। ऐसे ही बहुत दिन बीत जाने पर उनका पर्व-दिन आ गया। उस दिन सारे शाक्त देवी के मन्दिर में एकत्र होकर गीत गाने लगे। उस दिन उन्होंने मुझे भी कहा कि आज हमारे मन्दिर में महोत्सव है, आप वहाँ अवश्य चलिए। मैंने बहुत समझाया कि देवी के दर्शनों में मेरा निश्चय नहीं है, परन्तु वे एक न सुनते थे। पाँव पकड़ कर कहने लगे कि यदि आज वर्ष के दिन आप मन्दिर में न पधारेंगे, तो हमारा सारा उत्साह भंग हो जाएगा। आप मूर्ति को नमस्कार आदि कुछ भी न करना, परन्तु हमारे लिए चले तो चलिए।

वह मन्दिर नगर से बाहर एक उजाड़ एकान्त में था। उनके विवश करने पर मुझे मन्दिर में जाना पड़ा। उस समय वहाँ आँगन में होम हो रहा था, और लोग उत्सव मना रहे थे। मुझे वे दुर्गा की मूर्ति दिखलाने के बहाने अन्दर ले गये। मैं सहज स्वभाव से दुर्गा की प्रतिमा के सम्मुख जा खड़ा हुआ। मूर्ति के पास ही एक

बलिष्ठ व्यक्ति नंगी तलवार लिये खड़ा था।

वहाँ के लोग मुझे कहने लगे-''महात्मा जी! माता के आगे झुक कर नमस्कार अवश्य कीजिए।'' मैंने उनको स्पष्ट शब्दों में कहा, ''मुझसे ऐसी आशा करना दुराशा मात्र है।'' मेरे कथन से पुजारी चिढ़ गया और पास आकर मेरी ग्रीवा को पकड़कर, मेरे सिर को नीचा करने लगा। उसके इस बर्ताव से मैं चकित हो गया। परन्तु, ज्यों ही मैंने दृष्टि फिराई तो क्या देखता हूँ कि वह खड्गधारी मेरे पास आ गया है और मेरी ग्रीवा पर खड्ग बरसाना ही चाहता है।

इस दृश्य को देखकर मैं तुरन्त सावधान हो गया। मैंने झपटकर उसके हाथ से तलवार छीन ली। पुजारी तो मेरे बायें हाथ के एक ही धक्के से मन्दिर की दीवार से जा टकराया, मैं तलवार लिये मन्दिर के आँगन में आ गया। उस समय आँगन के सभी लोग कुल्हाड़ा-छुरा आदि शस्त्र लेकर मुझ पर टूट पड़े। द्वार की ओर देखा तो उसको ताला लगा हुआ था। अपने आपको बलिदान से बचाने के लिए मैं उछलकर दीवार पर चढ़ गया और कूदकर दीवार के परले पार भाग निकला। उस स्थान के समीप ही एक वन था। दिन भर तो मैं वहाँ छुपा बैठा रहा, परन्तु जब रात का राज्य विस्तृत हुआ, तो रातों-रात ग्रामान्तर में जा पहुँचा। उस दिन से मैंने शाक्त लोगों का कभी भी विश्वास नहीं किया।

३३

संवत् १९३४ के वैशाख मास में स्वामी जी लाहौर ठहरे हुए थे। वहाँ बावली साहब में स्वामी जी के दो व्याख्यान हुए। व्याख्यान में प्रसङ्गानुसार स्वामी जी ने आपबीती तीन घटनाएँ इस प्रकार सुनाई-

(क) ''एक बार मैं गङ्गातीर विचरता हुआ एक निविड़ सघन वन में जा निकला। वहाँ मुझे सामने आता एक केसरी सिंह दृष्टिगोचर हुआ। मैं सीधा चलता हुआ जब उसके पास पहुँचा, तो वह सिंह मेरी ओर देख मुँह फिराकर जंगल में चला गया।''

(ख) ''एक बार मैं एक पर्णकुटी में आसन जमाये बैठा था, उसके पास ही कुछ साधु रहते थे। वे अकारण ही मेरे द्वेषी बन गये। जब महाकाली निशा आकाश की निबिड़ कालिमा के साथ एकाकार हो रही थी, तब वे साधु मुझे मार-मिटाने के लिए मेरी कुटिया पर आये और वध की विधि सोचने लगे। उनकी बातें मुझे सुनाई पड़ रही थीं। थोड़ी देर तक परस्पर परामर्श करने के अनन्तर उन्होंने मेरी झोंपड़ी में आग लगा दी। जब घास-फूस की कुटी को आग की लपटें लपेटकर भस्मी-भूत करने लगीं, तो मैं छप्पर को उठाकर बाहर निकल आया और अपने शरीर की रक्षा की।''

(ग) ''एक दिन जबकि मैं बनारस में व्याख्यान दे रहा था, एक मनुष्य ने मुझे पान लाकर दिया। ज्यों ही मैंने उसे मुख में रखकर उसका रस चूसा, तो मुझे ज्ञात हुआ कि इसमें विष मिला हुआ है। मैंने तत्काल वमन द्वारा उसे बाहर निकाल दिया।''

३४

जोधपुर के महाराजा ने स्वामी जी से विनयपूर्वक बारम्बार अभ्यर्थना की कि वे उनके राज्य जोधपुर में पधारें। इस पर स्वामी जी संवत् १९४० के ज्येष्ठ माह में शाहपुरा राज्य से जोधपुर जाने को समुद्यत हुए। जोधपुर की अवस्था से शाहपुराधीश भली-भाँति परिचित थे। उन्हें भय था कि वहाँ कहीं स्वामी जी के जीवन की हानि न हो जाए, अतएव उन्होंने स्वामी जी से निवेदन किया-''भगवन्! राजा लोग भोग-विलास मनमाने आमोद-प्रमोद में निमग्न रहा करते हैं। जहाँ आप पधारने लगे हैं, वहाँ वेश्याओं का अधिक खण्डन न कीजिएगा।'' स्वामी ने उत्तर दिया, ''मैं बड़े-बड़े कंटीले वृक्षों को नहेरने से नहीं काटा करता, उनके लिए तो अति तीक्ष्ण शस्त्रों की आवश्यकता होगी।''

इसी प्रकार शाहपुरा के अन्य आर्य पुरुषों ने भी जोधपुर जाने में आशंका समुपस्थित की, परन्तु स्वामी जी ने उन्हें भी इसी प्रकार का उत्तर दिया-''यदि लोग हमारी अंगुलियों को बत्तियाँ बनाकर जला दें, तो भी कोई चिन्ता नहीं। मैं वहाँ जाकर अवश्य सत्योपदेश दूँगा।''

३५

सत्य-व्रत के धनी महाराज अपने निश्चय पर अटल रहे और जोधपुर को प्रस्थान किया। उस समय वहाँ के महाराजा श्रीमान् यशवन्त सिंह जी और राजकुमार श्रीयुत प्रताप सिंह जी थे। जोधपुर स्वामी जी मियां फैजुल्लाखाँ के उद्यान में ठहरे। इसी उद्यान में आकर समय-समय पर महाराजा यशवन्त सिंह जी स्वामी जी से शिक्षा ग्रहण किया करते थे। कई बार महाराजा ने स्वामी जी से सविनय प्रार्थना कि वे उनके राजभवन में पधार कर कृतार्थ करें। एक दिन स्वामी जी बिना पहले कोई सूचना दिये राजभवन पहुँच गये। उन्होंने देखा वहाँ एक वेश्या विद्यमान है। महाराजा ने स्वामी जी को आते देख जल्दी-जल्दी वाराङ्गना को पालकी में बिठलाया और शीघ्र वहाँ से चलता किया। महाराजा ने समझा स्वामी जी ने इसे नहीं देखा।

इस वेश्या का मान राज्यभर में राज-संसर्ग के कारण अत्यधिक था। राज्य के सभी नौकर-चाकर उससे काँपते थे, और यहाँ तक कि उच्च राजकर्मचारियों को भी उसे प्रसन्न रखना पड़ता था।

स्वामी जी ने महाराजा को वेश्या-संसर्ग पर बहुत अधिक फटकारा और कहा-''राजन्! राजा लोग सिंह समान समझे जाते हैं। स्थान-स्थान पर भटकने वाली वेश्या कुतिया के सदृश्य है। वीर शार्दूल का कृपणा कुतिया से प्रेम करना और उस पर आसक्त हो जाना सर्वथा अनुचित है, आर्यजाति की कुल-मर्यादा के विपरीत है। केसरी की कन्दरा में, ऐसी कल्मष-कलुषित कुक्करी के आगमन का क्या काम है? इस कुव्यसन के कारण धर्म-कर्म भ्रष्ट हो जाता है, मान-मर्यादा को बट्टा लगता है। इस पाप-सोपान पर प्रथम पदार्पण करते ही, पुनः पद-पद पर पुरुष का अधः पतन आप-ही-आप होता चला जाता है। इस दुर्व्यसन को तिलाञ्जलि दे देनी चाहिए।''

उपदेश देने के अनन्तर स्वामी जी अपने निवास-स्थान पर लौट आये। रह-रहकर ऐसे-ऐसे महाराजा लोगों के अध:पतन के कारण प्रजा के दु:खों का दृश्य उनके सामने आता रहा। भक्तजनों से वार्तालाप करते हुए उन्होंने कई बार अपनी हृदय की हूक को प्रदर्शित करते हुए कहा-"हमारे देश के बड़े-बड़े मनुष्यों के आचार-विचार तो इतने बिगड़ गये हैं कि इनका सर्वनाश कभी का हो चुका होता। परन्तु इनकी पत्नियों का पतिव्रत-धर्म ही इन्हें अभी तक बचाये हुए, कुलवती आर्यनारियों ही अपने धर्म से इनकी रक्षा कर रही हैं।"

स्वामी जी ने अपने निवास-स्थान से राजकुमार प्रताप सिंह को जोधपुराधीश के लिए एक पत्र लिखा-

श्रीयुत मान्यवर शूरवीर महाराजा प्रताप सिंह जी!

आनन्दित रहो।

यह पत्र बाबा महाशय के दृष्टिगोचर भी कहा दीजिएगा। मुझे इस बात का बहुत शोक होता है कि श्रीमान् जोधपुराधीश आलस्य आदि में वर्तमान हैं और आप तथा बाबा महाशय रोगी शरीर वाले हैं। इस राज्य में १६ लाख से अधिक मनुष्य बसते हैं, उनके रक्षण और कल्याण का बड़ा भार आप लोग उठा रहे हैं। उनका सुधार-बिगाड़ भी आप तीन महाशयों (महाराजा यशवन्त सिंह, राजकुमार प्रताप सिंह, राव राजा तेज सिंह) पर है। तथापि आप लोग अपने शरीर की रोग से रक्षा करने और आयु बढ़ाने के काम पर बहुत अल्प ध्यान देते हैं। यह बात कितनी बड़ी शोचनीय हैं।

मैं चाहता हूँ कि आप लोग अपनी दिनचर्या मुझ से सुधार लें, जिससे मारवाड़ तो क्या अपने आर्यावर्त देशभर का कल्याण करने में आप लोग प्रसिद्ध हो जाएँ। आप-जैसे योग्य पुरुष जगत् में बहुत थोड़े जन्मते हैं और जन्मकर भी बहुत स्वल्प आयु भोगते हैं। इसके हुए बिना देश का सुधार कभी नहीं होता। आप-जैसे पुरुष जितना अधिक जिएँ उतनी ही अधिक देशोन्नति होती है। इस पर आप लोगों को ध्यान अवश्य देना चाहिए। आगे जैसी आप लोगों को इच्छा हो।

संवत् १९४० ह० दयानन्द सरस्वती

उस वेश्या की राज-दरबार से पूछ उठ गयी। इससे उसको बड़ी गहरी ठेस पहुँची। फिर क्या था, उसने स्वामी जी के विरुद्ध षड्यन्त्र रचना प्रारम्भ किया। यह षड्यन्त्र बड़ा गहरा था। इसमें कुछ-एक उच्च राजकर्मचारी भी सम्मिलित थे। उधर स्वामी जी के खण्डन से मुँह की खाये हुए सम्प्रदायी लोग भी मिल गये थे। स्वामी जी के विश्वस्त पाचक को लालच देकर फोड़ा गया। स्वामी जी रात्रि को दूध पीया करते थे। आश्विन वदी चतुर्दशी संवत् १९४० को दूध में हलाहल विष घोल कर पिला दिया गया।

थोड़ी देर बाद ही उदर-शूल के साथ-साथ वमन आने प्रारम्भ हो गये। पीड़ा इतनी असह्य थी कि बड़े-बड़े डॉक्टर-वैद्य भी देखकर दाँतों तले अंगुलि दबाते थे कि इतना असह्य कष्ट! और इस प्रकार सर्वथा शान्तचित्त लेटे रहना!! ऐसे भयानक शूल में तो वीर-से-वीर पुरुष भी जीवित नहीं रह सकता, ये कैसे प्राण धारण कर रहे हैं?

स्वामी जी को कालकूट विष के प्रयोग का भान हो गया। परन्तु, दया के धनी दयानन्द ने जोधपुराधीश या अन्य किसी भक्त को इसका भेद नहीं दिया। उन्होंने अपने पाचक को बुलाया और प्रेमपूर्वक समझा कर पूछा तो उसने समस्त वार्ता आद्योपान्त सुना दी। दया में आनन्द देखने वाले दयानन्द ने उस पाचक को ताड़न-तर्जन करना तो क्या, 'तू' तक नहीं कहा और बोले-

"जगन्नाथ! मेरे इस समय मरने से मेरा कार्य सर्वथा अधूरा रह गया। आप नहीं जानते कि इससे लोकहित की कितनी भारी हानि हुई है। अच्छा, विधाता के विधान में ऐसा ही होना था, इसमें आपका भी क्या दोष है। जगन्नाथ! लो, ये कुछ रुपये हैं, मैं आपको देता हूँ, आपके काम आएँगे। परन्तु, जैसे भी हो राठौर-राज्य की सीमा से पार हो जाओ। नेपाल राज्य में जा छिपने से ही आपके प्राणों का परित्राण हो सकता है। यदि यहाँ के नरेश को घुणाक्षर न्याय से भी इस बात का पता लग गया, तो वे आपका बिन्दु-विसर्ग तक विनष्ट करके ही विश्राम लेंगे। उनके प्रकोप के उत्ताप से आपका परित्राण कोई भी न कर सकेगा। जगन्नाथ! अब देर मत करो, जाओ, चुपचाप भाग जाओ। देखना, किसी को स्थालीपुलाक न्याय से भी आपका कर्म ज्ञात न हो जाए। मेरी ओर से सर्वथा निश्चिन्त रहना। इस हृदय-सागर से आपका भेद किसी प्रकार कभी भी प्रकाशित न होगा।"

इस प्रकार अहिंसा की साक्षात् मूर्ति स्वामी दयानन्द ने अपने प्राणघातक को न केवल क्षमा प्रदान की, अपितु अपने पास से द्रव्य देकर और तुरन्त भागकर नेपाल में जा छिपने का उपाय बताकर उसके प्राणों की रक्षा की।

यह स्वामी जी के अहिंसा के प्रयोगों में अन्तिम प्रयोग था, और इस प्रकार सत्य-अहिंसा के प्रयोग में ही अपनी जीवनाहुति समर्पित की। आश्विन वदी चतुर्दशी को हलाहल विष दिया गया था। ठीक एक मास एक दिन तक वीर आत्मा ने उस विष के साथ अनुपम घोर युद्ध किया और अन्तिम समय तक सर्वथा प्रसन्नमुख रहे। हँसते-हँसते ओ३म् का जाप, गायत्री मन्त्र का उच्चारण और 'प्रभु! तेरी इच्छा पूर्ण हो' कहते हुए कार्तिक अमावस्या, मंगलवार, दीवाली के दिन सायं ६ बजे सूर्यास्त के साथ-साथ भगवान् दयानन्द भास्कर भी तिरोहित हो गये और अपने पीछे दीपमाला का प्रकाश छोड़ गये। यह प्रकाश इस बात का प्रकाशक था कि देखो, आँखों वाले देखो, मनुष्य कहलाने वाले देखो, अहिंसा में प्रकाश-ही-प्रकाश है, अन्धकार का लव-लेश भी नहीं।

॥ ओ३म् ॥

अन्धन्तमः प्रविशन्ति ये ऽसम्भूतिमुपासते।
ततो भूय इ वते तमो य उ सम्भूत्यां रताः ।। य.40/3

जो ईश्वर के स्थान पर कारण रूप और कार्यरूप प्रकृति की पूजा करते हैं वह घोर अंधकार में गिरते हैं।

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली पर्व के पावन अवसर पर

हार्दिक शुभकामनाएं

दोआबा आर्य सीनियर सैकेंडरी स्कूल, नवांशहर

(स्थापित–1911)

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) गुरुदत्त भवन,
किशनपुरा चौक, जालन्धर द्वारा संचालित
अपने गौरवमय इतिहास को पुनर्जीवित
करने के लिये दृढ़ संकल्पिक
निरन्तर प्रगति की
ओर अग्रसर

विशेष आकर्षण

सुन्दर, विशाल भवन, भव्य पुस्तकालय, अत्याधुनिक कम्प्यूटर शिक्षा, शानदार परीक्षा परिणाम, अनुभवी तथा योग्य अध्यापक, नैतिक, सांस्कृतिक व धार्मिक शिक्षा, विशाल क्रीड़ा क्षेत्र, खेलों की आधुनिक प्रयोगशालाएं, समस्त भव्य सुविधाओं से परिपूर्ण

अपने बच्चों के उज्ज्वल भविष्य के लिये तुरन्त सम्पर्क करें।

जिया लाल शर्मा	ललित मोहन पाठक	सुशील पुरी	राजेन्द्र सिंह गिल
प्रधान	उप प्रधान	मैनेजर	कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

उत्क्राम महते सौभगाय।

य. 11/21

हे मनुष्य ! महान ऐश्वर्य की प्राप्ति के लिये आगे बढ़।

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली के पावन अवसर पर

हार्दिक शुभकामनाएं

बी.एल.एम.गर्ल्ज कालेज, राहों रोड, नवांशहर

WebSite: www.blmgirlscollege.com, email:blmcollege@yahoo.com
Phone No. 01823-220026, Fax: 01823-221474

निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर

प्रमुख विशेषताएं

1. अनुभवी एवं उच्च शिक्षा प्राप्त स्टाफ।
2. शत प्रतिशत परीक्षा परिणाम।
3. गरीब वर्ग की छात्राओं के लिये विशेष सुविधा।
4. एम.ए. (राजनीति विज्ञान, हिन्दी), पी.जी.डी.सी.ए., बी.ए., बी.कॉम, बी.एस.सी., ड्रैस डिजाइनिंग डिप्लोमा (U.G/P.G), कॉस्मोटॉलोजी डिप्लोमा (U.G/P.G) आदि कोर्स की व्यवस्था।
5. खेलों की उचित व्यवस्था (गत वर्षों से हैंडबाल, बैडमिंटन, टेबल टेनिस में विश्वविद्यालय स्तर पर प्रथम एवं द्वितीय स्थान)

❖❖❖❖❖❖❖

अपनी लड़कियों के उज्जवल भविष्य के लिये उन्हें नैतिक शिक्षा व उच्च शिक्षा को प्राप्त कराने के लिये सम्पर्क करें।

देशबन्धु भल्ला	विनोद भारद्वाज	तरणप्रीत कौर
प्रधान	सचिव	कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

संसमिद् युवसे वृषन्नग्ने विश्वायर्न्य आ।
इडस्पदे समिध्यसे न नो वसून्याभर॥ १ ।।

हे सुखो के वर्षक, सबके स्वामी, प्रकाश स्वरूप परमात्मन्! आप संसार के सब पदार्थों की उचित व्यवस्था के अनुसार परस्पर मिलाते हो, और फिर उनका वियोग भी आप ही करते हो, आप अपनी शक्तियों से इस धरती पर चमक रहे हो, हे ऐसे महान् सामर्थ्य वाले भगवान ! आप हमें सब प्रकार के ऐश्वर्य दीजिए।

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली के पावन अवसर पर

❖❖❖

हार्दिक शुभकामनाएं

आर.के. आर्य कालेज नवांशहर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की देख–रेख में निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर

दीपावली के शुभ अवसर पर, प्रबन्धकर्तृ सभा के सदस्य, प्राध्यापकगण, प्रिंसीपल और विद्यार्थी सभी आर्य बन्धुओं व बहिनों को हार्दिक बधाई भेंट करते हैं।।

❖❖❖

नवांशहर के क्षेत्र में उच्च शिक्षा का सबसे बड़ा केन्द्र। खेलों का समुचित प्रबन्ध व खुले मैदान, धार्मिक, नैतिक शिक्षा की ओर विशेष ध्यान, चरित्र निर्माण पर विशेष बल।

❖❖❖

अपने बच्चों के सर्वतोमुखी विकास के लिये, उनके चरित्र निर्माण के लिये, धार्मिक व नैतिक शिक्षा के लिये और उज्जवल भविष्य के लिये उन्हें ***आर.के. आर्य कालेज नवांशहर*** में प्रवेश करवायें।

विनोद भारद्वाज	सोहन सिंह	एस.के. बरूटा	संजीव डाबर
प्रधान	उपप्रधान	सैक्रेटरी	कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे सं जानाना उपासते ॥

(सब प्रकार के ऐश्वर्य के अभिलाषी) हे मनुष्यो, तुम परस्पर मिल कर चलो, मिल कर बातचीत करो, ज्ञानी बन कर तुम अपने मनो को भी एक बनाओ, जैसे कि तुम से पहिले विद्वान देव पुरुष सम्यक् ज्ञान वान् और एक मति वाले होकर अपना भाग प्राप्त करते रहे हैं।

☆☆☆

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली पर्व के पावन अवसर पर

☆☆☆

हार्दिक शुभकामनाएं

☆☆☆

डब्ल्यू.एल. आर्य गर्ल्ज सी.सै.स्कूल नवांशहर

☆☆☆

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के संरक्षण में निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर

☆☆☆

1. अनुभवी तथा उच्च शिक्षा प्राप्त स्टाफ।
2. नैतिक तथा धार्मिक शिक्षा पर विशेष बल।
3. अच्छे परीक्षा परिणाम, सुन्दर भवन, हवादार कमरे।
4. आधुनिक विशेषताओं से युक्त पाठ्यक्रम में देश भक्ति व सांस्कृतिक गतिविधियों का समावेश।

अपनी कन्याओं के उज्वल भविष्य और आदर्श शिक्षा के लिये सम्पर्क करें।

ललित मोहन पाठक	विनोद भारद्वाज	जिया लाल शर्मा	आरती कालिया
प्रधान	उपप्रधान	मैनेजर	कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ओ३म् ॥

न वा उदेवाः क्षुधमिद् वधं ददुः, उताशितमुपगच्छन्ति मृत्यवः।

उतो रयिः पृणतो नोपदस्यति, उतापृणन् मर्डितारं न विदन्ते॥ (ऋ. 10/117/1/11)

देवों ने न केवल भूख दी भूख के रूप में मौत दी है, अपितु खाते पीते अमीर को भी नाना प्रकार से मौत आती है और देने वाले की धन-सम्पत्ति क्षीण कभी नहीं होती अपितु जो दान न देने वाला है, वह कभी भी किसी सुख को प्राप्त नहीं करता अपितु दान देने वाला सुख को प्राप्त होता है।

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली पर्व के पावन अवसर पर

☆☆☆

हार्दिक शुभकामनाएं

☆☆☆

डा. आसानन्द आर्य माडल सी.सै.स्कूल नवांशहर

विशेषताएं

☆☆☆

1. शिशुशाला से +2 तक नियमित कक्षाएं और सुयोग्य एवं प्रशिक्षित स्टाफ।
2. धार्मिक शिक्षा।
3. कम्प्यूटर शिक्षा।
4. हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम से पाठ्यक्रम का पठन-पाठन।
5. विशाल क्रीडा क्षेत्र।
6. सुन्दर भवन।
7. हरे-भरे वृक्ष।
8. उचित जल एवं विद्युत व्यवस्था।
9. हवादार कमरे आदि विशेषताओं से सम्पन्न है।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की छत्रछाया में उन्नति के पथ पर अग्रसर

अपने बच्चों के उज्वल भविष्य के लिये सम्पर्क करें।

वीरेन्द्र सरीन	ललित कुमार शर्मा	अचला भल्ला	अमित सभ्रवाल
प्रधान	प्रबन्धक	डायरैक्टर	कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

तमीडत प्रथमं यज्ञसाधं विश आरीराहुतमृंजसानम्

ऊर्जः पुत्रं भरतं सुप्रदातुं देवा अग्निं धारयन् द्रविणोदाम ॥ (ऋ. 1/7/3/3)

जो परमात्मा सब जगत् का आदिकारण, वेदविहित कर्मों से प्राप्त होने योग्य, सबका अधिष्ठाता तथा पूजनीय है और जिसको विद्वान लोग प्रकाश तथा नम्रता का देने वाला, जगत् का दुःख हर्ता, धारण पोषणकर्त्ता, ज्ञान तथा क्रिया शक्ति आदि उत्तम पदार्थों का देने वाला मानते हैं, उसी की सब को स्तुति करनी चाहिये, अन्य की नहीं। (आर्याभिविनय)

-महर्षि दयानन्द

◆◆◆

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली पर्व के पावन अवसर पर

◆◆◆

हार्दिक शुभकामनाएं

◆◆◆

डी.ए.एन कालेज आफ एजुकेशन फार विमन नवांशहर

❑ निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर ❑

विशिष्टताएं

सुयोग्य प्राचार्य व प्राध्यापकगण, बृहद पुस्तकालय, सांस्कृतिक गतिविधियां, नैतिक व धार्मिक शिक्षा पर बल, कम्प्यूटर और होस्टल सुविधाएं उपलब्ध व समस्त आधुनिक सुविधाओं से परिपूर्ण। नये सत्र के लिये अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये सम्पर्क करें।

◆◆◆

डा. सी.एम.भंडारी	डा. मीनाक्षी शर्मा	गुरविन्द्र कौर
प्रधान	सचिव	कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

स्यामेदिन्द्रस्य शर्मणि।

(ऋग्वेद. 1/4/6)

हम सदा परमेश्वर की शर्मणि–शरण में रहें।

★★★

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली के शुभ अवसर पर

★★★

हार्दिक शुभकामनाएं

★★★

आर्य कालेज लुधियाना

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की देखरेख में निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर

विशेषताएं

1. शहर के मध्य में स्थित।
2. अनुभवी व उच्च शिक्षा प्राप्त स्टाफ।
3. हवादार कमरे, खेलने के लिये खुला मैदान।
4. लड़के, लड़कियों के लिये पढ़ाई की अलग अलग व्यवस्था।
5. सभी प्रकार की आधुनिक सुविधाओं से युक्त।
6. चरित्र निर्माण व नैतिक शिक्षा पर विशेष बल।
7. सभी तरह की विशेषताओं से युक्त पुस्तकालय व प्रयोगशाला।

अपने बच्चों का उज्जवल भविष्य बनाने के लिये इस कालेज में प्रवेश करवायें।

सम्पर्क करें

सुदर्शन शर्मा
प्रधान

सतीशा शर्मा
सैक्रेटरी

सूक्ष्म आहलूवालिया
कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति।
दूरगमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं, तन्मे मनः शिव संकल्पमस्तु ॥20॥

भावार्थ- हे प्रभो! मेरा दिव्य शक्ति वाला जो मन जागते हुये का व सोते हुये का दूर दूर तक जाता है अर्थात् चिन्तन करता है, जो सभी ज्ञान-साधक इन्द्रियों का प्रधान ज्योति प्रकाशक है, वह मेरा मन आपकी कृपा से शुभ विचारों वाला होवे।

★★★

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली के शुभ अवसर पर

★★★

हार्दिक शुभकामनाएं

★★★

आर्य सीनियर सैकेण्डरी स्कूल लुधियाना

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की देखरेख में निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर

विशेषताएं

1. समृद्ध स्वामी दयानन्द पुस्तकालय।
2. अनुभवी, लग्नशील, मेहनती, सुयोग्य, ट्रेंड स्टाफ
3. स्कूल में पानी की उत्तम व्यवस्था के लिये प्रबन्ध।
4. अच्छे परीक्षा परिणाम तथा गत वर्ष की अपेक्षा विद्यालय में छात्रों की संख्या में वृद्धि।
5. प्रति वर्ष विद्यार्थियों की भलाई व कल्याण के लिये एजुकेशनल टूर ले जाने का निर्णय।
6. आर्थिक अनियमितताओं को दूर करने के लिये प्रयासरत
7. प्राइमरी विंग के बच्चों के लिये खेलने की विशेष सुविधा।
8. खेलों के क्षेत्र में प्रथम आने वाले विद्यार्थियों के प्रोत्साहन के विशेष प्रबन्ध।
9. विद्यार्थियों के चरित्र निर्माण तथा आर्य समाज के सिद्धान्तों के प्रचार व प्रसार के लिये स्कूल में धार्मिक शिक्षा का प्रबन्ध।

अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये सम्पर्क करें।

अरुण थापर
प्रधान

श्रीमती राजेश शर्मा
मैनेजर

राकेश अरोडा
कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

सख्ये ते इन्द्र याजिनो मा भेम शवसस्पते।

त्वामभि प्रणोनुमो जेतारमपराजितम।।

भावार्थ: प्रभु के भक्तों में ऐसा विलक्षण बल आता है कि वे किसी से भी डरते नहीं क्योंकि जिनका रक्षक स्वयं प्रभु होवे, उनको डराने वाला कौन हो सकता है? वहीं प्रभु सदा अपराजित और हमेशा विजयी है इसलिये उसी को नमन करने योग्य है।

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली पर्व के पावन अवसर पर

★★★

हार्दिक शुभकामनाएं

आर्य गर्ल्ज सी. सै.स्कूल, पुराना बाजार, दरेसी रोड लुधियाना

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के तत्वावधान में शहर की एक सौ दस वर्ष पुरानी संस्था

प्रमुख विशेषताएं

1. नर्सरी कक्षा से बारहवीं कक्षा तक गणित व विज्ञान विषयों के लिये **Smart Classes** की विशेष व्यवस्था।
2. अंग्रेजी व हिन्दी माध्यम में पढ़ाने का उचित प्रबन्ध।
3. अनुभवी एवं उच्च शिक्षित स्टाफ
4. स्वच्छ जल हेतु फिल्टर, बिजली के लिये जनरेटर, अग्निशमन यंत्रों इत्यादि सभी आधुनिक सुविधाओं से सम्पन्न
5. बोर्ड परीक्षाओं का शत-प्रतिशत परिणाम।
6. गत वर्ष की अपेक्षा छात्राओं की संख्या में वृद्धि।
7. कम्प्यूटर प्रशिक्षण का विशेष प्रबन्ध।
8. भव्य भवन खुले व हवादार कमरे, समृद्ध पुस्तकालय व सुसज्जित साईंस लैब।
9. छात्राओं की ज्ञान वृद्धि के लिये शैक्षणिक भ्रमण पर ले जाने की व्यवस्था।
10. सांस्कृतिक व सह सहायक गतिविधियों का आयोजन
11. **Morning Assembly** में नैतिक मूल्यों व अच्छे संस्कारों को सुदृढ़ करने पर विशेष चर्चा।
12. प्रबन्धकृत सभा के सभी सदस्य संस्था को प्रगति के पथ पर ले जाने के लिये निरन्तर प्रयासरत।

विशेष नोट: जरूरतमंद व योग्य छात्राओं के लिये निशुल्क पुस्तकें, वर्दियां, स्वैटर व जूते।

अपनी कन्याओं के उज्जवल भविष्य व सर्वांगीण विकास के लिये सम्पर्क करें॥

दिनेश बजाज	**वजीर चंद**	**रणवीर शर्मा**	**किरण बजाज**
प्रधान	उपप्रधान	प्रबन्धक	कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

शं नो देवा विश्वदेवा भवन्तु, शं सरस्वती सह धीभिरस्तु।
शमभिशाचः शमु रातिषाचः शं नो दिव्याः पार्थिवा शं नो अप्याः॥

भावार्थ– हे प्रभो! आपकी कृपा से दिव्य गुण कर्म स्वभाव वाले साधारण जन, विविध प्रकार के देने वाले दाता जन एवं द्युलोक, पृथिवी लोक और अंतरिक्ष लोक से सम्बन्ध दैवी शक्तियां हमारे लिये कल्याणकारी हों।

★★★

दीपावली (ऋषि निर्वाण दिवस) के पावन पर्व पर

★★★

हार्दिक शुभकामनाएं

दयानन्द पब्लिक स्कूल

दीपक सिनेमा रोड, लुधियाना

(पंजाब शिक्षा बोर्ड से मान्यता प्राप्त)

प्री–नर्सरी से बारहवीं कक्षा तक इंग्लिश / हिन्दी मीडियम, पंजाबी पढ़ाने का उत्तम प्रबन्ध

विशेषताएं

1. अनुभवी एवं उच्च शिक्षित स्टाफ।
2. आर्ट्स,क्राफ्ट एवं कम्प्यूटर का समुचित प्रबन्ध।
3. चरित्र निर्माण व धार्मिक शिक्षा का प्रबन्ध।
4. शीतल पेय जल के लिये वाटर कूलर का प्रबन्ध।
5. विद्युत जेनरेटर तथा कैंटीन की उत्तम सुविधा।
6. खेलने के लिये खुला मैदान।
7. शानदार बोर्ड परीक्षा परिणाम।
8. उत्तम पुस्तकालय की सुविधा

प्रवेश के लिये सम्पर्क करें।

अरुण सूद	श्रीमती राजेश शर्मा	अमित सूद	विश्वनाथ जोशी
प्रधान	वरिष्ठ उप प्रधान	प्रबन्धक	प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

महो अर्णः सरस्वती प्रचेतयति केतुना ऋ. 1/3/12

ज्ञानमयी वेद वाणी अपने ज्ञान से ही बड़े भारी ज्ञान सागर का उत्तम रीति से ज्ञान कराती है।

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली पर्व

के शुभ अवसर पर

हार्दिक शुभकामनाएं

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के संरक्षण में निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर

पंजाबी विश्वविद्यालय पटियाला से सम्बन्धित क्षेत्र की एक मात्र अग्रणी नारी शिक्षण संस्था

श्री लाल बहादुर शास्त्री आर्य महिला कालेज बरनाला

यू.जी.सी. एक्ट 1956 के सेक्शन **2 (F) & 12 (B)** से सम्बद्ध नैक
(NAAC) द्वारा ग्रेड **"B"** सी.जी.पी.ए. 2.61 से प्रत्यापित संस्था
में एल.बी.एस. कॉलजिएट सी.सै.स्कूल के अधीन बरनाला +1, +2 एवं महाविद्यालय
में स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर पर विभिन्न कक्षाओं, विषयों व कोर्सों के शिक्षण की सुचारू व्यवस्था।

स्नातक शिक्षण कक्षाएं व कोर्स

बी.ए. :- हिन्दी साहित्य, पंजाबी, पंजाबी साहित्य, अंग्रेजी, अंग्रेजी साहित्य, संस्कृत, अर्थशास्त्र, राजनीति शास्त्र, इतिहास, लोक प्रशासन, कम्प्यूटर साईंस, फाईन आर्ट्स, गणित, साइकॉलॉजी, संगीत (कंठ्य), होम साईंस, फिजीकल एजुकेशन, फैशन डिजाइनिंग

- बी.कॉम
- बी.एस.सी. (मैडीकल/ नॉन मैडीकल)
- बी.सी.ए.
- बी.बी.ए.

यू.जी.सी. प्रदत्त बी.वॉक कोर्सः

- साफ्टवेयर डेवलेपमेंट
- फैशन डिजाइनिंग

स्नातकोत्तर शिक्षण कक्षाएं व कोर्सः

- एम.ए.पंजाबी
- एम.ए. इतिहास
- एम.एस.सी. (आई.टी.)
- एम.एस.सी. (एफ.टी.)
- पी.जी.डी.सी.ए.

विशेषताएंः-

- वातानुकूलित विशाल पुस्तकालय
- बहुद्देश्यीय विशाल सभागार एवं इन्डोर स्पोर्ट्स हॉल।
- सुविधा सम्पन्न छात्रावास।
- वाई फाई प्रांगण।
- सी.सी.टी.वी. कैमरों से लैस प्रांग्रण।
- उच्च तकनीकी युक्त वातानुकूलित कम्प्यूटर प्रयोगशाला।
- आधुनिक साधन सम्पन्न विज्ञान प्रयोगशालाएं
  - भौतिक विज्ञान
  - रसायन विज्ञान
  - जीव विज्ञान
- स्वच्छ व स्तरीय कैंटीन व मैस
- जैनरेटरों व वाटर कूलरों (आर.ओ.) की व्यवस्था
- विभागीय कक्ष
- गांवों से छात्राओं को लाने ले जाने हेतु बसों का उचित प्रबन्ध।
- एन.सी.सी.,एन.एस.एस.,यूथक्लब, रैड रिब्बन का सुचारू प्रबन्ध।

शैक्षिक एवं शिक्षेत्तर उपलब्धियों के लिये पंजाबी विश्वविद्यालय में अपनी विशेष पहचान रखने वाली संस्था

भावी पीढ़ी के उज्ज्वल भविष्य के लिये सम्पर्क करें।

डा.सूर्यकांत शोरी	**भारत भूषण मैनन एडवोकेट**	**केवल जिन्दल**	**डा.नीलम शर्मा**
प्रधान	वरिष्ठ उपप्रधान	सैक्रेटरी	प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है, वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

(महर्षि दयानन्द)

☆☆☆

ऋषि निर्वाण दिवस एवं दीपावली के

पावन पर्व पर

गांधी आर्य सी.सै.स्कूल बरनाला

☆☆☆

की ओर से सभी को हार्दिक शुभ कामनाएं।

स्कूल की मुख्य विशेषताएं :-

- सभी कक्षाओं के शत-प्रतिशत परिणाम।
- उच्च शिक्षित अध्यापक वर्ग।
- वैदिक धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा पर विशेष बल।
- स्कूल की छात्राओं को निशुल्क सिलाई सिखाई जाती है तथा प्रत्येक लड़की को एक एक सिलाई मशीन दी जाती है।
- स्कूल की छात्राओं को निशुल्क कुकिंग कोर्स भी करवाया जाता है।
- सांस्कृतिक कार्यक्रम में गिद्दा-भंगडा के अलावा लोक गीत सिखाए जाते हैं।
- अनिवार्य कम्प्यूटर शिक्षा।
- बिजली, पानी तथा साइलैंट जनरेटर का प्रबन्ध।
- पीने के पानी के लिये आर.ओ.सिस्टम तथा प्रत्येक ब्रांच में वाटर कूलर।
- खूबसूरत लाइब्रेरी का विशेष प्रबन्धक

भारत भूषण मैनन एडवोकेट
प्रधान

सूर्यकान्त शोरी
वरिष्ठ उप प्रधान

केवल कृष्ण जिन्दल
मैनेजर

भारत मोदी
सचिव

संजीव शौरी
उप प्रधान

राज महेन्द्र शर्मा
प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

तमसो मा ज्योतिर्गमय।

भावार्थ: हे प्रभु हमें अंधकार से हटा कर प्रकाश की ओर ले चलो।

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली के शुभ अवसर पर

हार्दिक शुभकामनाएं

☆☆☆

दयानन्द केन्द्रीय विद्या मंदिर, बरनाला

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब व आर्य विद्या परिषद के निर्देशन में चलता हुआ निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर

❏ विशेषताएं

1. शहर के मध्य में स्थित विशाल भवन।
2. उच्च शिक्षित, अनुभवी तथा निष्ठावान अध्यापक।
3. सांस्कृतिक गतिविधियां तथा शैक्षणिक भ्रमण का आयोजन
4. बोर्ड की दसवीं की परीक्षा (2012) में प्रिया ने पंजाब में सोहलवां तथा जिला बरनाला में पहला स्थान प्राप्त करके नाम रोशन किया।
5. चरित्र निर्माण व धार्मिक शिक्षा का प्रबन्ध।
6. फिल्टर पानी का प्रबन्ध और साइलेंट जेनरेटर।
7. बच्चों के लिये प्राथमिक सहायता उपलब्ध।
8. बच्चों के लिये हिन्दी तथा अंग्रेजी दोनों ही माध्यम उपलब्ध।

☆☆☆

अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये सम्पर्क करें

☆☆☆

संजीव शोरी — प्रधान

भारत मोदी — मैनेजर

मोहित शर्मा — सैक्रेटरी

वन्दना गोयल — कार्यकारी प्रिंसीपल

अनीता मित्तल — डायरैक्टर

॥ ओ३म् ॥

तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं, जीवेम शरदः शतं, श्रृणुयाम शरदः शतं, प्रब्रवाम शरदः शतं, अदीनाः शरदः शतं, भूयश्च शरदः शतात् ॥9॥

भावार्थः हे प्रभो आप सबके मार्ग दर्शक हैं, विद्वानों के परम हितकारक हैं, आप तेजोमयी शक्ति हैं- हम सौ वर्ष तक आपको ज्ञान चक्षुओं से देखते रहें, सौ वर्ष तक आपके उपदेश को सुनते रहें, और दूसरों को सुनाते रहें, सौ वर्ष तक तथा इससे भी अधिक समय तक आपकी कृपा से हम स्वस्थ जीवन बिताएं और जन्म जन्मांतर तक आपका यश देखते सुनते रहें।

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली पर्व के शुभावसर पर

☆☆☆

हार्दिक शुभकामनाएं

☆☆☆

आर्य गर्ल्ज सी.सै.स्कूल बठिंडा

बालिकाओं का उज्जवल भविष्य बनाने वाली एक श्रेष्ठ संस्था

इसके मुख्य आकर्षण हैं:-

1. नगर के मध्य में स्थित
2. खुले हवादार कमरे।
3. कक्षा प्रथम (पहली) से +2 (आर्टस व कॉमर्स) तक शिक्षा में प्रति वर्ष शत-प्रतिशत परीक्षा परिणाम।
4. बच्चों को नैतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक व राष्ट्रीय शिक्षा देकर दृढ़ चरित्र-निर्माण व देशभक्त बनाने का प्रयास।
5. जरूरतमंद बच्चों के लिये पुस्तक व कोष व अन्य तरीकों से आर्थिक सहायता।
6. अनुशासन पर विशेष ध्यान।
7. विभिन्न उपायों से बच्चों के सर्वांगीण विकास पर सतत जोर देना।

इस प्रकार अनुभवी प्रबन्धक समिति, सुयोग्य प्रधानाचार्य व प्रशिक्षित स्टाफ के समुचित नेतृत्व व मार्ग दर्शन में दिन-प्रतिदिन उन्नति के सोपानों को पार करता हुआ यह विद्यालय आपके बच्चों का स्वर्णिम भविष्य निर्मित करने के लिये नगरवासियों की सेवा में प्रस्तुत।

"अपनी कन्याओं को प्रवेश दिलाएं, उन्हें योग्य, चरित्रवान व देशभक्त बनाएं।"

अनिल कुमार	**सुरेन्द्र गर्ग**	**सुषमा कुमारी**
प्रधान	मैनेजर/ कोरस्पोडेंट	प्रिंसीपल

॥ओ३म्॥

अस्मे धेहि जातवेदो महिश्रवः

ऋग्वेद: 1/97/4

हे ज्ञान स्वरूप प्रभो ! आप हम में उत्तम यश, धन और ज्ञान धारण करें।

ऋषि निर्वाण दिवस व दीपावली के पर्व पर सभी आर्य बन्धुओं और बहनों को स्कूल की प्रबन्धक समिति, प्रधानाचार्या एवं समस्त अध्यापकगण की ओर से

☆☆☆

हार्दिक शुभकामनाएं

☆☆☆

आर्य संस्कृति की गरिमा को समर्पित संस्था

आर्य गर्ल्ज सीनियर.सैकेंडरी स्कूल एवं वैदिक कन्या पाठशाला औहरी चौक, बटाला

संस्था के विशेष आकर्षण

1. छात्राओं के सर्वांगीण विकास का जाना-माना शिक्षा संस्थान।
2. धार्मिक तथा नैतिक शिक्षा का प्रबन्ध।
3. योग्य उच्चतम शिक्षा प्राप्त निष्ठावान तथा अनुभवी अध्यापक।
4. आधुनिक कम्प्यूटर लैब।
5. वाटर कूलर तथा ध्वनि रहित जनरेटर का उचित प्रबन्ध।
6. समृद्ध पुस्तकालय
7. साफ सुथरे उच्चस्तरीय कमरे।
8. आठवीं कक्षा तक के बच्चों को दोपहर के मुफ्त भोजन की सुविधा एवं मुफ्त पुस्तकें।
9. गर्ल्ज गाईड तथा बैंड व्यवस्था।
10. गरीब एवं योग्य छात्राओं को आर्थिक सहायता।
11. बोर्ड की कक्षाओं का शत प्रतिशत परिणाम।
12. कल्चर संगीत कार्यक्रम के लिये योग्य तथा अनुभवी शिक्षा का प्रबन्ध।

निरन्तर प्रगति की ओर नारी उत्थान में संलग्न संस्था

प्रविन्द्र चौधरी	**अशोक कुमार अग्रवाल**	**विजय अग्रवाल**	**नीरू सैली**
प्रधान	उप प्रधान	मैनेजर	प्रिंसीपल

|| ओ३म ||

सत्पुरुषः सत्यप्रिय, धर्मात्मा, विद्वान, सब के हितकारी ओर महाश्सय होते हैं, सत्पुरुष कहलाते हैं।
स्वामी दयानन्द सरस्वती

☆☆☆

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली के पावन अवसर पर

☆☆☆

हार्दिक शुभकामनाएं

☆☆☆

आर्य माडल सी.सै. स्कूल, बठिंडा

Ph.No. 0164-2238328

विशेषताएं:

1.नगर के मध्य स्थित।

2.योग्य, सुशिक्षित तथा अनुभवी स्टाफ।

3.विद्यार्थियों के सर्वतोमुखी विकास पर विशेष ध्यान।

4.शानदार परीक्षा परिणाम

5.नगर में निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर

6.प्रदूषण व ध्वनि रहित जेनरेटर, R.O पानी आदि मूलभूत आवश्यकताओं की समुचित व्यवस्था।

नये सत्र में अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये सम्पर्क करें।

☆☆☆

अश्विनी कुमार मोंगा
प्रधान

श्रीमती ऊषा गोयल
संरक्षक

गौरी शंकर
उप प्रधान

सुरेन्द्र गर्ग
सचिव

विपिन कुमार गर्ग
प्रधानाचार्य

॥ ओ३म् ॥

सत्पुरुष:– सत्यप्रिय, धर्मात्मा, विद्वान, सबके हितकारी और महाशय होते हैं, वे 'सत्पुरुष' कहाते हैं।

(महर्षि दयानन्द)

❖❖❖

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली के

❖❖❖

पावन अवसर पर

❖❖❖

हार्दिक शुभकामनाएं

❖❖❖

श्रीराम आर्य सी.सै.स्कूल पटियाला

मुख्य विशेषताएं

1.उच्च शिक्षित अध्यापक वर्ग

2.खुले तथा हवादार कमरे।

3. वैदिक धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा पर बल।

4. शानदार परीक्षा परिणाम

5. उच्च शिक्षा के लिये सम्पर्क करें।

वीरेन्द्र कौशिक
प्रधान

अश्विनी मेहता
मैनेजर

प्रदीप कुमार
कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

ओ३म् अस्माकमिन्द्रः स्मृतेषु ध्वजेष्वस्माकं या इषवस्तु जयन्तु।
अस्माकं वीरा उत्तरे भवन्त्वस्माकं उ देवा अवता हवेषु॥

(साम. अध्याय 22, खंड 4, मंत्र 2)

भावार्थः वीरों के बल से विजयी हम, फहरावें जय कीर्ति ललाम। देव हमारे धरती तल पर, प्राण पसारे जय वरदान। अमर शहीदों के पथ पर चल कर शान्ति का करें, प्रसार, शक्ति हमें दो भगवन ऐसी, वेद धर्म का हो विस्तार।

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली के अवसर पर

हार्दिक शुभकामनाएं

आर्य सी.सै.स्कूल बस्ती गुजां, जालन्धर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब व आर्य विद्या परिषद के निर्देशन में चलता हुआ निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर

विशेषताएं

1. विशाल भवन।
2. खेल के मैदान।
3. हवादार कमरे।
4. शिक्षा को समर्पित अध्यापक वृन्द।
5. अहर्निश छात्र वर्ग के विकास के लिये कार्यरत।

अपने लड़के व लड़कियों को धार्मिक शिक्षा दिलवाने के लिये
शिक्षा शास्त्री बनाने के लिये,सर्वांगीण विकास के लिये
तथा उनका उज्जवल भविष्य बनाने के लिये
आर्य सीनियर सैकेंडरी स्कूल, बस्ती गुजां
जालन्धर में प्रथम श्रेणी से 10+2
तक की पढ़ाई के लिये
प्रवेश करवाएं।

राज कुमार
प्रधान

सुदेश कुमार
मैनेजर

श्रीमती सारिका
कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ओ३म् ॥

परिमाग्ने दुश्चरिताद्वाधस्व मा सुचरिते भज।

यजु. 4/28

हे प्रकाशमय प्रभो ! मुझे दुराचार से रोको और सच्चरित्र में प्रेरो

***

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली के शुभ अवसर पर

***

हार्दिक शुभकामनाएं

***

आर्य कन्या सी.सै.स्कूल, बस्ती नौ, जालन्धर

***

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब व आर्य विद्या परिषद के निर्देशन में चलता हुआ निरन्तर उन्नति कीओर अग्रसर

विशेषताएं

विशाल भवन, हवादार कमरे, उच्च शिक्षित व शिक्षा को समर्पित स्टाफ, कन्याओं के विकास के लिये निरन्तर कार्यरत, नैतिक शिक्षा पर विशेष बल।

***

अपनी कन्याओं के उज्जवल भविष्य और आदर्श व उच्च शिक्षा के लिये सम्पर्क करें।

ज्योति शर्मा
प्रधान

सुधीर शर्मा
प्रबन्धक

मीनू सलूजा
कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

इमा ब्रह्मा सधमादे जुषस्व

ऋग्वेद 20/11/3

इन वेद वचनों को, हे विद्वन ! हर्षस्थान व सभा सदन में सेवो अर्थात बोलो।

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली पर्व के पावन अवसर पर

☆☆☆

हार्दिक शुभकामनाएं

☆☆☆

आर्य गर्ल्ज सी.सै.स्कूल पटियाला

❐ *आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की देख-रेख में निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर* ❐

संस्था के विशेष आकर्षण

1. पंजाब सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त।
2. नगर के मध्य में स्थित
3. 10+2 तक की शिक्षा (आर्ट्स व कामर्स ग्रुप) तदर्थ नये भवन के ब्लाक का विशेष प्रबन्ध।
4. पुस्तकालय, प्रयोगशाला एवं हवादार कमरों वाली इमारत।
5. बिजली,पानी आदि की मूलभूत आवश्यकताओं की समुचित व्यवस्था।
6. राष्ट्र प्रेम, धर्म व संस्कृति का आदर, भाइचारे की भावनाओं का विकास कर भारतीयता पर आधारित चरित्र निर्माण पर विशेष बल
7. आर्य समाज के दस नियम, गायत्री मंत्र, नैतिक व धार्मिक शिक्षा की परीक्षाओं की विशेष व्यवस्था।
8. कम्प्यूटर, संगीत व गृह-विज्ञान की शिक्षा का विशेष प्रबन्ध।
9. स्कूल के अति उत्तम शत-प्रतिशत परीक्षा परिणाम।
10. रैडक्रास, होम नर्सिंग, गर्ल गाईड की शिक्षा देकर विद्यार्थियों में सहायता का भाव उत्पन्न करना।
11. प्रधानाचार्य अनुभवी प्रतिभावान, सुशिक्षित व नगर में प्रतिष्ठित सुचारू प्रबन्ध कमेटी के योग्य निर्देशन में

अपने उच्च शिक्षित पूर्णतया योग्य अनुभवी स्टाफ के साथ मिल कर सफलतापूर्वक पाठशाला का संचालन कर रही है।

शिक्षा जगत में महकता हुआ चमन

सोम प्रकाश	शैलेन्द्र मेहता	संतोष गोयल
प्रधान	प्रबन्धक	प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

पंडितः- जो सत् असत् को विवेक से जानने वाला धर्मात्मा, सत्यप्रिय, विद्वान और सब का हितकारी है उसको पंडित कहते हैं।

-महर्षि दयानन्द

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली पर्व के पावन अवसर पर

***

हार्दिक शुभकामनाएं

***

डी.एन.माडल सी.सै.स्कूल मोगा

❒ विशेषताएं ❒

1. प्रशिक्षित एवं अनुभवी स्टाफ।
2. सभी प्रकार की आधुनिक सुविधाओं से युक्त।
3. कम्प्यूटर कक्षाओं, पुस्तकालय एवं समृद्ध प्रयोगशालाओं का उत्तम प्रबन्ध।
4. गत वर्ष की उज्जवल उपलब्धियों, शैक्षणिक श्रेष्ठता का ज्वलंत प्रमाण।

उच्च स्तरीय शिक्षा, सांस्कृतिक गतिविधियों और राष्ट्रीय निर्माण में क्षेत्र की सर्वश्रेष्ठ संस्था।

सी.बी.एस.ई. दिल्ली द्वारा

मान्यता प्राप्त

निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर

सुदर्शन शर्मा	**डा. एस.एम.शर्मा**	**सोनिया कलसी**
प्रधान	सैक्रेटरी	कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव।
यद्भद्रं तन्न आसुव॥ (यजु. 30/3)

(सवित) हे संसार के उत्पन्न करने वाले, संसार पर शासन करने वाले, संसार को शुभ प्रेरणा देने वाले, (देव) दिव्यगुणयुक्त परमेश्वर! (विश्वानि) सब (दुरितानि) बुराईयां को, दुरवस्थाआं को (परा+सुव) दूर कीजिए। (यत्भद्रम्) जो भद्र [है] (तत् नः) वह हमें (आसुव) दीजिए।

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली पर्व के पावन अवसर पर

☆☆☆

हार्दिक शुभकामनाएं

डी.एम कालेज मोगा

❒ *आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की देख-रेख में निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर* ❒

संस्था के विशेष आकर्षण

1.प्रशिक्षित एवं अनुभवी व मेहनती स्टाफ।

2. पढ़ने के लिये नव सुविधाओं से युक्त कमरे।

3. गत वर्षों की उज्जवल उपलब्धियां शैक्षणिक श्रेष्ठता का ज्वलंत प्रमाण।

4. मोगा के क्षेत्र में प्रतिष्ठता प्राप्त कालेज।

5. विद्यार्थियों के सर्वतोमुखी विकास पर विशेष बल।

6. चरित्र निर्माण व नैतिक शिक्षा की ओर विशेष ध्यान।

7. हर प्रकार की आधुनिक सुविधाएं।

प्रवेश के लिये सम्पर्क करें

सुदर्शन शर्मा
प्रधान

डा. एस.एम.शर्मा
सैक्रेटरी

डा. जतिन्द्र शर्मा
कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

देव सवितः प्रसुव यज्ञं प्रसुव यज्ञपतिं भगाय। दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतं नः पुनातु वाचस्पति वाचं नः स्वदतु ॥ (यजु. 30/3)

हे परमात्मा! सबको सत्कर्म करने और सत्कर्मों का संरक्षण करने की बुद्धि दो। अपने उत्तम ज्ञान से पवित्र करने वाले ज्ञानी से हम सब ज्ञान को पवित्र करें। उत्तम वक्ता द्वारा हम सब वाणी को मधुर बनाएं, जिससे हम सबकी उन्नति हो

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली पर्व के पावन अवसर पर

☆☆☆

हार्दिक शुभकामनाएं

डी.एम कालेज आफ एजुकेशन मोगा

❐ *आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की देख-रेख में निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर* ❐

संस्था के विशेष आकर्षण

1.प्रशिक्षित एवं अनुभवी व मेहनती स्टाफ।

2. पढ़ने के लिये नव सुविधाओं से युक्त कमरे।

3. गत वर्षों की उज्जवल उपलब्धियां शैक्षणिक श्रेष्ठता का ज्वलंत प्रमाण।

4. मोगा के क्षेत्र में प्रतिष्ठता प्राप्त कालेज।

5. विद्यार्थियों के सर्वतोमुखी विकास पर विशेष बल।

6. चरित्र निर्माण व नैतिक शिक्षा की ओर विशेष ध्यान।

7. हर प्रकार की आधुनिक सुविधाएं।

_प्रवेश के लिये सम्पर्क करें_

सुदर्शन शर्मा	डा.एस.एम.शर्मा	डा. आशिमा भंडारी
प्रधान	सैक्रेटरी	कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म ॥

समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति।।४।।

भावार्थः तुम्हारे संकल्प और प्रयत्न मिल कर हों, तुम्हारे हृदय परस्पर मिले हुये हों। तुम्हारे अन्तःकरण मिले रहें। जिसमें परस्पर सहायता से तुम्हारी भरपूर उन्नति हो।

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस एवं दीप-उत्सव "दीपावली" के शुभ अवसर पर

हार्दिक शुभकामनाएं

आर्य माडल सी.सै. स्कूल–मोगा

अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य, चरित्र निर्माण और सर्वतोमुखी विकास के लिये सेवा का अवसर दें।

❒ विशेष आकर्षण ❒

1. सुसज्जित भवन, खुले हवादार कमरे।
2. अनुभवी एवं उच्च शिक्षित स्टाफ।
3. हाई पावर विद्युत जनरेटर, शुद्ध एवं शीतल पेयजल।
4. आधुनिक कम्प्यूटर प्रयोगशाला, स्मार्ट कक्षाएं व यंत्रों से लैस साईंस व गणित प्रयोगशाला।
5. सी.सी.टी.वी. कैमरों का विद्यालय में उचित प्रबन्ध।
6. उच्च स्तर की सफाई व बढ़िया अनुशासन।
7. नैतिक शिक्षा व धार्मिक शिक्षा पर बल।
8. +2 की कक्षाओं का आरम्भ शीघ्र।
9. खेलों का उचित प्रबन्ध।
10. आवश्यक पाठ्य सामग्री युक्त पुस्तकालय।
11. वैदिक शिक्षा व साप्ताहिक हवन यज्ञ।
12. विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु विशेष ध्यान

अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये सम्पर्क करें।

सत्यप्रकाश उप्पल	**नरेन्द्र सूद**	**अनिल गोयल**	**समीक्षा शर्मा**
प्रधान	मैनेजर	सैक्रेटरी	प्राचार्य

॥ ओ३म् ॥

देवत्तं ब्रह्म गायत।

ऋग्वेद 1/37/4

ईश्वर प्रदत्त वेद का सदा गान करो।

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली के पावन अवसर पर

हार्दिक शुभकामनाएं

डी.एम.कोलजेट सी.सै.स्कूल मोगा

विश्व गुरु स्वामी दयानन्द जी सरस्वती के पद्चिन्हों पर चल कर अपना मानव जीवन सफल बनायें तथा राष्ट्र को सही दिशा दें।

❒ विशेष आकर्षण ❒

1. योग्य, परिश्रमी और अनुभवी अध्यापक वर्ग।
2. प्रबन्धक समिति के शिक्षित और दूरदर्शी सदस्यों द्वारा पूर्ण सहयोग।
3. विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु विशेष ध्यान।
4. खेलों के साथ साथ सह पाठ्यक्रम क्रियाओं के प्रति विशेष ध्यान।
5. शिक्षण विकास की परीक्षा हेतु समयानुसार परीक्षाएं।

अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये उन्हें एम.डी.ए.एस. सी.सै.स्कूल मोगा में दाखिल करवाएं।

सम्पर्क करें

सुदर्शन शर्मा — *प्रधान*

डा.एस.एम.शर्मा — *सैक्रेटरी*

डा.जतिन्द्र शर्मा — *प्रिंसीपल*

॥ ओ३म ॥

समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति।।४।।

भावार्थ: तुम्हारे संकल्प और प्रयत्न मिल कर हों, तुम्हारे हृदय परस्पर मिले हुये हों। तुम्हारे अन्त:करण मिले रहें। जिसमें परस्पर सहायता से तुम्हारी भरपूर उन्नति हो।

❖❖❖

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस एवं दीप-उत्सव "दीपावली" के शुभ अवसर पर हार्दिक शुभकामनाएं

❖❖❖

आर्य गर्ल्ज सी.सै.स्कूल मोगा

❒ प्रमुख विशेषताएं ❒

1. आर्य समाज की विचारधारा एवं स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के संदेशों के प्रचार व प्रसार को समर्पित संस्था।
2. विशाल, शानदार, हवादार इमारतें एवं खेल के मैदान की व्यवस्था।।
3. जनरेटर, वाटर कूलर, साफ पानी के लिये आर.ओ. की उत्तम व्यवस्था।
4. नर्सरी से 10+2 (आर्ट्स एवं कामर्स) तक पढ़ाई का समुचित प्रबन्ध।
5. अनुभवी एवं उच्च शिक्षा प्राप्त सुयोग्य अध्यापकगण।
6. कम्प्यूटर शिक्षा, शारीरिक शिक्षा, योग एवं खेलों पर जोर।
7. औपचारिक शिक्षा के साथ साथ धार्मिक शिक्षा का प्रबन्ध।
8. लड़कियों एवं गरीब वर्ग के विद्यार्थियों को विशेष सुविधाएं।
9. पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड की परीक्षाओं एवं घरेलू परीक्षाओं में शानदार परिणाम

अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये उन्हें आर्य गर्ल्ज सी.सै.स्कूल मोगा में दाखिल करवाएं।

बोधराज मजीठिया	**नरेन्द्र सूद**	**अनीता सिंगला**
प्रधान	मैनेजर	प्रिंसीपल

आर्य समाज फाजिल्का के वार्षिक उत्सव पर पधारने पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामंत्री श्री प्रेम कुमार जी को सम्मानित करते हुये आर्य समाज फाजिल्का के संरक्षक डा. सुशील वर्मा जी। उनके साथ खड़े हैं आर्य समाज फाजिल्का के प्रधान डा. नवदीप जसूजा जी, उनकी धर्मपत्नी डा. सिम्मी जसूजा जी, श्रीमती सुदेश नागपाल जी।

आर्य समाज फाजिल्का के वार्षिक उत्सव पर पधारे आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामंत्री श्री प्रेम कुमार जी, श्री एस. एल. सारवण रिटायर्ड आई. ए. एस., श्री सत्य प्रकाश जी उप्पल मोगा एवं अन्य।

RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल—011/2021-23

आर्य समाज फाजिल्का के उत्सव में पधारे श्री प्रो. सत्यदेव जी निगमालंकार गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार, डा. आर.पी. असीजा, श्री किशोर चंद पुछी, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामंत्री श्री प्रेम कुमार जी, श्री एम. एल. सारवण रिटायर्ड आईएएस, श्री सत्य प्रकाश जी उप्पल मोगा एवं अन्य।

आर्य समाज फाजिल्का के वार्षिक उत्सव पर विशेष रूप से पधारे डा. राजन छावडा प्रिंसीपल डी. सी. डी.ए. वी. स्कूल फाजिल्का, मोगा से श्री नरेन्द्र सूद एवं आर्य समाज फाजिल्का के संरक्षक डा. सुशील वर्मा जी।

स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की तरफ से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक प्रेम भारद्वाज द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर पंजाब से मुद्रित एवं गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से प्रकाशित। सम्पादक–प्रेम भारद्वाज
पीआरबी एक्ट के तहत प्रकाशित सामग्री के चयन हेतु उत्तरदायी किसी विवाद का न्यायिक क्षेत्र जालन्धर होगा। आर एन आई संख्या 26281/74 **E-mail: apspunjab2010@gmail.com, www.aryapratinidhisabha.org**